खण्ड-06 सत्र -05 (भाग-02) / अंक-49 बुधवार 09 मई, 2017 / 19 वैशाख, 1939 (शक)

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्यमेव जयते

छठी विधान सभा

पांचवां सत्र

अधिकृत विवरण

(सत्र-05 (भाग-02) में अंक 49 सम्मिलित है)

दिल्ली विधान सभा सचिवालय

पुराना सचिवालय, दिल्ली-110054

सम्पादक वर्ग

EDITORIAL BOARD

प्रसन्ना कुमार सूर्यदेवरा

सचिव

PRASANNA KUMAR SURYADEVARA

Secretary

एम.एस. रावत

उप-सचिव (सम्पादन)

M.S. RAWAT

Deputy Secretary (Editing)

विषय सूची

सत्र - 5 भाग (2) मंगलवार, 9 मई, 2017 / 19 बैशाख, 1939 (शक) अंक - 49

क्रसं.	विषय	पृष्ठ सं.
1	सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची	1-2
2	निधन सम्बन्धी उल्लेख	3-5
3	अध्यक्ष द्वारा व्यवस्था	5-26
4	अल्पकालिक चर्चा (नियम 55)	26-137

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र - 5 भाग (2) मंगलवार, 9 मई, 2017 / 19 बैशाख, 1939 (शक) अंक - 49

दिल्ली विधान सभा

सदन अपराह्न 2:00 बजे समवेत हुआ।

सदन में उपस्थित सदस्यों की सूची:

1 श्री शरद कुमार
2 श्री संजीव झा
3 श्री पंकज पुष्कर
4 श्री पवन कुमार शर्मा
5 श्री अजेश यादव
6 श्री महेंद्र गोयल
7 श्री वेद प्रकाश
8 श्री सुखवीर सिंह दलाल
9 श्री ऋतुराज गोविंद
10 श्री रघुविन्द्र शौकीन
11 श्रीमती बंदना कुमारी
12 श्री जितेंद्र सिंह तोमर
13 श्री राजेश गुप्ता
14 श्री अखिलेश पति त्रिपाठी
15 श्री सोमदत्त
16 सुश्री अलका लाम्बा
17 श्री आसिम अहमद खान
18 श्री विशेष रवि
19 श्री हजारी लाल चौहान
20 श्री गिरीश सोनी

21 श्री जरनैल सिंह

22 श्री राजेश ऋषि

23 श्री महेंद्र यादव

24 कर्नल देवेंद्र सहरावत

25 श्री सुरेंद्र सिंह

26 श्री विजेंद्र गर्ग

27 श्री प्रवीण कुमार

28 श्री सोमनाथ भारती

29 श्रीमती प्रमिला टोकस

30 श्री नरेश यादव

31 श्री करतार सिंह तंवर

32 श्री अजय दत्त

33 श्री दिनेश मोहनिया

34 सरदार अवतार सिंह कालका

35 श्री सही राम

36 श्री नारायण दत्त शर्मा

37 श्री अमानतुल्लाह खान

38 श्री राजू धिगान

39 श्री मनोज कुमार

40 श्री नितिन त्यागी

41 श्री एस. के. बग्गा

42 श्री अनिल कुमार बाजपेयी

43 श्री राजेंद्र पाल गौतम

44 श्रीमीत सरिता सिंह

45 मो. इशराक

46 श्री श्रीदत्त शर्मा

47 चौ. फतेह सिंह

48 श्री जगदीश प्रधान

दिल्ली विधान सभा

की

कार्यवाही

सत्र - 5 भाग (2) मंगलवार, 9 मई, 2017 / 19 बैशाख, 1939 (शक) अंक - 49

सदन अपराह्न 2.00 बजे समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय **(श्री रामनिवास गोयल)** *पीठासीन हुए।*

(राष्ट्रीय गीत-वन्दे मातरम्)

निधन संबंधी उल्लेख

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यगण, दिल्ली विधानसभा के पांचवें सत्र के दूसरे भाग में मैं आप सब का हार्दिक स्वागत करता हूं। जैसा कि आप सब को विदित है कि दिनांक 01 मई 2017 को पाकिस्तान की सेना ने जम्मू-कश्मीर के पुंछ इलाके में दो भारतीय सैनिकों की निर्ममतापूर्वक हत्या कर दी। यह पूरी तरह कायरतापूर्ण, अमानवीय और पाशविक करतूत है। सारी मर्यादाओं को तोड़कर किये गये इस जघन्य अपराध की जितनी निंदा की जाये, उतनी कम है। इन सैनिकों का बलिदान व्यर्थ नहीं जाना चाहिए। भारतीय सेना को इस कायरतापूर्ण हमले का मुंह तोड़ जवाब देना चाहिए ताकि इस तरह का दुस्साहस दोबारा न हो सके।

मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से शहीद सैनिकों, नायब सूबेदार परमजीत सिंह तथा हैड कांस्टेबल प्रेम सागर को श्रद्धाजंलि अर्पित करता हूं तथा प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उनके परिजनों को इस अपार दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

माननीय सदस्यगण, जैसा आप सबको ज्ञात है कि दिनांक 24 अप्रैल 2017 को छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले में सी. आर. पी. एफ के 25 जवानों की नक्सलवादियों ने निर्मम हत्या कर दी तथा इस हमले में सात जवान घायल हो गये। ये सैनिक वहां सड़क निर्माण के लिए सुरक्षा में तैनात थे। इन सैनिकों पर कायरतापूर्ण ढंग से यह हमला किया गया। वास्तव में यह घटना मानवता पर हमला है तथा देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए भी बहुत बड़ी चुनौती है। नक्सलवादी इस तरह की घटनाओं से देश में अस्थिरता कायम करना चाहते हैं लेकिन उनके मंसूबे कामयाब नहीं होंगे। भारतीय सुरक्षा बल विकट परिस्थितियों में भी सदैव देश की आंतरिक और बाहरी सुरक्षा के लिए तत्पर रहते हैं और देश की सुरक्षा के अतिरिक्त देश के विकास के लिए भी अपनी जान की बाजी लगा देते हैं।

मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से इन शहीद हुए सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं तथा घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता हूं और प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर उनके परिजनों को इस अपार दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

अब मैं सदन के सदस्यों से प्रार्थना करता हूं दिवंगत आत्माओं के सम्मान में दो मिनट का मौन धारण करें।

(सदन द्वारा दो मिनट का मौन धारण)

अध्यक्ष महोदय : ओम शांति शांति शांति।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : एक सैकिण्ड।

माननीय सदस्यगण, यह अत्यधिक हर्ष का विषय है कि राजौरी गार्डन विधान सभा क्षेत्र से नव निर्वाचित सदस्य श्री मनजिंदर सिंह सिरसा आज पहली बार सदन में उपस्थित हुए हैं हालांकि मेरे चेम्बर में आकर वो शपथ ले चुके थे, पहले माननीय सदस्य ने दिनांक 25 अप्रैल 2017 को पद और गोपनीयता की शपथ ग्रहण की थी। मैं अपनी ओर से तथा पूरे सदन की ओर से उनका हार्दिक स्वागत करता हूं तथा यह कामना करता हूं कि ये जन प्रतिनिधि के रूप में अपने कर्तव्यों का बहुत अच्छी तरह पालन करेंगे। धन्यवाद।

अध्यक्ष द्वारा व्यवस्था

दिल्ली विधान सभा के पांचवें सत्र के दूसरे भाग में आप सबका हार्दिक स्वागत मैं पहले कर ही चुका हूं। मैं आशा करता हूं कि आप शालीनतापूर्वक सदन की कार्यवाही में भाग लेंगे। यह बैठक भारतीय लोकतंत्र के भविष्य से जुड़े एक महत्वपूर्ण मुद्दे पर विचार करने के लिए आयोजित की गई है। अत: आप सबसे मेरा पहले ही यह अनुरोध है कि कार्य सूची में सूचीबद्ध विषयों के अतिरिक्त किसी अन्य विषय पर चर्चा न करें तथा मेरी अनुमति के बिना बोलना प्रारम्भ न करें। सदन की मर्यादा बनाये रखना हमारी पहली प्राथमिकता है। इसलिए सदन में शोर-शराबा न करें तथा नियमों के दायरे में अपनी बात रखें। यदि कोई सदस्य नियमों का उल्लंघन करके सदन की कार्यवाही में बाधा पहुंचायेगा तो मुझे विवश होकर उन्हें सदन से बाहर करना पड़ेगा। अत: सदन की गरिमा को ध्यान मे रखते हुए, मैं आप सबको पहले ही चेतावनी दे रहा हूं, प्रार्थना कर रहा हूं कि नियमों का पालन करेंगे। मुझे आशा है कि आप सदन की कार्यवाही के सुचारू रूप से संचालन में मुझे पूरा सहयोग देंगे।

मुझे कई माननीय सदस्यों से नियम-54 के अंतर्गत ध्यानाकर्षण तथा नियम-55

के अंतर्गत अल्पकालिक चर्चा तथा नियम-59 के अंतर्गत कार्य स्थगन की सूचनाएं प्राप्त हुई हैं। सदन की यह बैठक भारतीय लोकतंत्र के भविष्य से जुड़े एक महत्वपूर्ण मुद्दे पर विचार करने के लिए बुलाई गई है। अतः आज कार्य सूची में दर्शाये गये विषयों के अतिरिक्त किसी भी विषय पर विचार नहीं किया जायेगा। इसलिए उक्त सभी सूचनाओं को मैं स्वीकार नहीं कर पा रहा हूं। मैं पुनः यह बात दोहराना चाहता हूं कि यदि आप सदन की कार्यवाही में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न करेंगे तो मुझे विवश होना पड़ेगा और नियमानुसार कार्रवाई करनी पड़ेगी।

सदन की परंपरा रही है कि माननीय सदस्यों का जिनका जन्मदिन था, बधाई दी जाती है। आज तो नहीं लेकिन कल तीन माननीय सदस्यों का जन्मदिन है। श्री गोपालराय जी का मैं उनका बहुत बहुत बधाई दे रहा हूं। सोमनाथ भारती जी का उनको बहुत बहुत बधाई दे रहा हूं और श्री हजारी लाल जी का कल जन्मदिन है। शायद उनको याद नहीं है, चौकें हैं एकदम, उनको बहुत बहुत बधाई दे रहा हूं। धन्यवाद। अल्कालिक चर्चा।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, हमने एक बहुत महत्वपूर्ण मुद्दे पर काम रोको प्रस्ताव...

अध्यक्ष महोदय : मेरे पास आया है काम रोको प्रस्ताव।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, ये एक माननीय मंत्री...

अध्यक्ष महोदय : मैंने उसको अस्वीकार किया।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, ये माननीय मंत्री दिल्ली सरकार का मैं दस्तावेज लेकर आया हूं।

अध्यक्ष महोदय : हां, कोई बात नहीं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : मैं दस्तावेज लेकर आया हूं।

अध्यक्ष महोदय : हां, कोई बात नहीं। कोई दिक्कत नहीं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : तो वो भ्रष्टाचार एक हजार करोड़ का भ्रष्टाचार, एक हजार करोड़ की जमीनें...

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मैंने उसको अलाउ नहीं किया।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : तो वो भ्रष्टाचार, एक हजार करोड़ का भ्रष्टाचार, एक हजार करोड़ की जमीनें।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मैंने उसको एलाऊ नहीं किया।

...(व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता : दो सौ बीघा जमीनें...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैंने उसको एलाऊ नहीं किया।

...(व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता : पेपर है इसके...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कोई बात नहीं, वो सीबीआई, एसीबी के पास जा रहा है।

...(व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता : आपने उसका एवॉइड किया है और फिर...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मैं इसको मैं इसको एलाऊ नहीं कर रहा हूं, प्लीज।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मैंने नियम के अनुसार....

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी मैंने नियमानुसार आपको चेतावनी दी है, मैंने नियमानुसार आपको चेतावनी दी है प्लीज।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सिरसा जी।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : देखिए सिरसा जी मेरा ये कहना है सदस्यों को जब मीडिया के माध्यम से सारी जानकारी मिल रही है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : इसमें नहीं, अगर ऐसा कुछ था।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सिरसा जी, मीडिया के माध्यम से सब जानकारियां चली गई।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सिरसा जी, मैं इसको डिसएलाऊ कर चुका हूं पहले ही, नियम की कोई चीज मुझे इसमें सम्मिलित नहीं दिखाई देती।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं बिल्कुल मान रहा हूं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, आपके इस नोटिस को मैं स्वीकार कर चुका हूं। प्लीज मैं रिकवेस्ट कर रहा हूं, बैठ जाइए। देखिए मैं कहना चाह रहा हूं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अब आप दो मिनट बैठिए

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, दो मिनट बैठिए, बैठ जाइए दो मिनट, सिरसा जी बैठिए प्लीज, जगदीश जी बैठिएगा, बैठिए प्लीज। विजेन्द्र जी बैठिए, प्लीज बैठिए, प्लीज मैं रिकवेस्ट कर रहा हूं। देखिए मेरे सामने जो विषय आज आया है, ये विषय भारत के लोकतंत्र के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने भी निर्णय दिया हुआ है 2011 में।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, मेरे सामने जो विषय आया...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मेरे सामने जो विषय आया है, मैं उसकी बात कर रहा हूं। वो विषय बहुत चर्चा का विषय है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, विजेन्द्र जी, देखिए मैं रिकवेस्ट कर रहा हूं वो हम सबसे जुड़ा विषय है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : भारत के प्रत्येक व्यक्ति से जुड़ा, प्रत्येक नागरिक से, प्रत्येक वोटर से जुड़ा हुआ विषय है। वो लोकतंत्र का विषय है जो मेरे सामने आया है, आप बैठिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मैं चेतावनी दे रहा हूं बैठिए। प्लीज मैं चेतावनी दे रहा हूं बैठिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं दो बार चेतावनी दे चुका हूं, रिक्वेस्ट कर चुका हूं बैठिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सिरसा जी, मैंने भी विनती की है

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैंने डिसएलाऊ किया है और मैंने आपको आग्रह किया है कि मेरे सामने जो विषय आया है,

...(व्यवधान)

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : आप दो मिनट दे दें...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं मैंने दोनों में डिसएलाऊ किया है।

...(व्यवधान)

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : हम आपसे रिकवेस्ट कर रहे हैं...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : देखिए सिरसा जी,

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, बिल्कुल नहीं, मैं डिसएलाऊ कर चुका हूं। आज जो विषय है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : देखिए नियमानुसार मैंने डिसएलाऊ...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं इसमें बिलकुल किसी तरह से सहमत नहीं हूं। मैं किसी तरह से सहमत नहीं हूं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कोई बात नहीं, आप बैठिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिए सिरसा जी। मैं विजेन्द्र जी...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मैं डिसएलाऊ कर चुका हूं और मैं चेतावनी दे रहा हूं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं बिल्कुल भी सिरसा जी, एलाऊ नहीं कर रहा हूं। मुझे मजबूरन स्टैप लेना पड़ेगा।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : देखिए विजेन्द्र जी, मैं डिसएलाऊ कर चुका हूं। सिरसा जी बैठिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : देखिए प्लीज बैठिए। मैं आपको डिसएलाऊ कर चुका हूं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं एलाऊ नहीं करूंगा।

...(व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, हम आपसे रिक्वेस्ट कर रहे हैं ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सुश्री अलका लाम्बा जी।

...(व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, गंभीर मामला है...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, गंभीर से गंभीर मामला मैं ले रहा हूं,

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : ये बहुत गंभीर मामला है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : पूरा लोकतंत्र देश का खतरे में है।

...(व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता : ये दस्तावेज मैं सौंपता हूं...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिए इस समय। आप बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप ये दस्तावेज ले लीजिए।

...(व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता : ये मैं पेपर दे रहा हूं आपको, आप पढ़िए, अध्यक्ष जी, ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : हां, आप बैठ जाइए। वो मैं निर्णय लूंगा, क्या करा है, क्या नहीं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, आपने दे दिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, मेरी बात सुनिए। एक सैकेंड रूक जाइए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप दो मिनट रूकिये, राखी जी दो मिनट रूकिये, प्लीज।

...(व्यवधान)

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : टाइम वेस्ट नहीं, अध्यक्ष महोदय...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : देखिए मेरा ये कहना है सिरसा जी, सदन नियम के अनुसार चलेगा। देखिए एक सकेंड बात सुनिए विजेन्द्र जी।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आपने पेपर...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, आप सुनेगे या नहीं सुनना चाहेंगे?

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप सुना पसंद करेंगे, नहीं करेंगे? आप सुनना पसंद करेंगे या नहीं करेंगे? ना तो आपने पेपर सीएम को देने की इजाजत ली, आप अपने आप कह रहे हैं या सेक्रेटरी साहब को बोलकर कह रहे हैं पेपर दीजिए। सदन इसी तरह चलेंगें क्या? लोकसभा को कभी चलते हुए देखा है आपने?

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप नेता विपक्ष है, नहीं, आप नेता विपक्ष है

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आपको सदन को चलाने का सलीका होना चाहिए। आप सीधा सेक्रेटरी से कह रहे हैं पपर सीएम को दे दें। अध्यक्ष की कोई मान्यता नहीं है, अध्यक्ष की चेयर की कोई मान्यता नहीं है क्या!

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मेरी आपसे प्रार्थना है कभी लोकसभा को चलते हुए देख लीजिए फिर उसके बाद में बैठिए यहां पर, फिर उसके बाद में बैठने का प्रयास करिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, आप सीधा सेक्रेटरी साहब को कह रहे हैं, ये पेपर सीएम को दे दीजिए। अध्यक्ष की कोई जरूरत ही नहीं, इस कुर्सी की?

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आपके संज्ञान में,

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं बुरी नहीं, आप जब भी बात करते हैं, असंवैधानिक करते हैं। आपको संविधान की मर्यादाओं की मर्यादाओं का ध्यान ही नहीं रहता। आप सीधा सेक्रेटरी से बोल रहे हैं फिर कह रहे हैं, वो पेपर उनको दे दीजिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, अब छोड़ दीजिए। अब ये कोई पेपर नहीं दिए जाएंगे।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं कोई इजाजत नहीं दे रहा हूं। I am not giving permission, नहीं, Please I am not giving permission, this is not fair.

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सदन को आपने सड़क का मदारी बना दिया है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, बैठ जाइए आप, मैं नहीं दे रहा हूं। I will not allow at any cost now.

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, आपने पहले जो किया है, उसको सुधारिये। आप सुधारते नहीं एक बार भी अपने आपको। आप कभी सुधरते नहीं।

...(व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता : पेपर तो दिलवाइये। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, मैं नहीं दिलवा रहा हूं। छोड़ दीजिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप मुझे दे दीजिए, मैं दे दूंगा।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मुझे दे दीजिए मैं एक्सेपट कर रहा हूं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मुझे दे दीजिए, मैं दे दूंगा।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, अब बैठिए प्लीज, सिरसा जी, में हम्बल रिकवेस्ट कर रहा हूं। मैं हम्बल रिकवेस्ट कर रहा हूं, आज पहला दिन है आपका बैठिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मुझे मजबूर मत करिये प्लीज।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : This is the first day of you, I am requesting you again and again. आपका पहला दिन है। मुझे मजबूर मत करिये प्लीज।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : प्लीज मैं रिकवेस्ट कर रहा हूं आप बैठिए, बैठ जाइए। विजेन्द्र जी।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सुश्री अलका लाम्बा जी।

...(व्यवधान)

सुश्री अलका लाम्बा : अध्यक्ष जी, मैं आपका धन्यवाद करती हूं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अभी बैठिए प्लीज।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं बिल्कुल नहीं चाहूंगा कि डिस्टर्ब करें, प्लीज।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं किसी मामले को नहीं दबा रहा।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : जो मामला आलरेड्डी मीडिया में चल रहा है। दबा कहां है वो मामला?

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सिरसा जी, बैठिए प्लीज।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं विजेन्द्र जी, आखिरी चेतावनी दे रहा हूं, लास्ट वार्निंग, मैं लास्ट वर्निंग दे रहा हूं आपको। मेरी लास्ट वार्निंग है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मेरी लास्ट वार्निंग है ये।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : प्लीज विजेन्द्र जी मेरी लास्ट वार्निंग है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मेरी लास्ट वार्निंग है आप बैठें। मैं डिसएलाऊ कर चुका हूं और मैं किसी कीमत पर कोई एलाऊ नहीं करूंगा। आप बैठिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बैठें, कोई मामला नहीं है।

...(व्यवधान)

श्री विजेन्द्र गुप्ता : आप भ्रष्टाचार पर चर्चा नहीं...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, आप बैठें। आज सदन इसके लिए नही बुलाया हमने।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : जिस बात के लिए सदन का विशेष सत्र बुलाया गया है....

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिए प्लीज।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं विजेन्द्र जी को आज के पूरे दिन...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : ठीक है बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : या तो बैठ जाइए आप साइलेंट होकर। मैं किसी कीमत पर एलाऊ नहीं करूंगा।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सदन के पन्द्रह मिनट खराब हो चुके हैं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सिरसा जी, प्लीज। देखिए आज आपका पहला दिन है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी इस बात के आदी हैं, आप उस चीज में न पड़ें। मैं बड़ी हम्बल रिकवेस्ट कर रहा हूं आज।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : This is your first day. मैं हाथ जोड़ रहा हूं बैठिए, प्लीज बैठिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सिरसा जी, बैठिए प्लीज।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, मैं कोई एलाऊ नहीं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सिरसा जी, एक सैकेंड।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सिरसा जी,

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, वो क्या करना है, मैं देखूंगा।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सिरसा जी, आप बैठेंगे दो मिनट

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सिरसा जी, दो मिनट।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : एक सैकेंड के लिए बैठ जाएं प्लीज।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : फिर वो खड़े हो गए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : फिर आप खड़े हो गए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी एक सैकेंड के लिए बैठ जाइए आप। एक सैकेंड के लिए बैठ जाइए प्लीज।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, आप बैठ जाइए प्लीज।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : बैठ जाइए, मुझे मजबूर मत करिये आज

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं किसी कीमत पर एलाऊ नहीं करूंगा, आप बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : देखिए, सरिसा जी, ये तरीका ठीक नहीं है। This is not the way.

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मुझे लगता है आप दोनों तय करके आए हैं कि एक बार यह खड़ा होगा, एक बार मैं खड़ा हूंगा। एक बार आप खड़े होंगे।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मुझे लग रहा है आप दोनों तय करके आए हैं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, आप बैठिए, प्लीज बैठिए। आप दोनों तय करके आए हैं, मुझे ऐसा लग रहा है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप सिरसा जी, बैठ जाइए प्लीज, दो मिनट बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, कोई चर्चा नहीं, सिरसा जी आप बैठिए, प्लीज आप बैठिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : विजेन्द्र जी, देखिए मैं चेतावनी दे रहा हूं। हाउस जिस चीज के लिए सरकार ने बुलाया है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सिरसा जी, सरकार ने हाउस जिस चीज के लिए बुलाया है, मैं उस पर चर्चा करवा रहा हूं बस।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिए प्लीज, हां बैठ जाइए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइए, नहीं, मैं चर्चा नहीं करवा रहा हूं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं विजेन्द्र जी से... मैं विजेन्द्र जी को अंतिम चेतावनी दे रहा हूं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : मैं आपको अंतिम चेतावनी दे रहा हूं, अंतिम चेतावनी दे रहा हूं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सिरसा जी, आप बैठिए प्लीज।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सिरसा जी, मैं रिकवेस्ट कर चुका हूं, बैठिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सिरसा जी, आप बैठिए, मैं रिकवेस्ट कर चुका हूं। जगदीश जी।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अलका लाम्बा जी। मैं विजेन्द्र जी को आज की सदन की कार्यवाही के लिए बाहर करता हूं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अलका लाम्बा जी। मैं विजेन्द्र जी को आज सदन की कार्यवाही के लिए बाहर करता हूं। मैं विजेन्द्र जी को आज पूरे दिन की सदन कार्यवाही के लिए बाहर करता हूं। मैं आपसे 10 बार रिक्वैस्ट कर चुका हूं। आप हर रोज सदन की मर्यादाओं का मजाक उड़ाते हैं। मैं विजेन्द्र जी से प्रार्थना करता हूं कि आज के लिए सदन की कार्यवाही से बाहर चले जाएं। आप बाहर चल जाएं। सदन की कार्यवाही से बाहर चले जाएं। मैं आपको प्रार्थना कर रहा हूं। भई आप कोई कमैंटस न करें, प्लीज। त्यागी जी, नोट कमेंटस प्लीज। मैं निर्णय ले चुका हूं।

श्री विजेन्द्र गुप्ता : अध्यक्ष जी, आपका ये लोकतांत्रिक तरीका नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : लोकतंत्र का तरीका आपसे मुझे समझना पड़ेगा। आप बाहर जा रहे हैं या नहीं जा रहे हैं? विजेन्द्र जी, मैं 20 मिनट समय खराब नहीं करता ऐसे। मैं चाह रहा हूं आप बराबर सदन में बैठें। सदन की कार्यवाही को नियम के अनुसार चलने दें। मार्शल प्लीज, विजेन्द्र जी को, आउट करे।

सुश्री अलका लाम्बा : गुप्ता जी, अच्छी तस्वीर आएंगी उठाने दीजिए, कंधे पर उठाकर ले जाएंगे।

(श्री विजेन्द्र गुप्ता को मार्सल्स द्वारा बलपूर्वक सदन से बाहर निकाला गया।)

अल्पकालिक चर्चा (नियम-55)

अध्यक्ष महोदय : मैं सत्ता पक्ष के माननीय सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूं किसी तरह का कोई कमेंटस ना करें, प्लीज। त्यागी जी, आज भारत के लोकतंत्र के रक्षा का दिवस है। नहीं सिरसा जी, मैंने बहुत रिक्वैस्ट किया, मैंने बार-बार रिक्वैस्ट की प्लीज। प्लीज बैठिए। देखिये सिरसा जी, दो मिनट बैठिए। वो नेता विपक्ष हैं, आप ये गलती करते तो शायद मैं विचार भी करता। नेता विपक्ष ये कहें सैकेटरी साहब से कि आइए, ये पेपर सीएम को दें, ये हाउस चलाने का तरीका नहीं है। ये हमेशा होता है। हमेशा उनका यही तरीका होता है। प्लीज बैठिए, वो अध्यक्ष पद की गरिमा को समझे नहीं, नेता विपक्ष के पद की गरिमा को वो समझते नहीं। आपसे मेरी रिक्वैस्ट है बैठिए, प्लीज। जगदीश जी, बैठिए। सुश्री अलका लाम्बा जी।

सुश्री अल्का लाम्बा : धन्यवाद, अध्यक्ष जी, आज अल्पकालिक चर्चा में आपने मुझे ईवीएम के साथ कथित छेड़छाड़ तथा लोकतंत्र के लिए खतरा विषय पर चर्चा आरम्भ करने का अवसर दिया, उसके लिए धन्यवाद।

अध्यक्ष जी, आज पूरे देश की नजर जो है इस विधान सभा के आज के सत्र पर है। ये चर्चा कब उठती है, ऐसा नहीं है कि ईवीएम पर पहली बार प्रश्न उठा है, पहले भी बहुत बार 2009 में भी और उससे पहले भी अब महाराष्ट्रा आपका है, आपका उड़ीसा राज्य है, बहुत से राज्यों में इस तरह की आवाजें उठती रही है। और 2009 में तो, मैं कहूंगी खुद बीजेपी ने इसे मुद्दा बनाया था लेकिन आज उस ये मुद्दा नहीं लग रहा है। अध्यक्ष जी, ये चर्चा अब दुबारा शुरू हुई जब उत्तर प्रदेश में विधान सभा के चुनावों के परिणाम आये तो जब लोगों ने ये कहना शुरू किया कि हमने तो किसी ने भी जो जीतकर आया है, उसे वोट ही नहीं दिया, हमें लगता है कि हमारा वोट जिसे दिया, उसे गया ही नहीं। इसके ऊपर जब प्रश्न और आवाजें उठनी शुरू हो गई, तो ये वापस मुद्दा उठ खड़ा हुआ। ये वही उत्तर प्रदेश है अध्यक्ष जी, जहां पर एक सेना के जवान के पिता को सिर्फ शक के आधार पर कि उसके फ्रिज में क्या खाना पड़ा हुआ है, सिर्फ शक के आधार पर, उसके फ्रिज के खाने की जांच ही नहीं होती, शक के आधार पर उसे मौत के घाट भी उतार दिया जाता है। आज आपसे यही प्रश्न करने आई हूं। जब इस देश में किसी के फ्रिज में रखे खाने के शक पर किसी को मौत के घाट उतार दिया जाता है, उसकी फोरेंसिक जांच के लिए उस खाने को भेजा जा सकता है तो लोकतंत्र के अंदर अगर ईवीएम के बार में, ईवीएम पर शक और ईवीएम में अपने वोट के बारे में अगर देश के लोकतंत्र में जनता पूछती है, तो उसको जानने का हक नहीं है। सबसे बड़ा प्रश्न आज ये उठ रहा है इस देश के अंदर।

अध्यक्ष महोदय, दिल्ली नगर निगम के चुनाव थे, हम सभी लोग मुख्यमंत्री के साथ दिल्ली चुनाव आयोग में उनसे मिलने गये और राष्ट्रीय चुनाव आयोग भी गए। राष्ट्रीय चुनाव आयोग का जवाब हमें आया, 'EVMs tempered proof,

Machines used for local body polls not our responsibility.' यानी की राष्ट्रीय चुनाव आयोग ने कहा कि नगर निगमों में जहां पर भी चुनाव हो रहा है, टैम्परिंग हो रही है, वोट कहां जा रहा है, उसकी जवाबदेही राष्ट्रीय चुनाव आयोग की नहीं है। उसके बाद हम विधायक लोग एक बार नहीं, लगातार तीन बार नगर निगम के चुनाव के दौरान दिल्ली चुनाव आयोग के पास गये, हमने उनके सामने कुछ प्रश्न रखे। अध्यक्ष जी, चुनाव हो गया, परिणाम सबके सामने है लेकिन जवाब नहीं मिले लोकतंत्र में। चुनाव आयोग नेग सबसे पहले ये कही कि भारत की ये राजधानी है, दिल्ली है, कहीं चुनाव नहीं हो रहे, सिर्फ दिल्ली के अंदर चुनाव हो रहा है, वो भी नगर निगम का चुनाव है, ईवीएम मशीन पूरे देश में जो इस्तेमाल होती है, वो रखी हुई है जिसमें वीवीपैट है, जिसमें पेपर ट्रेल है, जिसमें ये पता किया जाना आसान है। वो जनरेशन–थ्री की मशीनें हैं कि आपने जिसको वोट दिया, क्या वो उसी को वोट गया है या नहीं गया। हम लोग चुनाव आयोग के दफ्तर जाते हैं, पता लगता है कि जनरेशन-वन की मशीन, जनरेश-टू और जनरेशन-थ्री की आज की लेटेस्ट मशीनें उपलब्ध हैं देश में और चुनाव आयोग के पास पर दिल्ली नगर निगम का चुनाव आज की जनरेशन-तीन की लेटेस्ट मशीनों पर नहीं किया जाता, वो तो तालों में कहीं बंद पड़ी हुई है। जनरेशन-तीन की लेटेस्ट मशीनों पर नहीं किया जाता, वो तो तालों में कहीं बंद पड़ी हुई है। जनरेशन-वन की मशीनों पर पुरानी, कंडम मशीनों पर कि ऊपर जिसमें बहुत ईजली टैम्परिंग जनरेशन-थ्री की मशीनें ताले में बंद हैं और आप जनरेशन-वन की मशीन पर जो है, चुनाव करा रहे हैं। आज तक अध्यक्ष जी, जवाब नहीं मिला, उम्मीद करती हूं कि ये जवाब, ये प्रश्न जो है, इस सदन के माध्यम से पूछा जा रहा है इसलिए अब उम्मीद करते हैं कि ये जवाब, ये प्रश्न जो है, इस सदन के माध्यम से पूछा जा

रहा है इसलिए अब उम्मीद करते हैं कि चुनाव आयोग को इसका जवाब देना ही होगा। दूसरा जवाब, चुनाव आयोग ने 5 हजार के करीब मशीनें राजस्थान से मंगवाई। हमने चुनाव आयोग से प्रश्न किया कि दिल्ली में कितने पोलिंग बूथ हैं, अध्यक्ष जी, उन्होंने जावब दिया कि दिल्ली में 13 हजार पोलिंग बूथ हैं, चुनाव आयोग से अगला प्रश्न था, आपके पास ईवीएम मशीनें कितनी उपलब्ध हैं, उन्होंने कहा 15 हजार के करीब हमारे पास ईवीएम मशीनें उपलब्ध हैं। अब हम लोगों को समझ नहीं आया, 13 हजार पोलिंग बूथ हैं, 15 हजार ईवीएम मशीनें उपलब्ध हैं, 2 हजार प्लस ज्यादा मशीनें हैं, फिर आपको राजस्थान से, उस राजस्थान से जहां पर धौलपुर में चुनाव होता हे, तो 18 मशीनें ऐसी पाई जाती हैं जांच के अंदर कि वोट एक पार्टी को दिया जा रहा है लेकिन जा किसी दूसरी पार्टी को रहा है और ऐसा एक बार नहीं, उसके बाद अनेकों बार हुआ है। अभी हमारे सही राम जी, जिस विधान सभा से आते हैं तुगलकाबाद, साउथ, 94 वार्ड में, तीन ईवीएम मशीनों की सील टूटी हुई मिली, सिर्फ इतना ही नहीं, जिस रूम में ये मशीनें रखी थीं, उसकी भी सील टूटी हुई मिली और उसक बाद रात को साढ़े 12 बजे का सीसीटीवी फूटेज, ईवीएम मशीनें जहां पर रखी थीं, उसका है। लेकिन रात को 12.30 बजे का जो खेल होता है, उससे पहले सीसीटीवी कैमराज को डैमेज करके रात को सील तोड़कर चार मशीनों के साथ छेड़खानी की जाती है, रिजल्ट आ गया कि जो ये साजिश रच रहे हैं उनके उम्मीदवार जीते हैं वहां पर लेकिन इसका जवाब नहीं मिल रहा हम लोगों को। इसी तरह अध्यक्ष जी, एक नहीं बहुत से हमारे पास उदाहरण है और मैं सबसे पहले तो धन्यवाद भी करना चाहती हूं, मिस्टर वी. वी राव जी का, मिस्टर पूनेवाला जी भी हमारे बीच में हैं। ये किसी राजनीतिक पार्टी से नहीं हैं, न ये चुनाव लड़े हैं न ये चुनाव जीते हैं, न ये हारे। इन लोगों

से भी लोकतंत्र में एक आवाज मिल रही है अध्यक्ष जी। मैं धन्यवाद करती हूं आप दोनों का मिस्टर वी. वी. राव जी का खासतौर से जो पेटिश्नर रहे सुप्रीम कोर्ट में, जिनकी लड़ाई का नतीजा ये निकला कि आज देश को एक ताकत मिली, आज सुप्रीम कोर्ट में, जिनकी लड़ाई का नतीजा ये निकला कि आज देश को एक ताकत मिली, आज सुप्रीम कोर्ट के इस आदेश और दबाव के बीच में देश की, केन्द्र की मोदी सरकार को 3256 करोड़ रूपये का फंड सैक्शन करना पड़ा कि आज के बाद या 2019 का जो चुनाव है, वो वीवीपैट मशीनों पर होगा, पेपेर ट्रेल पर होगा। अगर ये लोग लड़ाई नहीं लड़ते तो अध्यक्ष जी, क्या अंजाम होता, ये हम लोग जानना चाहते हैं। आज हम जब चुनाव के लिए जा रहे थे, हर कोई एक ही प्रश्न कर रहा था, हम वोट जिसको देंगे, उसको जाएगा या नहीं जाएगा इस प्रश्न का जवाब हमारी पास भी नहीं था क्योंकि हम उस चुनाव आयोग से बार-बार इसी प्रश्न का जवाब पूछ रहे थे कि दिल्ली की जनता पूछ रही है कि जिसे हम वोट देंगे, यह वोट उसी को जाएगा या लोकतंत्र में उसके वोट के अधिकार के साथ भी एक बड़ा छल और धोखा होने वाला है। अध्यक्ष जी, इसका कोई जवाब हमें अभी तक नही मिला, इसीलिए मैं धन्यवाद करती हूं दिल्ली की सरकार का जो जवाब आज दिल्ली की सड़कों पर, आज मीडिया के माध्यम से आज मिस्टर वी. वी. राव जैसे लोग जो लड़ रहे हैं, उसका जवाब ये सरकार, चुनाव आयोग देने में पूरी तरह नाकाम है। सरकार ने और हम विधायकों ने दिल्ली चुनाव आयोग का भी कहा आप कमरा खोलिए और एक मशीन हमें दे दीजिए। हम एक अपने साइंटिस्ट का लेकर जो अपना किस तरह से टैम्परिंग सम्भव है या नहीं है, इसके ऊपर जवाब देंगे, उन्होंने हमारी इस मांग को भी ठुकरा दिया।

अध्यक्ष जी, आपके मन में चोर नहीं है, इनसे पूछिए जब टैम्परिंग नहीं हो सकती है तो आपको एक ईवीएम मशीन देकर कोई यह साबित करना चाहता है, तो आप डर क्यों रहे हैं? क्योंकि आपको तो पता है कि नहीं हो सकती टैम्परिंग, तो आप क्यों डर हे हैं अपनी एक मशीन उस साईटिस्ट को देने से पहले? अध्यक्ष जी डरना तो उस साईटिस्ट को चाहिए जो ये ईवीएम मशीन मांग रहे हें। हमें देकर तो देखिए, हम बताना चाहते हैं कि हो सकता है या नहीं हो सकता, डर उनको होना चाहिए जो मांग रहे हैं। क्यों? क्योंकि अध्यक्ष जी 2010 में तीन साईंटिस्टों ने ये प्रयास किया था। चुनाव आयोग की मशीनों को दिखाया था, प्रदर्शन करके कि किस तरह से छेड़छाड़ सम्भव है, टैम्परिंग हो सकती है। अध्यक्ष जी, हुआ क्या उनके खिलाफ चुनाव आयोग ने एफआईआर दर्ज कराई, उके खिलाफ कार्रवाई हो गई और उनकी आवाज को जो उन्होंने करके दिखाई थी टैम्परिंग, वो मामला छुप गया और उनके ऊपर एफआईआर दर्ज कराई, उनके खिलाफ कार्रवाई हो गई और उनकी आवाज को जो उन्होंने करके दिखाई थी टैम्पगिं, वो मामला छुप गया और उनके ऊपर एफआईआर हुई। उन के ऊपर केस दर्ज किया। उन्हें जेल भेजने की तैयारी हुई। मैं सलाम करती हूं ऐसे साईटिस्टों को जो आज भी आगे आकर सरकार की इस बात को साबित करना चाहते हैं कि हां, टैम्परिंग पूरी तरह सम्भव है। अभी उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री अखिलेश यादव जी ने पैट्रोल पम्प के मामले में दिखाया कि किस तरीके से तरह से पैट्रोल की चोरी होती है। जब एक पैट्रोल पम्प पर बिना इन्टरनेट के एक बार चिप लगा दी गई, फिर रिमोट से कहीं पर भी बैठकर आप इसको कन्ट्रोल कर सकते हैं। उसका जवाब नहीं मिल रहा। छापेमारी हुई, अरेस्ट हुए। लेकिन ये साजिशें तो अध्यक्ष महोदय हो रही हैं। ये साजिशें तो हो रही हैं। लोकतंत्र में इन साजिशों का पर्दाफाश होना, जवाब

मिलना लोकतंत्र के लिए बेहद जरूरी है। हम लोगों पर आरोप लगाए गए। अरे! 2015 में तो आम आदी पार्टी और आपके विधायकों को ये मशीनें बहुत अच्छी लग रही थी! जब आप 70 में से 67 सीटें लेकर आए। आज आपको ये मशीनें, हरा रही हैं, तो आज आपको ये मशीनें अच्छी नहीं लग रही।

अध्यक्ष जी, सबको जवाब दे रहे हैं बाहर और अंदर भी देना चाहूंगी सदन से। 2015 में जब दिल्ली का चुनाव हुआ पूरा ये देश जानता था कि जब 28 सीटें आई, उस समय भी भाजपा 32 लेकर बहुमत तक नहीं पहुंच पाई, कांग्रेस 8 तक सीमित हो गई, सरकार नहीं बन पाई। दोबारा चुनाव हुआ सबको पता था दिल्ली बदलाव चाहती है। दिल्ली भ्रष्ट कांग्रेस, भ्रष्ट भाजपा से छुटकारा चाहती है। मजबूरी थी दिल्ली की, आज तक विकल्प नहीं था। जिस दिन आम आदमी पार्टी ओर अरविंद केजरीवाल जी के रूप में एक विकल्प मिला, पूरी दिल्ली ने एक तरफा वोट किया और 66-67 सीटें लेकर एक इतिहास रचा। ये सच्चाई है। अध्यक्ष जी।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : बस, दो मिनट बैठिए प्लीज। सिरसा जी, इनके पूरा करने दीजिए। बैठिए प्लीज बैठिए। उन्होंने कांग्रेस को भी कहा है।

....(व्यवधान)

सुश्री अलका लाम्बा : अध्यक्ष जी, जिस राजौरी गार्डन से ये जीत के आए हैं, उसकी जमानत जब्त हुई है। आम आदमी पार्टी का प्रत्याशी जीता है वहां का। अध्यक्ष जी, मैं दो चीजें साफ कर देना चाहती हूं कि हम से ये प्रश्न किया कि जब जीते तो अच्छी थी, अब हारे तो बुरी है। लेकिन दिल्ली

में अध्यक्ष जी, एक आवाज नहीं उठी 2015 में, जिसने ये कहा हो कि ये आम आदमी पार्टी की ऐतिहासिक जीत टैम्परिंग से हुई है। रामलीला मैदान में शपथ हो रही थी पूरी दिल्ली खड़ी थी, देश देख रहा था कि क्योंकि उन्हें मालूम था कि तब ये खेल नहीं हुए और एक तरफा वोट हुआ है। लेकिन ये खेल उत्तर प्रदेश में, इसलिए में कहती हूं कि आग में घी डालने का काम किया है, इसको आवाज देने का काम किया है। क्योंकि उत्तर प्रदेश के चुनाव जिसके बाद पूरे महाराष्ट्र में और बहुत से जगहों में, अध्यक्ष जी, मुम्बई हाई कोर्ट ने, मुम्बई हाई कोर्ट ने आदेश दिया है कि जो ईवीएम मशीनें हैं, उन्हें जब्त करके फोरेंसिक जांच के लिए भेजा जाना चाहिए। आपको लगता है कि मुम्बई हाई कोर्ट ने किसी के कहने पर इतना बड़ा फैसला दे दिया। अध्यक्ष जी, कुछ तो सबूत उनके पास आए होंगे जो मुम्बई हाई कोर्ट ने इतना बड़ा फैसला दे दिया।

अध्यक्ष महोदय : अलका जी, अब कन्क्लूड करिए।

सुश्री अलका लाम्बा : अध्यक्ष जी, बस थोड़े उदाहरण जो मेरी बात को साबित करते हैं; छतरपुर वार्ड-70 एस, ये हमारा है; टोटल वोट पड़े-26445, ईवीएम में गिने 26885, आप देखिए कितना जम्प है, वोट कितना पड़ रहा है और ईवीएम कितना गिन रही है और हमारा वहां कितने से हारता है? सिर्फ दो वोट से हारता है। लेकिन ये 400 से ऊपर कहां से आ गए? जो पड़ा ही नहीं, जो ईवीएम गिनती दिखा रही है। अध्यक्ष जी, इस पर तो बात होनी ही चाहिए। मैं आपसे पूछना चाहता हूं, मुंबई हाई कोर्ट के बाद उत्तराखंड हाई कोर्ट ने, अध्यक्ष जी 2446 मशीन को सील करने के आदेश दिये। क्यों आदेश दिये? क्योंकि लोग सबूत लेकर उत्तराखंड हाईकोर्ट के पास पहुंचे। हाईकोर्ट को

उनके सबूतों में कोई दम दिखा, इसलिए उत्तराखंड हाईकोर्ट ने भी आदेश दिया कि 2446 मशीनें सात असम्बलीज की मशीनों को जब्त कर लिया गया, सील कर दिया गया है। अध्यक्ष जी, मैं आपसे यही कहना चाहती हूं कि ऐसे बहुत से उदाहरण हैं। आज दिल्ली सरकार को मैं सलाम करती हूं। बहुत विरोध हो रहा है, बहुत मीडिया ने कहा कि ये अपनी हार की बोखलाहट है! ईवीएम के ऊपर अपनी हार डाल रहे हैं। मंथन करिए, बात करिए, चुनाव में हार के कारण साचिए! कभी आप पानी कारण बताते हैं, कभी ईवीएम कारण बताते हैं। अध्यक्ष जी, जीत और हार का कभी एक कारण नहीं होता। न एक व्यक्ति जिम्मेदार होता है। जब जीत होती है तो हार होती है तो एक टीम होती है और एक बहुत से चीजें कारण होती है, जो आपकी जीत और हार तय करती है। अध्यक्ष जी, मैं हाथ जोड़कर कहूंगी कि चर्चा बहुत गम्भीर है। मेरे और भी साथी जिन्हें आप बोलने का मौका देंगे, वो आपके सामने तथ्य और प्रूफ रखेंगे इस मंच पर और मुझे लगता है बिल्कुल ऑन रिकार्ड आज बातें आएगी। क्योंकि शायद ये समझा जा हा था कि हम इलैक्ट्रिोनिक मीडिया में जाकर पब्लिसिटी के लिए अपनी हार को छुपाने के लिए ये सब मुद्दे उठा रहे हैं लेकिन आज हम सदन में खड़े होकर इस मुद्दों को उठाते हैं। तो हम पब्लिसिटी के लिए नहीं, हम ऑन रिकॉर्ड संविधान के अंदर इस बात को दर्ज करवाना चाहते हैं, अध्यक्ष जी कि बहुत बड़ा एक खेल इस देश में ईवीएम के माध्यम से खेला जा रहा है। और एक प्रश्न अध्यक्ष जी, प्रश्न जो बाहर उठे, लास्ट में मैं कह रही हूं। उन्होंने कहा कि इतनी सारी मशीनें टैम्पर करना सम्भव नहीं है। आम आदमी पार्टी की 40 आई यानी कि वहां पर भी टैम्परिंग हुई है। अध्यक्ष जी, कोई बेवकूफ नहीं है। हमें भी मालूम है जिन्होंने टैम्परिंग कराई है, बहुत समझदार लोग हैं आप। सौ जगह वोट होगा तो सौ के सौ ईवीएम

आप टैम्परिंग नहीं कराएंगे क्योंकि आप उसी समय बेनकाब हो जाएंगे लेकिन आपने ये देखा कि सौ में से कितनी टैम्पर कर हमारी उत्तर प्रदेश हमारी पंजाब, हमारी उत्तराखंड हमारी नगर निगम में, जहां पर नगर निगम में कोई यकीन नहीं कर रहा था। दस साल का भाजपा की गंदगी और भ्रष्टाचार से, इनके जो पार्षदों ने जाके भ्रष्टाचार के खेल खेले, कोई भी उम्मीद नहीं कर रहा था।

अध्यक्ष महोदय : अब कन्क्लूड करिए अलका जी, प्लीज।

सुश्री अलका लाम्बा : लेकिन मैं यहीं कहूंगी कि बहुत सोची समझी साजिश के तहत ये खेल खेला जा रहा है, जिसका बेनाकब होना इसलिए जरूरी है क्योंकि ये राजनीतिक दलों का या जो बाहर से मि. राव जैसे लोग हैं, ये इनका मुद्दा नहीं है, ये लोकतंत्र का मुद्दा है। ये एक-एक वोट का मुद्दा है। ये हमारे हक और अधिकारों का मुद्दा है जिस पर आज इस सदन में बात उठी, बेनकाब होना चाहिए। मेरी शुभकामनाएं सरकार के साथ हैं क्योंकि मुझे पूरी उम्मीद है आज ऐसे खुलासे, ऐसी बातें, ऐसी चीजें, आज इस देश के सामने रखी जाएगी जो इस बात को बल देगा कि हम हारने और थकने वालों में नहीं हैं जब तक सच्चाई सामने लाकर बेनकाब नहीं किया जाएगा और लोकतंत्र का इस तरह से आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता है। धन्यवाद। जय हिंद, जय भारत।

अध्यक्ष महोदय : अन्य सदस्य भी चर्चा में भाग ले सकते हैं। श्री नरेश यादव जी।

श्री नरेश यादव : धन्यवाद अध्यक्ष जी, आपने इस महत्वपूर्ण चर्चा पर

मुझे भाग लेने का मौका दिया। अध्यक्ष जी, आज ये ईवीएम जो ईश्यू उठ रहा है, इससे ऐसा लग रहा है जैसे भारत के लोकतंत्र पर एक खतरा है। पूरे लोकतंत्र के लिए, प्रजातंत्र के लिए इलैक्शन बहुत ही महत्वपूर्ण होता है और इलैक्शन फ्री एंड फेयर हों, लोगों में, इलैक्शन कराने वाले जो एजेन्सी है, उसके ऊपर पूरा विश्वास रहे और वो लोगों की भावनाओं को समझते हुए वो इलैक्शन कराएं। आज पूरे देश में ऐसा माहौल है कि इलेक्शन कमिशन को लोग शंका की नजर से देख रहे हैं और ईवीएम ही इसका सबसे बड़ा कारण है। हर जगह से आवाज उठ रही है। सभी पार्टियों ने, सभी बड़ी-बड़ी पार्टियों ने इसके ऊपर सवाल उठाए हैं कि ईवीएम हमारे हमारे देश में टैम्पर हो रही है और उसी वजह से इस तरह के रिजल्टस आ रहे हैं। अभी हाल ही में 18 बड़ी पार्टियां राष्ट्रपति से मिली थी। आम आदमी पार्टी तो ये मुद्दा उठा ही रही है, इसके अलावा राष्ट्रपति से देश की बड़ी-बड़ी पार्टियां मिली और उन्होंने भी ईवीएम का मुद्दा उठाया। लेकिन पता नहीं क्यों, इलैक्शन कमिशन और सैन्ट्रल गवर्नमेंट इस मुद्दे को इतना सीरियसली नहीं ले रहे हैं। जरूर इसके पीछे कुछ न कुछ तो राज है। जरूर ऐसी कोई बात है जिसका फायदा शायद सैन्ट्रल गवर्नमेंट को मिल रहा होगा वरना जब सारे देश की सारी पार्टियां इस बात को शंका उठा रही हैं कि ईवीएम टैम्पर हो रही है और ईवीएम टैम्पर होने की वजह से इस तरह के रिजल्टस आ रहे हैं तो उसका इन लोगों को, सबको, पूरे भारत की जनता के सामने एक उदाहरण पेश करना चाहिए कि नहीं हम लोग इस शंका को बिल्कुल मिटा देंगे और लोगों के सामने एक ऐसा उदाहरण पेश करा चाहिए इस सैन्ट्रल गवर्ननमेंट को कि जिस से कि लोगों में लोकतंत्र के लिए विश्वास पैदा हो। इसके लिए बहुत अलग-अलग समय में अलग-अलग आवाजें उठा रही हैं। पूरी दुनिया भर में

कई देशों में ईवीएम में बैन लगाया है। कई बड़े-बड़े देशों में ईवीएम को कभी इस्तेमाल ही नहीं किया। क्यों हुआ ऐसा? जब इसमें इस तरह की शंका उठती है तभी इसी को देखते हुए ही ये सारी की सारी चीजें पूरे विश्व के बड़े-बड़े देशों ने ऐसा किया है। अभी 2009 में जब उड़ीसा असेम्बली के इलैक्शन हुए, तो जे बी पटनायक जी ने ये मुद्दा उठाया था कि ईवीएम में टैम्परिंग हुई है। उसी से बीजेपी को फायदा मिला है। इसके 2010 के इलैक्शन में तीन साईंटिस्टों ने इसको डैमोंस्ट्रेशन देते हुए किस तरह से मशीन हैक हो सकती हैं, ये दिखाया गया। इसके अलावा 2010 के इलेक्शन, 2010 में तीन साइंटिस्टों ने इसका डेमोस्ट्रेशन देते हुए कि किस तरह से मशीन हैक हो सकती हैं, ये दिखाया गया और पूरी दुनिया ने वो चीज देखी। 2014 के जनरल इलेक्शन हुए। उस पर भी ईवीएम पर सवाल उठे। लगातार ये सवाल उठते आ रहे हैं। आज हमारी पार्टी आम आदमी पार्टी ने इस मुद्दे को बहुत ही गंभीरता से उठाया है। आज लोग चाहे यकीन नहीं कर रहे हैं लेकिन एक समय आएगा, जब खुलासा होगा, जब सबको पता चलेगा और यकीन नहीं कर रहे हैं लेकिन एक समय आएगा, जब खुलासा होगा, जब उसका पता चलेगा और इसी देश में ईवीएम को हो सकता है भविष्य में बैन करना पड़े। तभी लोगों को यकीन होगा कि आम आदमीपार्टी या हमारे चीफ मिनिस्टर जो आवाज उठा रहे थे, उसमें ये सच्चाई थी। बहुत ही फेक्ट के साथ, बहुत ही प्रूफ के साथ में ये सारी चीजें उठायी जा रही हैं। अभी जैसे हाल ही में मेरी विधान सभा के साथ में, अलका जी ने जैसे बताया, छत्तरपुर में जो टोटल वोट पोल हुए हैं, वो कम हैं और ईवीएम 429 वोट ज्यादा दिखा रही है। ऐसा कैसा संभव हो सकता है, 429 वोट ईवीएम में ज्यादा कहां से आ गए? जब भी हम वोट डालने जाते हैं बकायदा रजिस्टर में एंट्री होती है, सिग्नेचर होते हैं, स्याही लगाई

जाती है। उसके बाद में बटन दबाने का मौका मिलता है और वहां से हमारा ही कैंडिडेट दो वोट से हार जाता है और उसके बाद में जब ये मुद्दा कोर्ट में जाता तो कोर्ट में वो सारा का सारा सील किया जाता है। इसी तरह से बाम्बे हाई कोर्ट ने फारेंसिक जांच के आदेश दिए हैं। उत्तराखंड में लगभग ढाई हजार मशीनें सील करने के आदेश दिए गए हैं। तो अब धीरे धीरे जो आवाज हम लोग उठा रहे थे, जो लोग लोगों को कह रहे हैं, हम लोग जब लोगों से हम बात करते हें तो वो इस बात पे कई बार मजाक उड़ाते हैं लेकिन जब ये धीरे-धीरे सारे प्रूफ सामने आएंगे और लोगों की आंखें खुलेंगी, तब पता चलेगा कि हां, ईवीएम भी कितना बड़ा घोटाला था और किस तरह से ईवीएम को इस्तेमाल करके इन लोगों ने चुनाव जीते हैं और किस तरह से आज ये बीजेपी की पार्टी जो ईवीएम पर इतना शोर मचाती थी, आज कैसे खामोश है। तो यही एक अपने आप में शंका का विषय है कि जब दूसरी सरकार थी तब तो ईवीएम में टेम्परिंग हो सकती थी। लेकिन आज जब आपकी अपनी सरकार है तो आज ईवीएम के मुद्दे पर आप बिल्कुल शांत हैं इसका मतलब आप लोगों को ईवीएम से फायदा हो रहा है। आप चुनाव जीत रहे हैं, आप क्लीन चिट दे रहे हैं, ऐसा क्यों? ये सवाल सबके मन में आ रहा है कि एक समय था जब एल. के. अडवाणी जी हारे थे तो उन्होंने ईवीएम पर सवाल उठाए थे। आज क्यों? आज भी उन्हीं की सरकार है। आज भारत सरकार उनके हाथ में है, इलेक्शन कमिशन उनके हाथ में है। क्यों आज लोगों की शंका को ये दूर नहीं करते? इसका मतलब सीधा सा दाल में कुछ न कुछ जरूर काला हे। यही मुद्दा हम लोग उठा रहे हैं। यही बात हम लोगों को कह रहे हैं कि आज आप लोगों को लग रहा है कि हम ईवीएम, ईवीएम करके अपनी हार को छुपा रहे हैं लेकिन ऐसा नहीं है। पंजाब का इलेक्शन

था, पंजाब में एक माहौल को देखते ही, जहां भी जाते थे, हमें लोग कहते थे कि आम आदमी पार्टी यहां जीत रही है, सरकार बना रही है। कोई ऐसा शख्स नहीं मिला जिसने ये न कहा हो। लेकिन जब रिजल्ट आता है तो एक दम से उलट आता है। यूपी में भी अखिलेश सरकार का खूब बोल बाला था। जहां भी किसी से बात होती थी, सब कहते थे अखिलेश का है। लेकिन उसके बाद में क्या हुआ एक दम से वहां बीजेपी की इतनी सीटें आईं कि उसका लोगों को क्या, इनको खुद को भी यकीन नहीं हो रहा है कि हमारी इतनी सीटें आ सकती हैं! तो ये सारी की सारी शंकाएं उठ रही हैं तो इसके ऊपर आज सेंट्रल गवर्नमेंट को पूरे हमारे देश की जनता का जवाब देना चाहिए और इसके ऊपर सारी पार्टियों को इसको एक मौका दे देना चाहिए कि किस तरह से अगर ईवीएम हैक हो सकती है और लोग चैलेंज कर रहे हैं, कह रहे हैं कि हमें मौका दें, हम लोग ईवीएम को हैक करके दिखाते हैं कि किस तरह से ये टैम्पर हो सकती है।

अध्यक्ष महोदय : कन्क्लूड करिए, कन्क्लूड करिए, यादव जी, कन्क्लूड कीजिए।

श्री नरेश यादव : लेकिन इसके बावजूद भी इसको दरकिनार किया जा रहा है तो आज ये मुद्दा बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा है और हमारे लोकतंत्र पर ये खतरा है। तो मैं यही कहूंगा कि आज नहीं तो कल एक समय आएगा जब आम आदमी पार्टी को अरविंद केजरीवाल जी को लोग याद करेंगे और कहेंगे कि देखिए, माहौल उस समय कुछ ओर था और ये उस समय कतना स्ट्रॉगली ये मुद्दा उठाते थे। तब लोगों को यकीन हो जाएगा, जब सारे प्रूफ सामने आ जाएंगे, तब सब लोग मानने लग जाएंगे। मैं इन्हीं शब्दों के साथ

अपनी वाणी को विराम देता हूं, बहुत-बहुत धन्यवाद अध्यक्ष जी।

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद धन्यवाद, श्री राजेश गुप्ता जी।

श्री राजेश गुप्ता : अध्यक्ष जी, आपने ईवीएम के साथ कथित छेड़छाड़ और लोकतंत्र के लिए खतरा विषय पर अभी बोलने का मुझे मौका दिया, उसके लिए बहुत धन्यवाद।

मैं सबसे पहले अपने भाई सिरसा साहब को बहुत-बहुत बधाई देता हूं और पूरा विश्वास है मुझे है कि आप कंस्ट्रक्टिव अपोजिशन की भूमिका निभाएंगे। अध्यक्ष जी, आज जिस बारे में हम बात कर रहे हैं, वो बहुत अजीब सी बात है। क्योंकि अभी बार-बार भ्रष्टाचार के बारे में बात करते हैं, भ्रष्टाचार, भ्रष्टाचार...हर भ्रष्टाचार किसी न किसी का नुकसान करता है। कुछ थोड़े से लोगों का फायदा भी करता है। लेकिन ये तो एक ऐसा भ्रष्टाचार है शायद जिससे पूरे देश की सवा सौ करोड़ की आबादी ही इसकी चपेट में आ जाती है। ये देश के अन्दर जो सवा सौ करोड़ लोग हैं, उसमें जो भी बैलिड वोटर्स हैं, वो वोट डालने के लिए जाते हैं और विश्वास के साथ में जाते हैं कि उसके पास एक पॉवर है सरकार बनाने की और सरकार को गिराने की। लेकिन अगर उस अधिकार के ऊपर ही सवाल खड़ा हो जाए, आज हममें से बहुत सारे साथी जो वोट मांगने के लिए जा रहे थे एमसीडी के इलेक्शन्स में, तो लोगों ने उनसे पूछा कि ठीक है जी, वोट तो आपको दे देंगे लेकिन भइया मशीन देख लेना। क्योंकि आपकी लड़ाई कांग्रेस या बीजेपी से तो है ही है, लेकिन मशीन से ज्यादा है। हम लोगों ने बार-बार उनको विश्वास दिलाया कि भाई इसमें हम पूरी कोशिश करेंगे। हम इलेक्शन कमिशन के पास गए, जैसे अभी आपको बताया गया। वहां पे हम बार बार कहते रहे लकिन स्टेट इलेक्शन

कमिशन ने जो बताया कि भाई हमारे पास तो इतनी ही मशीनें हैं और हमें बाहर से मंगानी पड़ेगी और वहां से मंगानी पड़ेंगी, जहां की मशीनें अभी कुछ ही दिनों पहले पकड़ी गई थी टीवी में। बकायदा आपने भी देखा होगा। लेकिन हमारी बात नहीं सुनी गई और वहीं से मशीनों को मंगाया गया। इलेक्शन कमिशन ऑफ इंडिया का ये कहना था कि भाई ये लोकल इलेक्शंस हैं, इसमें हमारी जवाबदेही नहीं है। लेकिन शायद वो भूल गए कि सिर्फ चुनाव कराना ही उनकी जवाबदेही नहीं है बल्कि लोगों को ये लगे के इलेक्शन फेयर है, इलेक्शन फेयर हो भी और जनता को ये लगे भी कि इलेक्शन फेयर हो रहे हैं, ये भी उन्हीं की जिम्मेवारी है।

अध्यक्ष जी, जैसे कि अभी हमारी बहन ने बताया कि तीन तरीके की, तीन जनरेशंस की मशीन्स हैं इंडिया के अन्दर 89 से 2006 की है, 2006 से 2012 की है और 2013 ऑनवर्डस हैं। अब बड़ी मजेदार बात है कि अगर आप उस समय को याद करें जो 1989-90 का है, तो आपको याद होगा उसमें कुछ गाड़ियां आया करती थी जो सभी गाड़ियां कार्बोरेटर वाली हुआ करती थी उसी तरीके से टीवी आया करते थे बड़े-बड़े से जिनको कोई लोकल मिस्त्री ठीक कर दिया करता था। उस गाड़ी को आप ले जाओ, कौने में ले जाओ, उसे कोई भी ठीक कर दिया करता था। लेकिन आज अगर अपने उस एलईडी टीवी को जो अब नया आया है, उसे आप लेके जाएंगे तो लोकल मिस्त्री उसको हाथ भी नहीं लगा पाता। वो कहता है कि साहब, इसको मैं ठीक नहीं कर सकता क्योंकि ये नई टेक्नोलॉजी है। वैसे ही कार है आपकी, आप जाओ लोकल मिस्त्री पे लेके वो कहेगा कि साहब, इसमें कार्बोटर नहीं है इसमें तो मल्टी फ्यूलिंग इजेंक्शन है, ये मेरे से तो ठीक नहीं होगा। इसको तो आप

अथॉराइज सर्विस स्टेशन पे लेके जाओ। सर जी, वैसे ही ये तीन मशीनें हैं, ये मशीन, ये कहते हैं कि हम टेक्नोलॉजी के खिलाफ हैं, हम टेक्नोलॉजी के खिलाफ नहीं हैं। हम ये नहीं कह रहे हैं कि बैलगाड़ी ले आओ, हम कह रहे हैं कि उस कार को नई टेक्नोलॉजी में ले के आओ। उस मशीन के साथ में ऐसी सिक्योरिटी की चीजें लगाई जाएं जिसको हम सभी जानते हैं कि वीवीपीएटी कहते हैं कि साथ में पता तो लग जाए। अगर हम, दुनिया का सबसे बड़ा प्रजातंत्र, इस काम के करके राजी नहीं है। लेकिन दुनिया का जो सबसे पुराना प्रजातंत्र है 50 स्टेट्स हैं और 45 के अन्दर या तो वो साथ में वीवीपीएटी की पर्ची निकले नहीं, तो बैलेट से ही वोटिंग हो जाए। लेकिन हमारे देश में इस वक्त जिनकी सरकार है, उनको इससे फायदा हो रहा है। अभी जैसे मेरे भाई ने बताया कि ये समझ में ही नहीं आया। पंजाब में आप भी परिचित होंगे, मेरे भी परिचित हैं। इंडिया से बाहर दुनिया भर के परिचित थे, वहां से लोगों के मुझे फोन आ रहे थे, जो लोग वहां पे हमारे पड़ोसी हुआ करते थे कि भाई, इस बार तो झाड़ू चलेगी। सानू बदलाव चाहिदा है। जब देखो एक ही आवाज आ रही थी और रिजल्ट आपके सामने है। अभी तक समझ में नहीं आया। किसी मीडिया हाउस में अरे! भाई गुब्बारे किसी कांग्रेस के घर के बाहर लगे हुए थे क्या? कहीं नहीं लगे थे, हमारे थे। क्योंकि सारे मीडिया हाउसिज, पब्लिक जितने सोर्सेज हो सकते थे, उन सबने एक ही बात कही थी कि आम आदमी पार्टी की सरकार बनने जा रही है और वो भी प्रचण्ड बहुमत के साथ में। सौ से ऊपर सीटें आ रही हैं। अगर सौ नहीं आती 80 आ जाती जो बच्चा पढ़ाई के अन्दर बहुत पढ़ाई करता है, बहुत अच्छी करता है वो सौ की उम्मीद करता है, 70 आ जाते, 80 आ जाते फेल नहीं हो सकता वो। लेकिन फेल हो कसता है अगर उसने जो किताब, जो जवाब

लिखें हैं, जो उसकी उत्तर पत्रिका है, उसको ही बदल दें। अगर तो कुछ भी सकता है। तो वो ही शायद इन्होंने करा और सबसे कमाल की बात है कि कुछ साल पहले तो सबसे ज्यादा परेशानी ही इन्हीं को थी। यही सबसे पहले पहले कहते थे। इन्हीं के इतने बड़े नेता हैं, सुब्रमण्यम स्वामी जी। उनका खुद का ही कहना है कि भाई हमारी ता सरकार पक्की आ रही है एनडीए की 320 सीटें आएंगी बशर्ते ईवीएम में टेंपरिंग न हो। इन्हीं के नेता थे, वो ही कह रहे थे इस बात को कि 320 आ जाएंगी और इस जगह पर जरूर टेंपरिंग होंगी, जहां पर कांग्रेस की सरकारें हैं। ये खुद इनके नेता जी का कहना था। लेकिन शायद ये भूल जाते हैं बार-बार, हर मुद्दे को भूल जाते हैं। जीएसटी! हर मुद्दा इनको घूम के वापस आ जाता है। इसलिए उसको भी ये भूल गए और देखिए कि जिन मशीनों पे इन्होंने बहुत तगड़ी स्टडी करी है, ऐसा लगता है कि...अभी हमारे भाई नरेश जी कह रहे थे कि ये सीरियसली नहीं ले रहे। मेरा कहना है कि इन्होंने बहुत सीरियसली लिया। इन्होंने कहा, 'यार, ऐसे तो जीत नहीं सकते। हिन्दुस्तान की जनता को ऐसे ही बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता के आप 282 सीटें ले आआ।' 'ऐसे कैसे आएंगी? ऐसे तो कैसे यू. पी. के अन्दर इतनी सीटें जीतीं जायें!' तो उसका तरीका तो यही है कि मशीनों को छेड़ा जाये। लोग तो बहुत समझदार हैं। अरे भईया, इस देश के अन्दर दिल बदल दिये जाते हैं आजकल। ट्रांसप्लान्ट होते हैं। है न प्रधान जी? तो चिप बदलने में क्या लग रहा है। जब दिल बदल दिये जाते हैं तो चिप में क्या है सर, ये बहुत छोटी सी चीज है। लेकिन इन्होंने बड़े-बड़े सवाल उठाये। इन्होंने एक टाइम पर तो इतना भी करा कि पूरी एक एन. जी. ओ. बनायी गयी किसी तरीक से और ये पूरी तरह प्रूव करने की कोशिश करी। विवेकानन्द फाउन्डेशन बनायी की भई ये जो ई. वी. एम्स. हैं, देश के लिए

खतरा है। ये डेमोक्रेसी के लिए खतरा है। इससे हिन्दुस्तान की डेमोक्रेसी खतरे में आ जायेगी लेकिन आज इनको उसी को लेके फायदा हो रहा है तो ये चुप हैं! ये कैम्पेन चलाते थे जिसमें लिखते थे 'Democracy at risk! Can we trust our electroal voting machines? ये इन्हीं के राव साहब थे। इनके पास भी एक राव साहब थे जो इसके साथ में लगे हुए थे कि किसी तरीके से मशीन को हटा दिया जाये क्योंकि इनको लग रहा था कि ये हार गये।

अध्यक्ष जी, बात सिर्फ मशीनों की नहीं है। मशीनें तो हम सब जानते हैं, ऐसी दुनिया में कोई चीज बनी नहीं, जिसे इन्सान बनाये और टैम्पर कर पाए। ऐसी दुनिया में कोई चीज नहीं है, जो इन्सान बनायेगा, उसे बहुत आराम से टेम्पर कर सकता है। लेकिन सवाल देश के प्रजातंत्र का है। जैसे मैंने अभी बात शुरू करी थी कि अगर देश के लोगों को इस बात से विश्वास उठ जायेगा और यहां पर एक बात का और ध्यान देना पड़ेगा कि अभी हमारे बड़े भाई सिरसा जी बाहर चले गये। 43 या 44 परसेंट वोटिंग हुई थी सिर्फ उनके यहां पर। आखिर क्यों इतने लोग बाहर नहीं आये? कहते हैं गर्मी। अरे सर, इस देश के अन्दर 9-10 महीने गर्मी ही पड़ती है औ बहुत इलेक्शन हुए गर्मियों के अन्दर। गर्मी कोई कारण नहीं है। लोग कारों में आ जाते हैं। बैट्री रिक्शा में आ जाते हैं। क्यों? अगर किसी एक स्टेट में, मैं नाम नहीं लेना चाह रहा। 7 परसेंट, 8 परसेंट वोटिंग हो रही है, लोगों का विश्वास हटता जा रहा है। लोग कह रहे हैं अरे यार! वोट देने के लिए जायेंगे और बटन कोई भी दबायेंगे, चला जायेगा कमल पर, तो फिर फायदा ही क्या है? आप देश की भावनाओं से, उसकी उम्मीदों से, उसकी इच्छाओं से, उसके विश्वास के साथ खेल रहे हो और ये किसी भी देश के लिए अच्छा नहीं है और किसी भी देश की

आवाम को, जनता को ये लगने लगे कि हम कुछ भी करेंगे, हमारे हाथ से वो एक अधिकार क्योंकि ये जो अधिकार है, किसी भी धर्म का आदमी हो, किसी भी जाति का आदमी हो, गरीब हो, अमीर हो, मत देने का अधिकार एक ही है। आप भी एक वोट दे सकते हो, गरीब आदमी भी दे सकता है, पैसे वाला भी दे सकता है। किसी भी जाति का हो। लेकिन जब उसे ये लगने लगा है कि मेरा वो एक अधिकार है, मुझसे वो छीन लिया गया। आज मैं सरकार न बना सकता हूं और न गिरा सकता हूं तो उसके दिल में देश के लिए जो आस्था है, वो खत्म हो जायेगी। एक बहुत बड़ा रिस्क है। मेरा ये अनुराध है कि मेरा ये मानना है कि जैसे कि अभी योगी जी ने, माननीय, वैसे तो हमारे मुख्यमंत्री जी हैं और हिंदुस्तान में फिलहाल दो ही मुख्यमंत्री हैं। आजकल अगर आप बच्चों से पूछोगे तो कहेंगे दो ही हैं। मीडिया कहती है, ''तीस नहीं हैं, बस दो ही हैं।'' एक बहुत बुरा है जो दिल्ली में है और एक बहुत अच्छा है जो यू. पी. में है। और तो कोई है ही नहीं। 28 की तो कोई गिनती नहीं है बेचारों की। हमने तो देखा नहीं, शायद आपने भी न देखा हो। और वो कहते हैं कि एवरी, ई. वी. एम. का मतलब है एवरी वोट फार मोदी। कमाल हो गया! मेरा तो कहना है 'Every vindicitive mechnism to oppose other parties, to finish other parties.' ये सबको खत्म करना चाहते हैं। या तो आप इनका साथ दें, इनके साथ लग जायें इनके भ्रष्टाचार में, इनकी साम्प्रदायिकता में, इनकी हर बुरी चीज में हम इनका साथ देवें, नहीं तो ये हमें खत्म कर देंगे। ये हर तरीका अपना रहे हैं लेकिन आज तक इस दुनिया में मच्छर तक खत्म नहीं हुए। तो हम तो एक आन्दोलन से निकले हुए पार्टी हैं और मेरा पूरा विश्वास है कि आज जो हम आगे चल रहे हैं और आगे सबको बोलना है। सब सुनेंगे आप। मेरा पूरा विश्वास है कि आज

देश और जनता ये जरूर जानेगी कि जो सवाल उनके पास था, उसका जवाब देने की हम कोशिश करेंगे। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री सौरभ भारद्वाज।

श्री सौरभ भरद्वाज : अध्यक्ष महोदय, अपनी बातचीत शुरू करने से पहले मैं आपकी अनुमति चाहता हूं कि मैं सदन के अन्दर एक मशीन लाना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय : ले आइये। माननीय सदस्य बैठ जायें। बाकी सदस्य बैठ जायें। बैठिये प्लीज।

श्री सौरभ भारद्वाज : अध्यक्ष जी, इस देश के अंदर बहुत चर्चा हो रही है आजकल इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन की और अक्सर चर्चा इस बात पर रूक जाती है और उसको रोका इस बात पर जाता है कि इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन जिसको ईवीएम कहा जाता है, इसको टेम्पर नहीं किया जा सकता। इसको हैक नहीं किया जा सकता। इसको रिग नहीं किया जा सकता और इसके अन्दर कोई गड़बड़ी नहीं की जा सकती।

अध्यक्ष महोदय, मैं थोड़ा सा अपने बारे में बताऊं कि मैं पेश से, अब तो पेशा मेरा खैर! विधायक का है। इससे पहले मैं कम्प्यूटर साईंग्स इन्जीनियर हूं। बी. टेक. कम्प्यूटर साईन्स मैंने किया है। दस साल मैंने पूरे संसार की जो बड़ी-बड़ी कम्पनीज हैं, जो एम्बेडेड सिस्टम के अन्दर काम करती हैं। जो इस तरीके के माईक्रो कन्ट्रोलर्स के अन्दर काम करती हैं, कन्ट्रोल प्रोसेसर्स क अन्दर काम करती हैं, इसकी फैब्रिकेशन देखती हैं, इसके अन्दर प्रोग्रामिंग करती हैं, इसके अन्दर के सॉफ्टवेयर को डालती हैं, उसको टेस्ट करती हैं। मेरा करीब दस साल का अपना निजी तजुर्बा है इस तरीके की एम्बेडेड सिस्टम्स के ऊपर काम करने का और 2013 में मैंने नौकरी छोड़ी थी और अब करीब चार साल हो गये और चार साल के टेक्नोलॉजी गैप के बावजूद, चार साल मुझे

नहीं मालूम किस देश के अन्दर, दुनिया के अन्दर क्या नई टेक्नॉलाजी आयी और क्या चीज बदली, क्या नये फीचर्स आये। मगर इतने बड़े गैप के बावजूद भी मैं आप लोगों के सामने एक मशीन लाया हूं जो हूबहू इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन, ई. वी. एम. मशीन की तरह, उसी के सामने एक मशीन लाया हूं जो हूबहू इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन, ई. वी. एम. मशीन की तरह, उसी मशीन की तरह है जिसके बटन दबाने के बाद हम इस हिन्दुस्तान का मुकद्दर चुनते हैं। ये उसी मशीन की तरह है जिस मशीन के बटन दबाके लोगों ने 2014 के अन्दर एक सरकार चुनी। इस मशीन के ऊपर आज की केन्द्रीय सरकार, जो हमारी सेन्ट्रल गवर्नमेंट है, वो इसी मशीन के ऊपर टिकी हुई है। आपको ये दिख रहा है। इस मशीन के अंदर टेक्नोलॉजी वाईज मैं बताना चाहूंगा कि दो यूनिट्स होती हैं। एक ये जो यूनिट है, ये मैं आपको सबको बताता हूं। ये कन्ट्रोल यूनिट होती है। कण्ट्रोल यूनिट के अंदर वोट इकट्ठे किये जाते हैं। जो दूसरी यूनिट होती है, इसको बैलेट यूनिट कहा जाता है। बहुत सारे लोगों ने इस बैलट यूनिट को देखा होगा। जब हम वोट डालने जाते हैं तो जिस पार्टी को हम वोट डालना चाहते हैं, उस पार्टी के सामने वाला हम बटन दबाते हैं और वोटर को दिल में ऐसा यकीन होता है कि मेरी वोट उस पार्टी को चली गयी। ये जो यकीन है, ये जो ट्रस्ट है, ये जो बिलीफ है, यही इस हिन्दुस्तान के प्रजातंत्र की जम्हूरियत की नींव है। अगर ये ट्रस्ट हिला तो हिन्दुस्तान के एक-एक आदमी का ट्रस्ट इसके प्रजातंत्र से हिलेगा। आज इस सदन के माध्यम से मैं ये दिखाना चाहता हूं कि इस प्रजातंत्र की नींव ऐसी मशीनों के ऊपर टिकी हुई है जिसको मेरे जैसा एक साधारण इन्जीनियर भी दस-पन्द्रह दिन की मेहनत के बाद, जहां वोट डलवाना चाहे, वहां वोट डलवा सकता है, ये हम अभी इस सदन के सामने साबित करेंगे।

अध्यक्ष महोदय, तो जैसा कि मैंने आपको दिखाया कि इसके दो यूनिट्स हैं। ये जो यूनिट होती है कन्ट्रोल यूनिट। अगर आप वोट डालने कभी भी जायेंगे तो ये वाली यूनिट हमेशा प्रेजाइडिंग आफिसर के पास होती है, मतलब जो अफसर वोट डलवाता है, उसके पास होती है। करीब पांच मीटर दूर यानी वहां पर रखी होती है और ये वाली जो यूनिट होती है, ये गत्ते के डब्बे के अन्दर रखी होती है, जहां पर वोटर जाता है और बिना किसी को दिखाये कोई बटन दबाता है और वोट इस मशीन के अन्दर यहां दर्ज हो जाती है। अक्सर जब भी टेलीविजन के अन्दर जब भी बहस होती है ये कहा जाता है कि मशीन के अंदर वोट डालने से पहले उसको दस बार चेक कराया जाता है और ये कहा जाता है कि मशीन के अन्दर वोट डलने से पहले उसको दस बार चेक कराया जाता है और ये बात सच भी है। चेक कराया जाता है। आपके जब उम्मीदवार अपना नामांकन भरते हैं, तब रिटर्निंग आफिसर आपके उम्मीदवारों को बुलाता है। सबको एक कमरे में बिठाता है, कहता है, ''जी देख लो, मशीन के अन्दर कुछ नहीं है। सारी वोट जीरो, जीरो, जीरो हैं। आओ जी, वोट डाल के देख लो।'' कैंडिडेट आता है, वो अपनी तीन वोट डालता है। दूसरा कैंडिडेट आता है, वो अपनी पांच वोट डालता है। तीसरा आता है, वो अपनी चार डालता है। टोटल करके दिखा देते हैं, वो कहते है, ''हां जी, बिल्कुल ठीक मशीन है, बहुत बढ़िया चल रही है।'' ऐसे ही एक बार, दोबारा भी दिखाया जाता है। जिस दिन वोटिंग हो रही होती है, जिस दिन वोटिंग की शुरूआत हो रही होती है, जैसा कि अभी हमारे यहां 23 अप्रैल को एमसीडी के इलैक्शन के अंदर वोटिंग थी तो हमारे उम्मीदवारों को, उससे कुछ दिनों पहले वोटिंग मशीन दिखाई गई और उस दिन, जिस दिन वोटिंग थी, उस दिन अलग-अलग पार्टियों के जो पोलिंग एजेंट होते हैं, उनको सुबह छह बजे जब वो कमरे के अंदर

दाखिल होते हैं, उनको दिखाया जाता है कि कैसे वोटिंग मशीन बिल्कुल ठीक है और मैं एक बार जनरली तौर पर आपको दिखाता हूं कि यह वोटिंग मशीन जो आपके सामने रखी है, यह ईवीएम जो आपके सामने रखी है, कैसे आप लोगों को यकीन होगा कि यह मशीन बिल्कुल ठीक है, बहुत बढ़िया है और देश के प्रजातंत्र के लिए बहुत जरूरी है तो आप लोगों को दिखाने के लिए इस मशीन को हम ऑन करेंगे। यह मशीन मैंने ऑन की। अब जो प्रेजाइंडिंग ऑफिसर होता है, वो यह बटन दबाता है और इसका मलब यह कि मशीन वोट डालने के लिए तैयार है और जो पहला वोटर आया, उसने झाड़ू पर बटन दबाया। तो इस वक्त आम आदमी पार्टी की एक वोट हो गई। दूसरा वोटर आया, उसने हाथी के आगे बटन दबाया, हाथी के आग वाला लाल बटन दबा, मशीन में आवाज आई, वोटर को लगा कि मेरा वोट जो है, वो हाथी को चला गया। तीसरा वोटर आया, उसने बीजेपी के आगे वाला बटन दबाया, लाइट जली, आवाज आई, बीजेपी को वोट चला गया। चौथा वोटर आया, उसने हाथ पर बटन दबाया, पांचवां वोटर आया, उसने साइकिल पर बटन दबाया। आप लोगों के सामने मैंने पांचों पार्टियों को एक-एक वोट दिये तो मेरी सहूलियत के लिए, ताकि मुझे ऐसा लगे कि आप लोगों को यकीन हो रहा है कि कहां वोट जा रही है, आप मुझे यह बताइये कि आम आदमी पार्टी को कितने वाट पड़े, बहुजन समाज वादी को कितने वोट पड़े, भारतीय जनता पार्टी को कितने वोट पड़े, इंडियन नेशनल कांग्रेस को, समाजवादी पार्टी को। इसी तरीके से एक-एक वोट मैं और डाल लेता हूं और एक मॉक टेस्ट है जैसे सुबह-सुबह दिखाया जाता है कि यह मशीन बिल्कुल ठीक है, वो आपको करके दिखाता हूं। यह मैंने एक और वोट झाड़ू को दिया। दूसरा वोट मैंने फिर से हाथी को

दिया, इनके भी दो हो गये। फिर मैंने वोट कमल को दिया, कमल के दो वोट हो गये। फिर मैंने वोट हाथ को दिया, हाथ के भी दो वोट हो गये। अगला वोट मैंने साइकिल को दिया, समाजवादी पार्टी के भी दो वोट हो गये। अब आप लोगों के सामने मैंने एक टेस्ट कराया कि मैंने सब पार्टियों को दो-दो वोट दिये। अब जैसे कि मॉक टेस्ट में सुबह-सुबह सबको दिखाया जाता है कि भाई साहब, मैं काउंटिंग करके दिखाऊंगा आपको। आप वहां पर देखियेगा कि इसमें कैंडिडेटवाइज आयेगा कि पहले कैंडिडेट को कितने, दूसरे को कितने, तीसरे को कितने? अब मैंने रिजल्ट दबाया। टोटल वोट 10, कैंडिडेट चार को दो वोट, कैंडिडेट पांच को दो वोट, कैंडिडेट छह को जीरो, कैंडिडेट सात का जीरो वोट, कैंडिडेट आठ को जीरो वाट, कैंडिडेट नौ को जीरो वोट, कैंडिडेट दस को जीरो वोट, कैंडिडेट 11 को जीरो वोट, कैंडिडेट 12 को जीरो वोट, कैंडिडेट 13 को जीरो वोट, कैंडिडेट 14 को जीरो वोट, कैंडिडेट 15 को जीरो। अब मैं इस मशीन को दोबारा से खाली कर दूंगा।

उप मुख्यमंत्री : एक बार दोबारा दिखा दो।

श्री सौरभ भारद्वाज : एक बार और दिखा दूं? मैं एक बार और दोबारा दिखाता हूं। अब हम इसकी पोजिशन को चेंज नहीं करेंगे। एक बार दोबारा से मैं आपको मॉक पोल दिखा देता हूं जिसके अंदर मैं सारी पार्टीज को, पांचों पार्टीज को दो-दो वोट डालूंगा और आपको दिखाऊंगा कि कैसे यह मशीन बिल्कुल ठीक है। अगर आप चाहें तो मैं तीन-तीन वोट भी डाल सकता हूं। एक बार मशीन को दिखाइयेगा उसमें। अब मैं आप आदमी पार्टी को एक वोट डाल रहा हूं। ऐसा कीजिये कि इसको हाफ स्पिलिट कर लीजिये ताकि आधी स्क्रीन के अंदर मेरा हाथ दिखे बटन दबाते हुए और आधी स्क्रीन के

अंदर मशीन दिखे। ठीक है? आप इसको थोड़ा क्लोज-अप कर लीजिये ताकि पार्टी का नाम दिख जाये इसमें।

उप मुख्यमंत्री : पहले जो दो-दो वोट थे, वो जीरो कर लिए?

श्री सौरभ भारद्वाज : जीरो कर लिए सब। इसको ऐसा करिये जूम ताकि पार्टियों का नाम दिखे इसके अंदर और थोड़ा करिये। ठीक है और यह बटन दिखे।

अध्यक्ष महोदय : अब ठीक है, अब करिये।

श्री सौरभ भारद्वाज : अब आप सब के सामने मैंने आम आदमी पार्टी को एक वोट डाला, आम आदमी पार्टी को मैंने दूसरा वाट डाला। ठीक इसी तरीके से हाथी को मैंने पहला वोट डाला, हाथी को मैंने दूसरा वोट डाला। कमल निशान को मैंने पहला वोट डाला, कमल निशान को मैंने दूसरा वोट डाला। समाजवादी पार्टी को मैंने पहला वोट डाला, समाजवादी पार्टी को मैंने दूसरा वोट डाला। अब मैंने आप सब को दिखाया कि मैंने इन सभी पार्टीज को, जो पांचों पार्टीज हमारे पास हैं, इनको दो-दो वोट डाले और जैसे कि मॉक टेस्ट में सुबह-सुबह लोगों को दिखाया जाता है बेवकूफ बनाने के लिए और पांच दिन पहले, इलैक्शन से पहले कैंडिडेट्स को बेवकूफ बनाने के लिए बुलाया जाता है कि आओ, तुम्हें हम मशीन की जांच करायेंगे। आओ, हम प्रजातंत्र के अंदर दिखायेंगे कि ये मशीन बिल्कुल सच्ची हैं और हम लोग उस सच्ची काउंटिंग को देखकर दिल में यह भरोसा कर लेते हैं कि हां, इलैक्शन कमीशन ऑफ इंडिया की ये मशीनें बहुत सही हैं। इसके अंदर सरकार का कोई लेना-देना नहीं है और आम आदमी इसी तरीके से बेवकूफ बनता आया

है। तो आइये हम मिलकर एक बार देखें कि कैसे हम और हमारे कैंडिडेट्स इस लोकतंत्र में कुछ सालों में मूर्ख बनते आ रहे हैं। अब रिजल्ट लगा रहे हैं। टोटल वोट 8 पहले कैंडिडेट को 2 दूसरे कैंडिडेट को 2 तीसरे कैंडिडेट को 2 चौथे को जीरो पांचवें को 2, सातवें को जीरो, आठवें को जीरो, नवें को जीरो, दसवें को जीरो, ग्यारहवें को जीरो, बारहवें को जीरो, तेरहवें को जीरो, जीरो, जीरो, एंड तो ये हमने मॉक पोल किया और इसके अंदर सभी कैंडिडेट्स जो हैं, वो सेस्टिफाई हो गये, सुबह सुबह पोलिंग एजेंट सेटिस्फाई हो गये कि ये मशीन बहुत बढ़िया काम कर रही है और इस मशीन पर हमें यकीन करना चाहिए। अब देखते हैं कि असली में आठ बजे वोटिंग शुरू होती है, तब क्या होता है। अब मैं इस मशीन को एक बार रिसेट कर दूंगा और अब सुबह के आठ बज गये हैं। असली वाली पोलिंग शुरू हो गई जिसके अंदर असली वोटर अब मशीन के पास आएगा और अपनी वोट डालेगा तो आमतौर पर ताकि लोगों को कन्फ्यूजन न हो और समझे में आसानी हो, तो हम ये मान लेते हैं कि पहला वोटर आया और उसने ज्यादातर जैसा होता है, उसे झाड़ू का बटन दबाया। तो ये एक वोट झाड़ू पर पड़ गया। अब दूसरा वोटर आया कमरे के अंदर घुसा, प्रेजाइडिंग ऑफिसर ने वोटिंग शुरू करी। दूसरा वोट हाथी पर चला गया। तो अभी आम आदमी पार्टी पर एक वोट और हाथी पर एक वोट। तीसरा वोटर आया, उसने कमल पर वोट डाला तो अभी तीनों पार्टियों को एक एक वोट। चौथा वोटर आया उसने हाथ पर बटन दबाया। चारों पार्टियों को एक-एक वोट। पांचवां वोट आया, उसने समाजवादी पार्टी को वोट दिया। तो अब पांचों पार्टियों को हमने कितने कितने वोट दे दिए? एक एक वोट दे दिया। अब हम इन पांचों पार्टियों को एक-एक वोट और देंगे ताकि पांचों पार्टियों को दो दो वोट हो जाएं। अब एसे ही इलेक्शन जैस

धीरे-धीरे चला तो करीब 9 बज गए। धीरे-धीरे लोग आ रहे हैं, 9 बजे एक वोटर आया, मशीन खोली गई, आम आदमी पार्टी को दूसरा वोट पड़ा। फिर एक वोटर आया, उसने बहुजन समाज पार्टी को वोट दिया। बटन भी दबा, लाइट भी जली, आवाज भी आई। तो वोटर को लगा, ''हां, मैंने वोट हाथी को दिया है, हाथी वाली लाइट जली थी। तो हाथी को वोट मेरा चला गया। फिर जब तीसरा वोटर आया उसने कमल पर वोट दिया। बटन भी दबा, आवाज भी आई। चौथा वोटर आया उसने हाथ के निशान पर वोट दबाया। वसे ही लाइट जली, आवाज आई। हाथ पर दूसरा वोट चला गया। फिर अगला वोटर आया। मान लीजिए वो समाजवादी पार्टी का वोटर है आर उसने साईकिल पर बटन दबाया। साइकिल के आगे लाइट जली और वोट साइकिल का चली गई, ऐसा वोटर को लगा। अब ऐसे ही चुनाव के अंदर 10 बजे गये। माहौल चुनाव का गर्म हो गया और 10 बजे के आसपास ही बीजेपी का एक कार्यकर्ता वोटर बनकर रूम के अंदर आया प्रंजीडिंग ऑफिसर ने कहा कि आप वोट डाल लीजिए। अब देखिये, वो सवाल जिसके बारे में हर बार चर्चा होती है कि जी मशीन तो सुबह ठीक थी। किसी ने मशीन खोली नहीं, किसी ने मशीन के साथ छेड़छाड़ नहीं की। 15 अफसर बैठे हुए थे जी, पुलिस वाले थे। कैसे मशीन के अंदर गड़बड़ हो गई, यही सवाल होता है न? जवाब ये है कि उस दिन जिस वक्त वोटिंग चल रही है, उसी वक्त आप डिसाइड कर सकते हैं कि आपको इन पांच लागों में से किसको जिताना है। ये हम आपको बताना चाहते हैं कि इसके सीक्रेट कोड हैं। जिस पार्टी के पास हैं, वो उस सीक्रेट कोड को इस मशीन के अंदर दाखिल करके अपनी पार्टी को जिता सकता है। ये जो है, ये सीक्रेट कोड है, जो हमने पता किया। इस मशीन के अंदर ये हमारे सीक्रेट कोड्स हैं। अगर आपका आम आदमी पार्टी का 10 बजे तय

कर लिया आपने कि अब आम आदमी पार्टी को जिताना है और जितने भी वोट अब 10 बजे के बाद डलेंगे, वो सीधा झाड़ू पर डलेंगे तो आप ये कोड डालेंगे इसके अदर 123412 अगर आपने तय कर लिया कि सरकार तो बीजपी की है तो कोड भी बीजेपी वालों का पता है और अगर आपने 10 बजे तय कर लिया है कि अब आपको बीजपी को जिताना है और अब जो जो वोट इस बूथ के अंदर डलेगी, बटन चाहे कोई भी दबे, वो वोट सिर्फ और सिर्फ कमल पर जाएगी, तो उसका कोड है 123414 अगर आपको बसपा को जितना है तो अलग कोड है, कांग्रेस को जिताना है, तो अलग कोड है। समाजवादी पार्टी को जितना है, तो अलग कोड है। अब एक वोटर आएगा उस पोलिंग बूथ के अंदर जो अंदर से कार्यकर्ता होगा। जिसका असली काम वोट डालना नहीं, इस मशीन के अंदर एक सीक्रेट कोड डालना होगा। अब मैं दिखाता हूं कि वो वोटर कैसे...जी मैं बिल्कुल बता देता हूं। जी, मैं बिल्कुल ये बात बता देता हूं। क्योंकि हम इस वक्त एक डेमो ये कर रहे हैं कि कैसे किसी भी पार्टी को जिताया जा सकता है या कैसे किसी भी कैंडिडेट को जिताया जा सकता है और हमने अपनी इस मशीन के अंदर ये कहा है कि इन पांचों, पहले जो पहला कैंडिडेट दूसरा कैंडिडेट, तीसरा कैंडिडेट, इसको हमने एक पार्टी का नाम दे दिया तो अगर हम ये मान लें कि हमारे पांच कैंडिडेट हैं वो चाहे किसी भी पार्टी के हों, चाहे दस कैंडिडेट हैं, चाहे किसी भी पार्टी के हों, तो हम दस बजे, आठ बजे जब वो कोड डालेंगे, उस वक्त तय कर सकते हैं कि हम अब किस कैंडिडट को जिता रहे हैं। हो सकता है, कई बार बीजेपी का कैंडिडेट पांचवें नंबर पर हो। किसी और कॉन्स्टिट्यूएंसी में, किसी में तीसरे नंबर पर हो, किसी में सातवें नंबर पर हो। तो आप हर कॉन्स्टिट्यूएंसी के लिए एक अलग कोड डालेंगे। क्योंकि कई बार अखबार वाले, टीवी वाले ये

पूछते हैं जी, अगर बटन के अंदर ही कुछ झालमेल है तो बटन तो अलग अलग होता है। कहीं पर वो पांच नंबर पर होता है, कहीं पर वो तीन नंबर पर होते हैं। तो वहीं है आपका कैंडिडेट, जिसको आप जिताना चाहते हैं। वो कैंडिडेट जिस नंबर पर है, पहले पर है, तो पहले वाला कोड। दूसरे पर है, दूसरे वाला कोड। तीसरा हो, तो तीसरे वाला कोड। तो अब हम ये बताएंगे कि कैसे हम तीसरे कैंडिडेट को जो यहां पर हमारे डेमो के अंदर बीजेपी का कैंडिडेट है, कैसे हम चाहें कि अब जितने भी वोट दस बजे के बाद डालें, वो सारे के सारे बीजेपी पर जाएं। तो एक वोटर आया, उसने अपना नाम दिया, पर्ची दी। उसकी मशीन को एक्टीवेट कराया गया और अब उसने अपना वोट डाला और वोट डालते ही जैसे ही आवाज आई, उसी दौरान उसने सीक्रेट कोड डाल दिया। मैं आपको दिखाऊंगा कि कैसे डालते हैं। अब, जब वोट पड़ता है, तो आपका जब वोटर वोट डालता है, तो उसके चारों तरफ एक गत्ता होता है और उसका हाथ लगभग वहीं पर होता है। लोग सिर्फ आवाज सुनते हैं और सोचते हैं कि पता नहीं इसने क्या किया, क्या नहीं किया। ये वोट देख रहा है अपनी। जिस वक्त वो आवाज हुई, उस गत्ते के पीछे उसने वो सीक्रेट कोड दबा दिया और किसी को कानों कान नहीं पता चला कि कब वो कोड दबाकर वो कमरे से बाहर चला गया। अभी तक हमने दिखाया था कि हमने दो दो वोट सभी कैंडिडेट्स को दी थी, पहले से पांचवें को। ये जो वोटर आया था, इसने बीजेपी को वोट डाली। तीसरे कैंडिडेट्स को दी थी, पहले से पांचवें को। ये जो वोटर आया था, इसने बीजेपी को वोट डाली। तीसरे कैंडिडेट्स को दी थी, पहले से पांचवें को। ये जो वोटर आया था, इसने वीजेपी को वोट डाली। तीसरे कैंडिडेट को वोट डाली और उसके बाद एक सीक्रेट कोड दबा दिया और किसी को कानों का नहीं पता

चला कि कब वो कोड दबाकर वो कमरे से बाहर चला गया। अभी तक हमने दिखाया था कि हमने दो दो वोट सभी कैंडिडेट्स को दी थी, पहले से पांचवें को। ये जो वोटर आया था, इसने बीजेपी को वोट डाली। तीसरे कैंडिडेट को वोट डाली और उसके बाद एक सीक्रेट कोड डाला तो कुल मिला के इस वक्त आम आदमी पार्टी के दो वोट, बसपा के दो वोट, बीजेपी के तीन वोट, कांग्रेस के दो वोट और समाजवादी पार्टी के दो वोट हैं। तो हम लोग ये गिनती भूलें न, मैं इसके ऊपर लिख देता हूं और यहां पर रख देंगे कि ये हमारी वोटिंग थी जो असली में वोटिंग दी गई थी। आम आदमी पार्टी के दो वोट, बीएसपी के दो वोट, बीजेपी के तीन वोट, कांग्रेस के दो वोट और सपा के दो वोट। अब हम ये मान लेते हैं कि दस बजे के बाद, हम अपने उदाहरण के लिए ये मान लेते हैं कि दस बजे के बाद दस वोटर और हैं और दसों वोटरों ने अपनी वोट झाड़ू पर डाली है और हम देखेंगे कि आखिरी में रिजल्ट क्या होगा। उसको मैं आप सबके सामने डेमांस्ट्रेट करूंगा। तो अब जो अगला वोट आया, उसके लिए मशीन खोली गई। उसने ये झाड़ू पर बटन दबाया, एक, फिर मशीन खोली गई झाड़ू का बटन दबाया। कितने हो गये? दो पहले थे, दो ये हो गये। कितने हो गये? चार हो गये। फिर मशीन दबाई। एक और वोट डाला गया। कितने हो गये? पांच हो गये। आम आदमी पार्टी के कितने हो गये? पांच वोट। बीजेपी के कितने थे? तीन। अब फिर बटन दबाया और फिर झाड़ू पर दबाया, बीजेपी के कितने थे? तीन। झाड़ू पर कितने हो गये? छः फिर एक वोटर आया और उसने फिर झाड़ू पर बटन दबाया, बीजेपी के कितने थे? तीन, झाड़ू के कितने हो गये? सात। फिर एक वोटर आया। फिर झाड़ू दबाई। बीजेपी के तीन, झाड़ू के आठ। फिर एक वोटर आया और उसने भी झाड़ू चलाई। कितने हो गये झाड़ू के? नौ। बीजेपी के कितने

हैं? तीन। फिर वोटर आया और उसने भी झाड़ू चलाई। बीजेपी के तीन, झाड़ू के दस। अब मान लेते हैं कि बीजेपी को तीन वोट पड़े, झाड़ू को दस पड़े। बाकी सबको दो-दो पड़े। अब जो असली गिनती होगी, वो ये हो गई कि झाड़ू के दस हो गये, मैं इसको दस बना देता हूं। तो यह तो है, मैं इस पर दिखा दूं। दस, दो, तीन, तीन, दो। अब यह वह मतगणना है, जो असली में वोट डाले गये थे। टैंडर वोट्स थे। जो असलियत में वोट मशीन के अंदर दाखिल कराने की कोशिश की गयी थी। अब जब 23 तारीख को वोटिंग खत्म हो गयी। पोलिंग बूथ, हंसी-खुशी पोलिंग बूथ वाले घर चले गये। लोगों ने कहा कि हम बी. यू. नंबर भी नोट कर लिया, हमने तो सी. यू. नंबर भी नोट कर लिया। हमने तो मशीन बंद करके सील भी लगा दी। उसकी गांठ भी तीन-चार खोल कर देख ली थीं कि बड़ी मजबूत बांधी है। अब इसके अंदर कोई गड़बड़ी नहीं हो सकती। कुछ लोग और सोचते हैं कि यार! मैं मशीन के साथ वहां तक जाऊंगा, स्ट्रांग रूम तक जाऊंगा। कुछ लोग कहिए, मैं स्वयं स्ट्रांग रूम के बाहर पहरा भी दूंगा। आदमी, डरता क्या न करता? वो कहता कि मैं मशीन के बाहर ही बैठ जाऊंगा कि कोई इसके छेड़-छाड़ न करे। मगर छेड़-छाड़ ऑलरेडी इसके अंदर हो चुकी। जो काम होना था, वह हो चुका है इसके अंदर। बाद में इसके ऊपर कितने भी पहरे लगा दो, कितने भी पुलिस लगा दो, कितने भी पुलिस लगा दो, कितनी भी इसके ऊपर सील लगा दो। अब हम देखेंगे कि आखिरी में दो दिनों तक यह मशीनें रखी जाएंगी, एक्जिट पोल के नतीजे आ जायेंगे। एक्जिट पोल कह रहे हैं कि ये वाली पार्टी जीत रही है, तो आपको भी मन में लग जायेगा कि किसने दे दी उनको वोट! मगर टी. वी. वाले कह रहे हैं तो कुछ तो सच होगा इसक अंदर। तो अब जब 26 तारीख को वोटिंग की काउंटिंग शुरू होगी, तो आपके काउंटिंग एजेंट

आयेंगे, आपक कंडीडेट आयेंगे, आपके कंडीडेट आयेंगे, वो दोबारा से अपनी सील को देखेंगे कि सील तो ठीक है और उनके सामने काउंटिंग शुरू होगी। तो मैं आपको वो काउंटिंग दिखाता हूं जो आखिरी दिन काउंटिंग डे वाले दिन, जब बक्सा खुलेगा, तब किसको कितनी वोट मिलेंगी। तो कंडीडेट-वन जो है, वह आम आदमी पार्टी है। टू जो है, वो बी. एस. पी. है। थ्री जो है, वह भारतीय जनता पार्टी है। चार जो है, वो कांग्रेस है। पांच जो है, वह समाजवादी पार्टी। इसको अब ध्यान से दिखाना है आप लोगों को। अब मैं रिजल्ट दबा रहा हूं : टोटल वोट - 19, पहले कंडीडेट को - दो,

दूसरे को - दो, तीसरे को - 11, मुबारक हो, सिरसा जी। चौथे को - दो

पांचवे को - दो, छठे को - जीरो, सातवें को - जीरो, आठवें को - जीरो और नौवें को - जीरो, अब ढोल आ गये। सिरसा जी और जगदीश जी नाच रहे हैं। जीत गये...जीत गये...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सिरसा जी, बैठ जाइये।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष होदय : उन्होंने क्या शब्द बोला? उन्होंने देखिये, सिरसा जी, बैठ जाइए। दो मिनट रूक जाइये जरा प्लीज। बंदना, जी बैठिए। माननीय सदस्य बैठ जायें। बैठिये। बैठिए- बैठिए प्लीज।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : उन्होंने सिर्फ यह बोला, बड़े हंसते हुए बोला कि रिजल्ट आया, सिरसा जी और जगदीश जी नाचने लग गये। हंसते हुए बोला। आपने तो बड़ा गुस्से में बोला। चलिए। आगे चलिए, आगे चलिए, बैठिए। प्लीज बैठिए। देखिये, सिरसा जी, बिल्कुल साइलेंटली बैठें। साइलेंटली सदन चल रहा है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सत्ता पक्ष से, मैं माननीय सदस्यों से प्रार्थना कर रहा हूं। त्यागी जी, आप बैठिए। प्लीज महेंद्र जी, बैठिए। महेंद्र गोयल जी। माननीय सदस्य सभी बैठ जायें। चलिए जो हो गया, उसको खत्म करिए। बैठिए। प्लीज बैठिए जगदीश जी।

सौरभ भारद्वाज : अध्यक्ष जी, तो मैं सब लोगों की जानकारी के लिए यह आपके आगे दो पिक्चर रख रहा हूं कि ये जो मेरे हाथ में इधर है, गुलाबी वाला, वह वो वोट है, जो प्रजातंत्र में आस्था रखने वाला गरीब आदमी, दलित आदमी, नौजवान आदमी, बुजुर्ग आदमी, धूप में महिलाएं, धूप में महिलाएं, धूप में, थोड़ा सा समय बचा के कि खाना बना लिया, चलो जा के वोट डालो, वो बुजुर्ग आदमी जो अपने बेटों को, पोतों को तीन दिन से कह रखा है कि बेटा, मेरे को वोट डालने जाना है। तो कॉलेज से जल्दी आ जाइयो, अगर कॉलेज नहीं जाये तो पीछे से जल्दी आ जाइयो, तेरे दादा जी को वोट डालने जाना है। वो सब लोगों ने वोट डाली थी, इस गुलाबी वाले के अंदर दिख रही है कि आम आदमी पार्टी को दस वोट, बी. एस. पी. को दो वोट, बीजेपी को तीन वोट, कांग्रेस को दो वोट और समाजवादी पार्टी को दो।

अध्यक्ष महोदय, मुझे लगता है कि इसमें कोई पार्टी बुरा नहीं माने, सिर्फ

आसानी करने के लिए हमने दो-दो वोट सभी पार्टी को दिये बाकी ऑरिजिनल के अंदर कुछ भी हो सकता है। ये जो फर्जीवाड़ा है, ये जो रिगिंग हैं, ये जो गड़बड़ी है, उस गड़बड़ी को आपमें से कोई आदमी नहीं पकड़ पाये और न पकड़ पाओगे।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : साइंलेट प्लीज।

सौरभ भारद्वाज : और काउंटिंग हुई, इधर नीला वाला, इधर जो मैंने रखा है, उसके अंदर आया कि आम आदी पार्टी को दो वोट मिले, बी. एस. पी. का दो वोट मिले, बीजेपी को 11 वोट मिले, कांग्रेस को दो वोट मिले, समाजवादी पार्टी को दो वोट मिले। अध्यक्ष जी, ऐसा नहीं है कि इस बात का सिर्फ हम हवा में तीर चला रहे हैं या आम झूठे, मनगढ़ंत आरोप लगा रहे हैं कि भाई, ऐसा हो सकता है, वैसा नहीं। मैंने इलेक्शन कमीशन की बेवसाइट पढ़ी, उनके द्वारा दिये गये कई जवाब मैंने पढ़े और मुझे लगता है कि टीवी के अंदर हम सब लोगों ने देखा कि कैसे भीड़ के अंदर पत्रकारों के सामने, डिस्ट्रिक मजिस्ट्रेट के सामने, अलग-अलग पार्टियों के नुमाइंदों के सामने, जिस मशीन के ऊपर कोई भी बटन दबाया जा रहा है, जो पर्ची निकल रही थी, वह बीजेपी की निकल रही थी। भला हो भगवान का, भला हो हमारा। आशीर्वाद था भगवान का। मुझे लगता है कि उस मशीन के साथ वी.बी. पैट जोड़ा हुआ था तो हमें उसी वक्त पता चल गया कि जो भी बटन दबा रहा है, पर्ची तो बीजेपी की निकल रही है। वोट तो बीजेपी को जा रहा है और आज तक की तारीख में मैंने इलेक्शन कमीशन का पूरे का पूरा इन्क्वारी की फाइंडिंग पढ़ी है। मुझे लगता है कि वह चार पैराग्राफ की फाइंडिंग है, जिसके

बारे में कई टीवी चैनल पर कहा जा रहा था कि नहीं, नहीं इलेक्शन कमीशन ने इन्क्वारी कर ली है। उनकी रिपोर्ट आ गयी है। तब मैं खुद बड़ा उत्सुक था कि उस रिपोर्ट के अंदर देखूंगा कि ऐसा क्या आ गया उस रिपोर्ट के अंदर। अध्यक्ष जी, वह रिपोर्ट अंग्रेजी में है। मुझे नहीं लगता कि वह किसी अंग्रेजी जानने वालों ने लिखी है। उसके अंदर बात को कहां से घूमा के, कहां घुसाया गया है, उसक अंदर कोई सिर-पैर नहीं है उस बात का। उन्होंने उस एक्स्प्लेनेशन के अंदर उलूल-जुलूल बातें लिखी हैं। मतलब शर्म की बात है कि वो एक्सप्लेनेशन हमारे इलेक्शन कमीशन आफ इंडिया की भी इन्क्वारी रिपोर्ट है। रिपोर्ट का कोई सिर-पैर नहीं है। उसके अंदर लिखा हुआ है कि ये जो वीवीपैट मशीन है, कानपुर से लायी गई थी और ये जो दूसरा था, वह वहां से लाया गया था। मगर किसकी वोट कहां जा रही थी, इसका कोई एक्स्प्लेनेशन नहीं है उसके अंदर। धौलपुर का मुझे लगता है कि सारे देशों ने देखा। धौलपुर के अंदर ऐसी 18 मशीनें पकड़ी गयी, जिसके अंदर आप कोई भी बटन दबायें, किसी भी पार्टी का बटन दबाओ, वह बीजेपी पर जा रहा है और यह कह रहे हैं कि इस मशीन के अंदर टेम्परिंग नहीं हो सकती। असल में बात यह है, सच्चाई यह है कि वह मशीन जो थी, पहले एक जगह से आयी थी। जैसे वो जो भिंड वाली मशीन थी, वह यू. पी. वाली मशीन थी और यू. पी. के अंदर हमारा कोई भाई, कोई कार्यकर्ता वह कोड डाल कर गया था। वो कोड तो डाल दिया, उसने हटाया नहीं। वो कोड उसमें डला रह गया और वो मशीन भिंड में पहुंच गई। अब भिंड में पहुंच गई तो ये कोई भी बटन दबाये, उसमें कमल, का वोट आये और ये फंस गये। क्योंकि जो काम वोटिंग वाले दिन दस बजे करना था, वो पहले ही हो रखा था उस मशीन के अंदर। इसीलिये ये क्या कोई भी साइंटिस्ट, मैं चैलेंज कर रहा हू। मैंने

बी. टेक. कंप्यूटर साईंस किया हुआ है, मैं नहीं कहता कि मैं बहुत पढ़ा-लिखा हूं। मगर दस साल अपनी जिंदगी के इन्हीं कामों में दिये। मैंने पूरे दस साल एम्बैडेड सिस्टम की प्रोग्रामिंग में दिये। पूरे विश्व की बड़ी बड़ी मल्टी नेशनल कम्पनीज के अंदर मैंने काम किया है। अमरीका की कंपनी में काम किया है, यू. के. की कंपनी में काम किया है। मैं चैलेंज कर रहा हूं कि कोई भी साईंटिस्ट मुझे ये एक्स्प्लेन कर दे कि भिंड के अंदर क्या हुआ है, कोई साइंईटिस्ट? लोग हावर्ड का मजाक उड़ाते हैं। कहते हैं हार्ड वर्क। मैं कहता हूं हार्ड वर्क वाला भी आ जाये, हावर्ड वाला भी आ जाये। कोई भी आ जाये और वो मुझे एक्सप्लेन कर दे कि कैसे ऐसा हो रहा था मशीन के अंदर कि आप कोई भी बटन दबायें, वोट आपकी बीजेपी में जा रही है और अब मैं भाजपा वालों को ये बताना चाहता हूं कि देखो, तुम्हारे कारण ही हम इंजीनियरिंग छोड़कर इसमें आये थे और देखो मजे की बात ये है कि तुम्हारे कारण ही मैं दोबारा इंजीनियरिंग कर रहा हूं। और सुनो एक बात, मेरे पिताजी मेरे को बार बार कहते थे। मेरे पिताजी कहते थे कि तेरी इंजीनियरिंग का क्या फायदा?

...(व्यवधान)

श्री सौरभ भारद्वाज : मेरे पिताजी कहते थे कि तेरी इंजीनियरिंग का क्या फायदा? खुलवाने तो तेरे को सीवर ही हैं।'' हम सब यही करते हैं। मैं कहता था, ''जी, हमारे सीएम साहब भी इंजीनियर हैं।'' कहते हैं, ''उनका भी क्या फायदा? वो भी यही काम कर रहे हैं।'' आज मुझ लगता है कि बीजेपी ने हमें भी और हमारे इंजीनियर सीएम को भी ये मौका दे दिया कि हम अपनी इंजीनियरिंग का भी इस्तेमाल करें और देखो इनकी डिग्री असली है...

...(व्यवधान)

श्री सौरभ भारद्वाज : अच्छा, अब मैं ये बता रहा हूं कि अब ये मशीन हमें भी टैम्पर करनी आ गई है। तुमने तो पांच साल में सीखी, हमने तीन महीने में सीखी है। अब गुजरात में अगले चुनाव हैं जहां पर गुजरात की मशीन रखी हैं तो वो जगह तीन घंटे के लिए हमें दे दो और सीट तो दूर की बात, एक बूथ पर नहीं जीतोगे।

...(व्यवधान)

श्री सौरभ भारद्वाज : चैलेंज है, चैलेंज। चैलेंज दे रहे हैं राजनीति छोड़ दूंगा मैं। सिर्फ तीन घंटे के लिए तीन घंटे के लिए गुजरात में, जहां इलैक्शन होने हैं, उस मशीन को हम को दे दो। अब दूसरी बात...

...(व्यवधान)

श्री सौरभ भारद्वाज : अच्छा लोग कहते थे जी, ऐसा कैसा हो जायेगा? वो मशीनें तो बड़ी सिक्योरिटी में रखी होती हैं। वहां तो डीएम बैठा होता है। वहां तो पुलिस वाले बैठे होते हैं। वहां तो सीआरपीएफ बैठी होती है। इनको ऐसा लगता है जैसे किसी को लोहा लक्कड़ ले जाना है और वो मशीन को वहीं बनाना है। इसकी सिर्फ मदर बोर्ड चैंज करनी है, सिर्फ मदर बोर्ड। 90 सैकिण्ड लगते हैं एक मदर बोर्ड चैंज करने में। आप सोचो हम गुजरात की कितनी जल्दी चैंज करेंगे, तो इनको पता तो नहीं है।

...(व्यवधान)

श्री सौरभ भारद्वाज : मगर जितनी जानकारी हो जाये, उतना अच्छा है।

...(व्यवधान)

श्री सौरभ भारद्वाज : देखिये साथियो, हम ये बात जो मजाक में कर रहे हैं, वो इसलिये कर रहे हैं क्योंकि कभी कभी चीजों को, थोड़ा माहौल को थोड़ा हल्का भी करना चाहिये। मगर ये बहुत सीरियस बात है। आप सोचो, लोगों ने पता नहीं क्या-क्या कुर्बानियां दे के इस देश को आजादी दिलाई। किसी ने अपनी जान की कुर्बानी दी, किसी ने अपनी पूरी जिंदगी लगा दी और बहुत सारे लोग तो वो थे जो इस आजादी को देख भी नहीं पाये क्योंकि उन्होंने अपनी कुर्बानी पहले ही दे दी थी। सिर्फ हम लोगों के लिए दे दी। दस साल, बीस साल, तीस साल बाद आने वाली पीढ़ी के लिए दे दी कि हमारी जब अगली पीढ़ी आयेगी, उसको ये हक मिलेगा। अब आजादी का क्या है? आजादी का यही तो हक है कि मैं ये तय करूंगा कि मेरी सरकार कौन हो, मैं अपनी सरकार खुद बनाऊंगा। अंग्रेजों के हाथ में वो सरकार नहीं होगी। किसी बड़े आदमी के हाथ में वो सरकार नहीं होगी। मैं ये फैसला करूंगा कि वो सरकार किसके हाथ में होगी और अब जो ये हो रहा है, इसके अंदर तो आप देखिये कि आदमी कितनी भी वोट डाल दे, कहीं भी वोट डाल दे, कोई भी उसको अच्छा लगता हो, कोई भी उसको बुरा लगता हो, आप कुछ भी कर लो, जीतेगा तो वही जिसके पास ये मशीन है और अगर ये मशीनें रहेंगी और अगर इन मशीनों से चुनाव होता रहेगा तो फिर ये कभी नहीं हारेंगी, फिर ये हर बार जीतेंगी। ये बहुत बड़ी बात है! और मैं बताऊं, ये ही नहीं हैं वो, जिनके पास ये मशीन का कोड आयेगा। देखो सॉफ्टवेयर को टैम्पर करना, सॉफ्टवेयर को होगा करना, इसके अंदर एक ही सिद्धांत है; सॉफ्टवेयर को टैम्पर करना, सॉफ्टवेयर को हेक करना, इसके अंदर एक ही सिद्धान्त है; सॉफ्टवेयर बनाने वाले से चतुर होना चाहिये सॉफ्टवयर हेक करने वाला। सिर्फ यही सिद्धांत है

कि जो हैकर है, जिसको उसको हैक करना है, वो उसको बनाने वाले से ज्यादा तेज हो या उसका दिमाग उससे ज्यादा तेज चला गया हो। तो वो उसको हेक कर लेगा। आज तो इन्होंने हैक कर रखी है, कल को कोई और हैक कर सकता है। कल को कोई बाहर विदेश का आदमी हैक कर सकता है और हो सकता है विदशी ताकतों के हाथ में कुछ लोग खेल रहे हैं, ये बहुत बड़ा सवाल है। मैं इस में बहुत ज्यादा चर्चा नहीं करूंगा क्योंकि मेरा यहां पर जो रोल था आज, सिर्फ इसलिये था क्योंकि टैक्नालोजी स्पेशलिस्ट होने के नाते मैं आप सबको ये बात बताऊं, आप सबको ये दिखाऊं कि दुनिया के अंदर ऐसी कोई मशीन नहीं कि लोग कहें कि जी, हमने इसमें साठ सिक्योरिटी फीचर डाले हैं, हमने सौ डाले हैं, दो सौ डाले हैं। ये नहीं, दुनिया के अंदर पूरे विश्व के अंदर कोई ऐसी मशीन नहीं है, ईवीएम मशीन की बात नहीं कर रहा। मैं हर मशीन की बात कर रहा हूं चाहे वा सुपर कम्प्यूटर हो, चाहे वह आईफोन हो, चाहे वो एंड्रॉएड का फोन हो, चाहे वो कोई भी मशीन हो, कोई ऐसी मशीन नहीं है दुनिया के अंदर कि जिसको कोई कह सकता हो कि इसको कोई हैक नही कर सकता, इसको कोई रिग नहीं कर सकता है। किग और रिगिंग किसी भी मशीन की संभव है और यही कारण है कि जिन देशों से हम इसके माइक्रोकंट्रोलर को लाये हैं, उठा के जिन देशों से हमने इस टैक्नोलोजी को उधार लिया है, उन देशों में मैंने काम किया है, वो देश भी इस टैक्नोलोजी को इस्तेमाल नहीं करते। उस देश में भी, जहां टैक्नोलोजी यहां से बहुत आगे हैं और वहां भी हमारे भारतीय काम कर रहे हैं, उसको आगे बढ़ाने में। उस देश में भी आज कागज पर ही वोट डाला जाता है क्योंकि उनको मालूम है कि हमीं ने बनाई है। उन्हें पता है कि इसके अंदर क्या है। और हमने बनाई नहीं है, बिना बात इसकी गारंटी दे रहे हैं!

तो इस चीज के ऊपर मेरी आपसे गुजारिश है कि इस बहस को आप लोग अपनी अपनी कॉन्सिट्टयुएन्सी के अंदर ले जायें, जो टूटे दिल से अपने घर में बैठे हैं, हमारे वोटर, जिनको लग रहा है कि भाई साहब, वोट तो आपको दी थी, पता नहीं कहां गई, उको ये बात बताओ कि ऐसा भी हो रहा है, ऐसा भी होता है और धीर-धीरे आप जानोगे कि ये चीज फैलेगी। जब पहली बार मैच फिक्सिंग का आरोप लगा था, पहली बार क्रिकेट के अंदर मैच फिक्सिंग का आरोप लगा था, उस वक्त क्रिकेट को देश के अंदर धर्म की तरह माना जाता था। कहा जाता था 'cricket is one of the religions' और क्रिकेटरों को देवता माना जाता था। लोग कह ही नहीं सकते थे। अरे! क्रिकेट के अंदर मैच फिक्सिंग! ऐसा कैसे हो सकता है! नहीं जी। होता है, पैसे देकर किसी को कैच दिया जाता है, पैसे देकर कोई कैच छोड़ी जाती है। तो जो मैच फिक्सिंग के अंदर जिनका लेना देना था, वो टीवी पर आते थे और बोलते थे कि ऐसा कैसे हो सकता है। अगर बाल ही छोड़नी होगी तो सारी नहीं छोड़ देंगे! अगर कैच छोड़नी होगी तो सारी ही नहीं छोड़ देंगे! अगर छक्के ही लगवाने होंगे तो हर बाल पर नहीं लगवायेंगे! जैसा हमें कहते हैं कि फिर तो सारे ही नहीं कर लेते? तुम्हें दिल्ली नहीं जितवाते। कैसे जितवा देते? देखो जी, सच के अंदर झूठ मिलाया जायेगा, तभी झूठ नहीं पकड़ा जायेगा। हमेशा से ये रहा है अगर पूरे के पूरे ही मैच फिक्स हो जायेंगे तो जिम्बाबे हर बार ही हारेगा, हिन्दुस्तान हर बार ही जीतेगा, ऐसा नहीं होता है। कई बार किया जाता है, कई बार नहीं किया जाता। मौका देखा जाता है और सच के अंदर हमेशा झूठ को थोड़ा सा मिलाया जाता है ताकि उसका पता ना चले। वही काम हो रहा है। आप सब लोग ठंडे दिमाग से बैठोगे, सोचोगे तो आपको समझ में आयेगा कि बाद में ये पोल खुली कि हां, मैच फिक्सिंग होती है,

क्रिकेटर पैसा लेते हैं। पैस ले के कैच लेते हैं और पैसे ले के ही कैच छोड़ते हैं। धन्यवाद, जयहिंद।

अध्यक्ष महोदय : राजेन्द्र पाल गौतम जी।

श्री राजेन्द्र पाल गौतम : धन्यवाद अध्यक्ष जी, इतने महत्वपूर्ण विषय पर मुझे बोलने का मौका दिया। लेकिन मैं स्तब्ध हूं और सच में इसे देख के मन से दुखी हूं। भारत के संविधान निर्माताओं ने बड़ा सोच समझ के भारत के संविधान की रचना की और उसका आधार प्रजातंत्र है, जहां जनता खुद अपने प्रतिनिधि चुनौती है और जनता अपने लिए अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से शासन करती है लेकिन आज इस ईवीएम के घोटाले को देखकर, पिछले कुछ वर्षों से समय समय पर ईवीएम पर सवाल उठते रहे जब 2009 में दोबारा कांग्रेस जीत गई केंद्र में, तो भारतीय जनता पार्टी के उस वक्त प्रधानमंत्री के के उम्मीदवार थे एल. के. अडवाणी जी, उन्होंने पेटीशन डाली और उस पैटीशन में कोर्ट ने कहा कि इलेक्शन फ्री भी हो और फेयर भी हो क्योंकि जो सरकार पहले से सत्ता में रहती है, उसके क्रियाकलापों के आधार पर जनता इन्तजार करती है अगले चुनाव का और जनता सोचती है कि इस बार इन्होंने इतना गलत किया है, आने दो अगला चुनाव! जनता इन्तजार करती रहती है अगले चुनाव का, आने दो अगला चुनाव! अगले चुनाव में इनको सबक सिखाएंगे लकिन क्या मालूम उस भोली-भाली जनता को कि कुछ लोग भारत के संविधान के साथ, संविधान निर्माताओं की भावनाओं के साथ किस तरीके से खिलवाड़ कर रहे हैं। बहुत शर्मनाक! मैं हतप्रभ हूं! आज जो सौरभ भी ने करके दिखाया ईवीएम में, किस तरीक से घोटाला होता है, क्योंकि एक तरफ लगभग भारत में 29 राज्य हैं तो बाकी के जो 28 राज्य हैं, अगर उनके काम की तुलना

दिल्ली की सरकार के काम से करें तो कोई भी भारत का राज्य दिल्ली सरकार के काम के नजदीक नजर नहीं आता। केवल 'बिजली हाफ, पानी माफ' नहीं किया, लोगों के स्वास्थ्य को, स्वास्थ्य के रूप में एक मजबूत आधार दिया। पांच लाख तक का इलाज का खर्च उठाने की जिम्मेदारी पूरे देश में किसी दूसरे राज्य की सरकार ने नहीं ली, दिल्ली की सरकार ने लिया है। ये पहली बार हुआ। चूंकि किसी भी परिवार की मेन चिन्ता दो होती है; एक चिन्ता ये होती है कि जब उसके बच्चे बड़े होंगे, वो आज महंगाई के दौर में स्कूल में कैसे पढ़ेंगे, अच्छी शिक्षा कैसे लेंगे और दूसरी चिन्ता होती है अगर घर में कोई अचानक गंभीर बीमार हो जाए, तो उसका इलाज कहां से कराएंगे! उसका पैसा कहां से आएगा! जो आम गरीब मजदूर होता है या माध्यम वर्ग का व्यक्ति होता है, वो तो अचानक अगर उसके हार्ट में तीन स्टण्ट डलने वाली बात आ जाए, डॉक्टर कह दे कि इसमें तो साढ़े चार लाख रूपया खर्चा आएगा तो वो परिवार सुनते ही आधा मर जाता है। वो सोचता है कि साढ़े चार लाख रूपया कहां से लाऊ? वो कर्ज लेता है, तो पूरी जिन्दगी उस कर्ज को नहीं उतार पाता। मकान बेचता है तो दुबारा मकान नहीं खरीद पाता। ऐसी दोनों चिन्ताएं स्वास्थ्य की भी, इन दोनों बड़ी चिन्ताओं से भारत के 29 राज्यों में से दिल्ली पहला राज्य है जिसने इन दोनों चिन्ताओं से अपने क्षेत्र की जनता को मुक्ति दी है। ऐसे ऐतिहासिक काम करने के बावजूद दस साल से जो सरकार एमसीडी के अन्दर लगतार दिल्ली की जनता को लूट रही थी, दिल्ली की जनता परेशान थी, कई प्रकार की गंभीर बिमारियां पैदा हुई, हजारों लोगों की जान गई। उसके बावजूद ऐसे ही लोगों की सरकार तीसरी बार फिर बन गई। आज पता लगा कि वो कैसे बन गई! हमारा संदेह और शक बिल्कुल सही साबित हुआ।

मुझे याद है, हम लोग तीन बार दिल्ली इलैक्शन कमीशन से मिले। हमने उनको चिट्ठी लिखी, चिट्ठी के साथ-साथ पर्सनली मिले, हमने उनसे निवेदन किया था, हम अकेले नहीं थे, कम से कम बीस-पच्चीस हमारे विधायकगण थे। लास्ट वाली मीटिंग में माननीय मुख्यमंत्री जी भी थे, उप मुख्यमंत्री जी भी थे और हमने उनसे निवेदन किया कि आप अपनी ईवीएम मशीनों को हमें जांचने का अवसर दें और ये जांचने आपके एक्सपर्ट्स की आंखों के सामने, आपके सीसीटीवी कमरे के सामने होगी लेकिन मुझे इस बात का दु:ख है कि दिल्ली के इलैक्शन कमीशन ने हमें वो मौका नहीं दिया। अगर ये मौका हमें दिया होता तो हम चुनाव से पहले ही ये साबित कर देते कि इन मशीनों में टैम्परिंग हो सकती है, इन मशीनों में गड़बड़ी हो सकती है। लेकिन रिजल्ट वहीं हुआ जो रिजल्ट उन्होंने तय कर रखा था। ये प्रजातंत्र के लिए बेहद खतरनाक दिन है। देश के लोग जानने के इच्छुक थे, बहुत से लोग मजाक उड़ाते थे कि ये अरविंद जी ईवीएम-ईवीएम क्यों चिल्ला रहे हैं! जब 70 में से 67 सीट जीती थी तब तो नहीं बोले। आज पंजाब में हार गए और यहां दिल्ली में हार गए तो ईवीएम का घोटाला बता रहे हैं। लेकिन आज हमारे एक साथी, सम्मानित विधायक सौरभ भारद्वाज जी ने इस पूरे हाउस के सामने और टीवी पर मुझे लगता है पूरे देश के लोग देख रहे होंगे, उन्होंने साबित कर दिया कि ईवीएम में घोटाला किया जा सकता है। तो ऐसे में तो जो तानाशाही सरकार है, फिर तो बार-बार वही जीतती रहेगी! जनता की आकांक्षाओं का क्या होगा! जनता के भरोसे का क्या होगा! जब कोई वोट डालने के लिए जाता है, उसको ये भरासा रहता है कि मेरा वोट उस प्रतिनिधि को जो रहा है जिसको मैं चुनना चाहता हूं, लेकिन इतना बडा धोखा! ये बहुत ही ज्यादा गंभीर मामला है। देश के लिए ये बहुत खतरे की निशानी है क्योंकि जैसा अभी मेरे साथियों

ने कहा कई ऐसे देश हैं जो टेक्निकली हमसे बहुत ज्यादा आगे हैं, उसकी वजह वो देश उन मशीनों का इस्तेमाल नहीं करते हैं। वो बैलट का इस्तेमाल करते हैं। ये सवाल कई बार सामने आता था। हम जब पेपर में पढ़ते थे, हम भी सोचते थे....

अध्यक्ष महोदय : कन्क्लूड करिए गौतम जी, प्लीज।

श्री राजेन्द्र पाल गौतम : बस एक मिनट सर। हम खुद सोचते थे कि जो देश टैक्निकली हमसे पचास साल आगे हैं, आखिर वो देश बैलट का इस्तेमाल क्यों करते हैं? क्या उन्हें ईवीएम मशीन पर भरोसा नहीं है? लेकिन आज ये न केवल साबित हुआ है बल्कि पूरे देश को पता चला कि हां, वो देश जो डेवलप कन्ट्रीज हैं, वो ईवीएम पर भरासा क्यों नहीं करते। उनका संदेह सही है और वो संदेह आज सौरभ जी ने साबित करके दिखाया है। मैं उनको धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने दश की जनता को, दिल्ली की जनता को आज ये एहसास दिला दिया कि 'आम आदमी पार्टी' के संयोजक माननीय अरविंद केजरीवाल जी जो मुद्दा उठा रहे थे, वो मुद्दा गलत नहीं था, वो मुद्दा बिलकुल सही था। लोगों की आकांक्षाओं की, अपेक्षाओं के हिसाब से था और इस पर बहुत गंभीरतापूर्वक विचार होना चाहिए। इस मुद्दे को पूरे देश के सामने लेकर जाना चाहिए, सबको एहसास होना चाहिए। लोग सोचते हैं कि आपकी वोट से नेता चुना जा रहा है, आपकी वोट से ही सरकार बनेगी लेकिन नहीं, वोट से नहीं, अब तो ईवीएम से सरकार बन रही है। जिसकी केंद्र में सरकार वो ईवीएम का इस्तेमाल अपने तरीके से करेगा और वो बार-बार चुना जाएगा।

अध्यक्ष जी, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए धन्यवाद और सौरभ जी ने जो सबके सामने डेमोंस्ट्रेट करके दिखाया, इसके लिए मैं सौरभ जी का धन्यवाद करता हूं, बहुत-बहुत धन्यवाद, शुक्रिया, जयहिंद।

अध्यक्ष महोदय : श्री जगदीश प्रधान जी।

श्री जगदीश प्रधान : धन्यवाद, अध्यक्ष जी।

अभी काफी देर सदन में ईवीएम पर चर्चा हुई। अध्यक्ष जी, जब 67 सीट आपकी आई, 'आम आदमी' की दिल्ली में किसी ने एक बार नहीं कहा कि ईवीएम पर गड़बड़ हुई। मैंने आठ मार्च को इसी हाउस के अन्दर माननीय मुख्यमंत्री जी से आग्रह किया था कि आप जब भी सदन बुलाते हैं और सदन में जब भी चर्चा हुई या तो यहां एमसीडी को गाली देने की बात हुई या मोदी जी के ऊपर चर्चा हुई। मोदी जी को गालियां देना, एमसीडी को गाली देना, इससे आप पतन की ओर जा रहे हो। आप मेरी कार्यवाही देख लें उठाकर के। पंजाब में चुनाव का रिजल्ट आने वाला है, गोवा का आने वाला है और उसके बाद दिल्ली में एमसीडी के चुनाव का रिजल्ट आने वाला है। अध्यक्ष जी, अच्छा होता यदि आप इस सदन के अन्दर पानी पर चर्चा कराते, दिल्ली ट्रैफिक जाम पर चर्चा कराते, स्वास्थ्य को लेकर चर्चा कराते। यहां आज तक कभी भी इस हाउस के अन्दर दिल्ली की किसी प्रॉब्लम को लेकर चर्चा नहीं हुई। जब भी हमारे नेता विपक्ष ने घोटाले पर चर्चा की बात की, आपने उनकी बात टाल दी। मैं भी यदि बोलूंगा तो मुझे भी आप बाहर कर देंगे। मैं आज जो भी कह रहा हूं, बड़े दावे के साथ कह रहा हूं कि आज दिल्ली में 'आपकी सरकार' को ढाई साल होने जा रहे हैं।

मैं अपने क्षेत्र की बात कर रहा हूं कि हफ्ते में एक दिन पानी पीने को मिलता है और भी कई कॉलोनियों के अंदर गंदा पानी, जिसे पीकर बच्चे और आदमी बीमार पड़ जाएं। आप चर्चा कराते पानी पर, अच्छा लगता क्योंकि दिल्ली में पानी की समस्या है।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : दो मिनट प्लीज, मानीय सदस्यों से अनुरोध है ये टीका-टिप्पणी ना करे।

श्री जगदीश प्रधान : अध्यक्ष जी, मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूं कि आज दिल्ली के हालात, चाहे वो पानी की समस्या हो या जितने भी आपके पीडब्ल्यूडी के रोड हैं, उन पर रेहड़ी-पटरी का राज हो, ये सब आपकी देन है, आपकी सरकार की देन है। घंटे-घंटे लोग जाम में फंसे रहते हैं। जहां दस रूपये का पैट्रोल फुंकना चाहिए, वहां एक आदमी का बीस रूपये का पैट्रोल फुक रहा है। फ्लाईओवर बनाने की बात करनी चाहिए, उस पर चर्चा होनी चाहिए। ट्रैफिक जाम क्यों होता है, उस पर चर्चा होनी चाहिए। मैं ज्यादा कुछ न कहकर, इतना ही कह रहा हूं कि यदि आपने सरकार चलाने का रवैया ना बदला तो अगली बार जब चुनाव होंगे तो मेरी बात आज नोट कर लें, आप छः या सात पर निपट जाएंगे, 67 आपके नहीं आने वाले।

अध्यक्ष महोदय : जगदीश जी, अभी दे रहा हूं मैं समय। मैं आपसे बात एक कह रहा हूं आपने बात रखी ईवीएम पर विश्वास करना, ना करना, प्रदर्शन सौरभ जी ने किया, दिखाया, ये विषय हा सकता है। लेकिन आपने कहा कि 67 सीटें आई और उसके बाद बिहार के चुनाव हुए, उसके बाद से कोई चुनाव अन्य दल नहीं जीत पाए। केवल बीजेपी ही जीत पाई। नहीं, एक सैकंड एक सैकंड सिरसा जी, प्लीज। मैं जो एक बात कहना चाह रहा हूं उससे पहले लोकसभा चुनावों में बीजेपी ने पूरी मजोरिटी ली थी, उनको विश्वास नहीं था कि दिल्ली में हमारी स्थिति नहीं बनेगी या बिहार में हमारी स्थिति नहीं बनेगी, बस, मैं इतनी ही टिप्पणी कर रहा हूं। इससे आगे करने का मुझे अधिकार नहीं है।

श्री जगदीश प्रधान : अध्यक्ष जी, मैं सिर्फ एक बात कहना चाह रहा हूं आपका शासन है। आप चार विधान सभा से रिजाईन करा के बैलेट पेपर से चुनाव करा लें, आपके सामने आ जाएगा।

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : चलिए ठीक है, बैठिए। मदन लाल जी, श्री मदन लाल जी। अलका जी प्लीज अलका जी, डायरेक्ट बात ना करे, अल्का जी मेरी बात सुनिए, मुझे सम्बोधित करके बात करें, समय लेके बात करें। डायरेक्ट बात न करें, प्लीज। मदन लाल जी।

श्री मदन लाल : धन्यवाद, अध्यक्ष महोदय आपने इस बहुत बर्निंग टॉपिक पर मुझ बोलने का आज अवसर दिया, इसके साथ ही मैं पिछले वक्ता जो हमारे साथी उनको मैं बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने इस मामले में अपनी राय रखी और हम सबको उन तथ्यों स अवगत कराया जिसके बारे में न केवल हम सब चिंतित हैं बल्कि इस देश के भविष्य के प्रति बहुत ज्यादा जागरूक भी हैं और उनमें भी खासकर सौरभ जी, जो उन्होंने डेमोंस्ट्रेशन के जरिए हमें ये प्रूव करके दिखाया कि वाकई ये जो मशीन्स हैं, ये टैम्पर की जा सकती हैं और इन पिछले इलैक्शनों में जहां-जहां बीजेपी जीती, जहां-जहां उहोंने बेइमानी करनी चाही, वहां-वहां उन्होंने बेईमानी की। इस संदर्भ में मैं आपको बता दूं कि सबसे पहले 2000 में माननीय एल के आडवाणी जी ने इसके बारे में बहुत ज्यादा चर्चा की थी और एक बीजेपी सपोंसर्ड कैम्पेन चलाया गया था जिस पे लोकल और फोरेन एक्सपर्टथे, एनजीओज थे, थिंकटैंक्स थे और उनमें भी एक बड़ा नाम था विवेकानन्द फाउंडेशन का, जो उन्होंने Venerability of India's EVMs को बड़ा ज्यादा हाईलाइर्ट किया उनके टैम्परिंग

फ्रॉड और मैन्युपुलेशन को बड़ा ज्यादा हाईलाईट किया उनके टैम्परिंग फ्रॉड और मैन्युपुलेशन को बड़ा उजागर किया है। मैं धन्यवाद देता हूं सौरभ जी को कि उन्होंने वो असली मशीन जो पिछले इलैक्शनों में यूज हुई, वो नहीं दिखाई, नहीं तो वो तीन लोग जो उसे कैम्पने के पार्ट थे, "Democray at risk! Can we trust our electronic voting machines? जो athored की थी जी वी एम नरसिम्हा राव जी ने और फॉरवर्ड की थी एल के आडवाणी जी ने और उसको एप्रिशिएट किया था चंद्र बाबू नायडू ने और वोटिंग सिस्टम का, डेविड टिल सैंटफोर्ड यूनिवर्सिटी के थे उनमें से बाद में एक तो पुलिस न पकड़ के जेल भेज दिया था कि आपने मशीन चुरा ली, क्योंकि उनको उससे लगता था, उसके बारे में चोरी पकड़ी गई है, पकड़ी जाएगी और लोगों को पता चलेगा। ये डेमोस्ट्रेशन जो उन्होंने किया, शायद वो बच गये, नहीं तो आज सबसे पहले बाहर निकलते ही उनको गिरफ्तार किया जाता कि आपने ऐसी चीज क्यों उजागर कर दी है लोगों के बीच में।

मैं आपको एक और बताऊं। 2013 में हमारी 28 सीटें आई, बीजेपी की 32 आई, कांग्रस की 8 आई, कुछ दिन सरकार चली, वो सरकार हमारे मानीय मुख्यमंत्री जी ने छोड़ दी। उसके बाद बीजेपी मई में प्रचंड बहुमत के साथ जीती और उन्होंने वहां पर मैन्युपलेट किया पहली बार। तो एक सवाल बार-बार उठाते हैं ये लोग कि तब आपकी 67 क्यों आ गई? वो 67 इसलिए आ गई कि उस जीत के बाद किसी को विश्वास नहीं था कि वो आम आदमी पार्टी जो केवल 28 लाई थी, 67 ला सकती है, क्योंकि बीजेपी का प्रचंड बहुमत था। उसके दिमाग में भी नहीं थी कि लोग आम आदमी पार्टी को इतना पसंद करेंगे, इतने वोट दे देंगे। उनके दिमाग में एक वहम था कि मोदी जी पूरे विश्व में जो इतने प्रचंड बहुमत के साथ जीते हैं, उनकी जो सरकार इतने

प्रचंड बहुमत के साथ वहां पार्लियामेंट में विराजमान है, उनहें लगा ही नहीं कि इसमें कोशिश करने की जरूरत है। उन्हें लगा सब कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। जहां कहीं भी ईवीएम मशीन में गडबड़ नहीं हुई, वहीं दूसरी पार्टी जीती और जहां इन्होंने सोच लिया कि अब करनी है, वहां केवल बीजेपी जीती। आज ईवीएम के बारे में जो ये बात करते हैं कि ईवीएम में कुछ नहीं है, इन्हीं के लीडर बार-बार ये कहते रहे जब लोकसभा का 2014 में चुनाव था तो केवल इन्होंने 8 में इन्होंने 543 कॉस्टिट्टयुएंसी में लगाई थी, वहां कोई रिपोर्ट नहीं हुई, वहां काई गलत बात नहीं हुई थी उस समय, क्योंकि उस समय इनके पास ताकत थी, इनके पास सत्ता थी। पंजाब असेम्बली में जो पेपर ट्रेल किया गया था, उसमें केवल 33 इस्तेमाल की थी 170 कॉस्टिट्टयुएंसी में से। और वा 17 में भी 35 परसेंट, सारी की सारी बोगस थी। इनके साथ सत्ता है। ये मशीनों को मैन्यूपुलेट कर सकते हैं। इस इलैक्शन में जिस तरह मशीनें मैन्यूपुलेट हुई हैं, उससे पता चलता है कि ये मशीनें जो दुनिया ने आज कंडम कर दी हैं, चाहे वो नीदरलैंड हो, चाहे आयरलैंड हो, जर्मनी हो, इटली हो, यूनाइटेड स्टेटस हो और सीआईए ने तो यहां तक कहा कि ये बिल्कुल रिगिंग है और इनमें फ्रॉड है। वैन्यूजूएला में आज बंद हैं मशीनें, मैकेडोनिया में हैं, यूक्रेन में हैं और इंग्लैंड और फ्रांस ने कभी ईवीएम यूज ही नहीं की। 2009 का जनरल इलैक्शन था, बीजेपी ने कहा था, "of the party does not perform well, it would be primarily due to the fact that the EVMs could have been tempered with." ये बात कहीं थी माननीय आडवाणी जी ने, वो मानते थे कि अगर चुनाव में बीजेपी नहीं जीती तो इसका केवल कारण ये होगा कि कांग्रेस न ईवीएम में गड़बड़ की है। तो जो बीजेपी खुद एगिलेशन लगाती रही कि ईवीएमस में टैम्परिंग हो सकती है और उसके

बाद लगातार जितने भी लोग आए, चाहे वो आडवाणी जी हों, After defeat of 2009, the then PM candidate Sh. L.K. Advani has raised questions about the credibility of the EVMs and said that the country should go back to the older system of ballot papers. जब ये खुद मानते रहे कि बैलेट पेपर इससे ज्यादा सेफ है, ईवीएम, जैसा आज भारद्वाज जी ने दिखाया, टैम्पर हो सकती है तो फिर क्या कारण था कि इस बार जब इनकी सत्ता है दिल्ली में माननीय केजरीवाल जी के जाने के बाद, माननीय सिसौदिया जी के जाने के बाद, माननीय संजय जी के जाने के बाद, चार बार हम लोग दिल्ली के चुनाव आयुक्त से मिले पर बार-बार उन्होंने 2006 की मशीन को इलैक्शन से हटाने के लिए मना कर दिया और कहा कि ये इलैक्शन इन्हीं से होगा। मैं आपको बता दूं इस सदन के माध्यम से हमें ये जानकारी है कि ईवीएम की जो पहली जनरेशन थी, वो तो 1989 से 2006 के बीच की थी, वो मशीन में पेपर ट्रेल नहीं था। जनरेशन दो आई 2006-2012 की और जनरेशन तीन आई जो मैन्यूफैक्चर 2013 में हुई और उसके बाद अभी लगातार वो प्रैक्टीस में है, पर बार-बार सुप्रीम कोर्ट के, बा-बार हाई कोर्ट के कहने के बाद भी ये क्या कारण था कि केंद्र में सत्ता में बैठी हुई बीजेपी उस मशीन को जो 2006 की थी, उसी को केवल दिल्ली में अपनाने को उतारू थी और वो इसमें कामयाब भी रहे और यही कारण है कि जितने लोग हैं जो बार-बार सवाल करते हैं, हमने तो इनका वोट ही नहीं दिया। हमने तो जिनको वोट दिया, वो बाहर कैसे हैं? हमने तो जिसने बिजली सस्ती की, उस सरकार को वोट दिया था। हमने जिस सरकार ने पानी मुफ्त किया, उसको वोट किया था। जिसने स्कूलों का स्तर सुधारा, उसको वोट दिया था, हमने उस सरकार को, उस सरकार के नुमाइंदों को वोट दिया था जिन्होंने हॉस्पिटल के क्षेत्र में एक

नई क्रान्ति की है और आज सारे अस्पतालों में मुफ्त दवाई, मुफ्त इलाज, मुफ्त आप्रेशन, मुफ्त टैस्ट हो रहे हैं। फिर क्या कारण था? ये कारण अब समझ में आता है। क्योंकि चाहे वो यूपी का चुनाव हो, चाहे वो पंजाब का चुनाव हो, चाहे वो दिल्ली का चुनाव हो, बार-बार ईवीएम में घोटाले होते रहे और उसी की वजह से ये बार-बार कोई भी पार्टी आगे नहीं आई।

अध्यक्ष महोदय : कन्क्लूड करिए, मदन जी, कन्क्लूड करिए।

श्री मदन लाल : झूठी रिपोर्ट में सैन्टर को कहा बहुजन समाजवादी पार्टी की पैटिशन पर कि उन्होंने कहा कि Supreme Court directed to introduce paper trail in an electonic voting machines. A bench like Justice J. Jelumserum used notice to the Centre after the senior advocate P. Chidambaram submitted that EVMs remained highly vulnerable and susceptible to hacking. What one man can invent another man can hack it.

अध्यक्ष महोदय, इन बातों से, सबसे यह तय है, ये प्रूव्ड है कि ईवीएम्स को हैक किया जा सकता था। ईवीएम इन इलैक्शन्स में हैक की गई और उसी की वजह से एकतरफा रिजल्ट आया और आज का जो डैमोन्ट्रेशन था जो हमने सबने अपनी आंखो से देखा है, उससे पक्का प्रूव हो गया है कि इलैक्ट्रोनिक जितनी भी मशीन्स हैं, वो हैक हुई हैं। इसलिए मैं सदन के माध्यम से आपने रिक्वेस्ट करता हूं कि हम इलैक्शन कमीशन को एक प्रस्ताव पारित करके दें कि वो जो मशीन इस इलैक्शन में यूज हुई है, उनको हमें इन्सपैक्शन करने के लिए दें। कोर्ट के सामने दें, किसी एक्सपर्ट कमिटी के सामने दें। जिससे उनकी बेईमानी जो हुई, का पता चल सके। इन्हीं शब्दों के साथ आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : अब आधे घंटे के लिए चाय ब्रेक, साढ़े चार बजे हम मिलेंगे।

(सदन की कार्यवाही आधे घंटे चायकाल के लिए स्थगित की गई।)

सदन अपराह्न 4.30 बजे पुनः समवेत हुआ।

माननीय अध्यक्ष महोदय **(श्री रामनिवास गोयल)** *पीठासीन हुए।*

अध्यक्ष महोदय : बंदना कुमारी जी।

श्रीमती बंदना कुमारी : अध्यक्ष जी, धन्यवाद।

अध्यक्ष जी, अभी जो ईवीएम की चर्चा और भारद्वाज भाई ने दिखाई हमें ईवीएम के बारे में, इस बात की चर्चा क्षेत्र की गली गली में थी और हम लोग, मैंने मुख्यमंत्री जी से भी बताया था। पहले जो लोगों की चिंता थी ईवीएम और सब लोग पूछते थे कि हम वोट तो आपको देंगे, ये वोट जाएगा कहां, इसकी कौन गारंटी लेता है? लोगों में ये डर था, ये चिंता थी। लोग बार-बार बताते थे इस चीज को। पंजाब से हमारा, आजादपुर मंडी हमारे कंस्टीट्यूएंसी से एकदम बगल में है। वहां पर हर रोज लेबर, व्यापारी पंजाब से आते थे और बार-बार ये ही कहते थे पंजाब में हमारे सब झाड़ू को वोट दिया है और इस बार पंजाब में पूरे बहुमत के साथ हमारी सरकार बनेगी। सब लोग कहते थे, कोई हमें जानते नहीं थे, न पहचानते थे कि ये कौन हैं। फिर भी आ के कहते थे कि इस बार पंजाब में तो आपकी सरकार बनेगी। तो इस तरह की चिंता आज के डेमोस्ट्रेशन से पता चल गया जो सच में ये चिंता जनता को थी। कहीं न कहीं से उनको भनक मिलती होगी, कहीं न कहीं

से उनको पता होता होगा। जिसकी वजह से आज दिल्ली की एक एक जनता जब हमारी आफिस में आती है, एक मातम का माहौल ले के आती है, आती है और हमारी आफिस में आती है, एक मातम का माहौल ले के आती है, आती है और हमारी चेयर पर दो मिनट बैठती है, ''ये क्या हो गया! बहुत दु:ख होता है हमने वो वोट आप ही को दिया था। अब हर एक एक जनता की चिंता है। जहां आज जितने भी हमारे क्षेत्र के निगम प्रत्याशी थे उनके साथ चार लोग संग नहीं घूमते थे कभी, कभी हमें एक भी वीडियो फुटेज वो दिखा दें जो उनके साथ पांच पचास लोग घूमते थे। एक भी ऐसी रैली बता दें जिसके साथ चार लोग संग नहीं घूमते थे कभी, कभी हमें एक भी वीडियो फुटेज वो दिखा दें जो उनके साथ पांच पचास लोग घूमते थे। एक भी ऐसी रैली बता दें जिसके साथ उनके पचास लोग घूमते थे। उनको तो जब टिकट मिली तो पांच दिन, दस दिन तो उनको समझने मे लगा। क्योंकि इस बार नये लोगों को उन्होंने टिकट दिया था, सारे विरोध कर रहे थे, उनकी अपनी पार्टी के लोग विरोध कर करके बांसुरी चुनाव चिन्ह से उनकी अपनी ही पार्टी के लोग लड़े थे और उनके खिलाफ लड़े थे। फिर भी इतने भारी बहुमत से जीत हुई। तो इसके लिए आज हम सबको बहुत चिंता लगती है और वो हमारी चिंता नहीं, ये लोकतंत्र की हत्या है। आज अपने क्षेत्र की जनता का दर्द मैं बयां कर रही हूं यहां पर। जो हम सबके लिए दस साल से लगातार पीड़ित थी। हमारे क्षेत्र की जनता एमसीडी के भाजपा के पार्षदों से पीड़ित है और फिर वो उनको मौका दे दी। आज जनता ये पांच साल कैसे निकालेगी, इस बात को ले के चिंतित है। कहीं भी एक छोटी सी स्वागत समारोह का हमें फोटो दिखा दें आज उन पार्षदों का जिसका चेहरा नहीं देखना चाहती जनता। आज उनको झेलना पड़ेगा, उनको और जनता को। हर बात में कहते

हैं, ''हम तो कुछ नही जानते, हमें तो काम चाहिए।'' काम के लिए और विपक्ष के जो कार्यकर्ता होते थे भाजपा के कार्यकर्ता, कांग्रेस के कार्यकर्ता, ये भी कहते थे कि आप सबने जो काम किया, हम काम का वोट देंगे और सचमुच हम सब विधायकों ने आज मुझे लगता है जो ढाई साल में, ढाई दिन की भी कहीं ऐसा नहीं सोचा होगा जो हम विधायक हैं; हम सब विधायक है, कार्यकर्ताओं की तरह अपने क्षेत्र में काम किया है, जनता के बीच में गए हैं, एक-एक बात रखी हैं। एक-एक दुख-दर्द में शामिल हुए हैं। उनके बर्थडे में, उनके मैरिज एनवर्सिरी, उनके डेथ में, उनकी परिवार के सदस्य बनके हम विधायक रहे हैं और आज वो जनता इतनी त्रस्त है, इतनी दुखी है। उन दुखी बातों को लेके, मतलब किस तरह का माहौल बना हुआ है, आप क्षेत्र में एक दिन ऐस विजिट कर लीजिए तो लगेगा मातम का माहौल बना हुआ है। जब कि कोई जीतता है तो उसके लिए स्वागत समारोह, आज भाजपा प्रत्याशियों की ये हो गई है कि, जो पार्षद बने हैं, ''हमारा स्वागत करो जी। आप अपने यहां बुलाओ, स्वागत करो।'' मुझे याद है जब हम सब जीते थे तो हमारी लाईन लग गयी थी स्वागत करने के लिए और इतनी बड़ी लाईन लगी थी तीन किलोमीटर की लाईन लगी थी जब हम जीत के आये थे और लोगों ने स्वागत किया था। लोग अपने ब्लॉक में, मेरा स्वागत नहीं करोगे?'' ये स्थिति हो गयी है। आज उनको कोई पसन्द नहीं कर रहा है और मैं ये भी कह रही हूं कि कोई ऐसा ब्लॉक हो, आज चालीस-चालीस ब्लॉक एक वार्ड में हैं, कोई ऐसा ब्लाक वो गये नहीं। कहीं उन्होंने मीटिंग नहीं की। कहीं उन्होंने रैली नहीं की। क्षेत्र की जनता उनको आज भी नहीं पहचानती हैं, पार्षद बनने के बावजूद। किसी बाजार में वो मिल जायें तो कोई शायद नमस्ते भी न करे। आज ये स्थिति है। इन सब चीजों को आज सौरभ भाई ने जो काम किया

और हम सबकी आंखें, नहीं, हम सबकी आंखें तो खुली थीं। ये जनता की आंखें खोलना बहुत जरूरी था और मैं इस सदन के माध्यम से सौरभ भाई को तहे दिल से धन्यवाद देती हूं जो आज आप जनता जो दुखी थी, वो जीते या हारे लेकिन जनता की आज जीत हुई है। इस ईवीएम के माध्यम से आज जनता की जीत हुई है। जो जनता, जितने भी भाजपा के साथी थे, वो पैसा देते थे, कार्यकर्ता तब जाते थे लेकिन हमारे कार्यकर्ताओं ने दिन-रात मेहनत किया। एक रूपया किसी कार्यकर्ता ने, भूखे रहके, प्यासे रहके जैसे भी वो काम करते थे और हमारे कन्डीडेट दो-ढाई महीना पहले सलेक्ट हो चुके थे।

अध्यक्ष महोदय : कन्क्लूड करिये बन्दना जी।

बन्दना कुमारी : वो ढाई-तीन महीने से मेहनत कर रहे थे लेकिन आज ये ईवीएम की जो जीत हुई है। आज जनता की हार हुई है। लोकतंत्र की हार हुई है और इसके लिए सख्त से सख्त क्या कार्रवाई हो सकती है, मैं आज चुनाव आयोग के अधिकारियों को कहती हूं कि इस पर संज्ञान लें और इसको जनता के बीच में रखें जो कि है क्या। सच्चाई क्या है, क्योंकि सच्चाई को सामने आने की जरूरत है। मैं आपका फिर से तहेदिल से धन्यवाद करती हूं जो आज आपने मुझे इस ज्वलंत मुद्दे पर बोलने का मौका दिया। धन्यवाद अध्यक्ष जी।

अध्यक्ष महोदय : श्री मनजिंदर सिंह सिरसा जी।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : धन्यवाद अध्यक्ष महोदय। मुद्दा तो कुछ आज अध्यक्ष महोदय और होना चाहिए था। दिल्ली के अन्दर जो आम आदमी पार्टी की बड़ी हार हुई। जिन कारणों से हुई। मुझे लगता है कि आज विधान सभा

में अगर उन पर चर्चा होती और उन कामों को ठीक करने की बात होती तो दिल्ली के लोगों के लिए भले की बात होती। दिल्ली के लोग, जैसे मेरे से पहले प्रधान जी ने बताया कि त्राहि-त्राहि हो रही दिल्ली के लोगों में। लोग रो रहे हैं। दिल्ली में निगम का चुनाव हुआ। उससे पहले एक बाई इलेक्शन हुआ जिसके कारण मुझे सदन में आने का मौका मिला। अध्यक्ष महोदय, मैं अपने सारे मैम्बर सॉहबानों को याद कराना चाहता हूं इस हाउस में। वो इलेक्शन वीवीपैट पर हुई और वीवीपैट पर जो मतदाता जिसको वोट डालता है, उसको अपनी स्क्रीन पर ये पता चलता है कि वह वोट उस कन्डीडेट को गयी या नहीं गयी। जो वो चुनाव हुआ तो कोई भी आम आदमी पार्टी का लीडर ये कहने में असमर्थ था कि आज टैम्पर्ड है ईवीएम। क्यों? क्योंकि जब जमानत जब्त हुई और आम आदमी पार्टी के कन्डीडेट जो वहां पर एमएलए बनकर गये थे, उसके बाद उसी विधान सभा में उनकी जमानत जब्त हुई। जमानत इसलिए जब्त हुई कि जो दिल्ली के लोगों के साथ झूठे वादे किये गये थे, दिल्ली के लोगों के साथ झूठे वादे किये गये थे, दिल्ली के लोगों को कहा गया था हम पन्द्रह लाख वेब कैमरे लगाकर देंगे। सीसीटीवी कैमरे, दिल्ली के लोग आज पूछते हैं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : बन्दना जी। प्लीज, प्लीज।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : हम साढ़े तीन घंटा सुन रहे हैं। हम बोलेंगे। सच इतना कड़वा क्यों है बोलने के लिए?

अध्यक्ष महोदय : नहीं-नहीं, दो मिनट अलका जी। प्लीज।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : हम भी आपको इन्टरप्ट कर सकते हैं। लेकिन सच्चाई सुनने का जिगरा रखना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : अभी सोमनाथ जी जवाब देंगे। प्लीज।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : हम जल्दी से कूद नहीं पड़ते, भड़क नहीं जाते। पन्द्रह लाख कैमरे, सी. सी. टी. वी. कैमरे लगाने का झूठ बोला और कब बोला कहां बोला, वो महात्मा गांधी जी को मैं देख रहा था। उनकी समाधि के स्थान पर जाकर यह बोला पन्द्रह लाख कैमरे लगायेंगे। आज कहां हैं वो पन्द्रह लाख कैमरे?

अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से मुख्यमंत्री जी को कहना चाहता हूं कि दिल्ली के आठ लाख लोग जिनको आपने रोजगार का वादा किया था, अभी तक आप आठ सौ वैकेन्सी नहीं भर पाये। आज आठ लाख मुंह उठाकर देख रहे हैं, कब हमें नौकरी मिलेगी। वो आठ लाख लोगों ने आपको हराने का काम किया है। जिन साढ़े पांच सौ स्कूल बनाने की आपने बात की और आप तीन स्कूल भी अब तक नहीं बना पाये, उन लोगों ने आपको हराने का काम किया। जो समोसे आप करोड़-करोड़ रूपये के खाते रहे, कहते थे, ''आम आदमी पार्टी है।'' करोड़-करोड़ रूपये के समोसे खा गये तो दिल्ली के लोगों ने जवाब दिया कि करोड़ रूपये के समोसे खाने वाले की अब जमानत जब्त होगी। जब आप अट्ठारह-अट्ठारह हजार की प्लेट में खाना खाओगे तो फिर ये रिजल्ट आपको देखना पड़ेगा। जब आप देश के अन्दर करप्शन की सबसे बड़ी एक अल्ट्रनेटिव पार्टी के रूप में आने की बात करोगे, सुना नहीं जा रहा है।

अध्यक्ष महोदय : अनिल जी, बाजपेयी जी, प्लीज।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : सुनने के लए जिगरा चाहिए। सच्चाई कड़वी है। ये बड़े-बड़े अखबारों में लिखा गया है। लेकिन जब आज आप को सुनना पड़ रहा है तो सब लोग बेचैन कैसे हैं!

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : भई मेरी माननीय सदस्यों से प्रार्थना है, जरा प्लीज।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : जो लोग यहां पर सरकार, जनलोकपाल बिल के नाम पर छोड़कर भागकर गये थे। हम उस दिन इस विधान सभा के अन्दर थे। अध्यक्ष महोदय, जनलोकपाल के नाम पर सरकार छोड़कर भागे थे, वो लोग जब जनलोकपाल बनाने की बात आयी तो मुकर गये। लोगों ने यही जवाब दिया है। आपकी जमानत जब्त हो गयी है। यही जवाब दिया है आपको दिल्ली के लोगों ने। दिल्ली के लोगों ने आपका जवाब दिया है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अलका जी प्लीज। प्लीज। आप प्लीज, वो जवाब देंगे न। अभी सोमनाथ जी ने भी बोलना है, जवाब देंगे। भई वो जवाब देंगे न अलका जी। जवाब देंगे न सदस्य। अलका जी, प्लीज अभी जवाब देंगे न वो। दो मिनट रूक जाइए। नहीं त्यागी जी प्लीज। ऋतुराज जी प्लीज।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : अध्यक्ष जी, क्या विधान सभा में ये कहना कि हम पढ़े-लिखे कम हैं। मुझे नहीं पता, इनके पास मेरा कौन सा सर्टिफिकेट है।

अध्यक्ष महोदय : आप बोलिये, आप बोलिये।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : लेकिन ये घबराये हुए हैं। जब ट्रांसपार्ट का घोटाला हुआ। चार-चार मंत्री आपके जेलों में हैं। क्या करते हैं? क्या करते हैं, दिल्ली के लोगों ने और देश के लोगों ने जिनको आपने मंत्री बनाया, उन्होंने क्या-क्या गुल खिलाये और आज आपके मंत्री जो गुल खिला रहे हैं। दो करोड़ रूपया यहीं सदन में बैठे हुए मेम्बर बता रहे हैं। दो करोड़ रूपया अरविंद केजरीवाल जी लेते हैं। देने वाले देते हैं और जब ये लोग इस तरह से घोटाले करेंगे। मैं अध्यक्ष महोदय आपको ये बताना चाहता हूं कि देश के लोग, आज दिल्ली के लोगों से पूछ रहे हैं की इवीएम खराब नहीं थी, जिनकी नीयत खराब थी, आज वो कुर्सी छोड़कर भाग क्यों नहीं रहे हैं। जो लोग ये कहते थे कि हम दिल्ली के अंदर लोकपाल बिल लेके आयेंगे, एक ऐसा मजबूत बिल लेके आयेंगे। मुझे याद है सरदेसाइ ने जो परसों ट्वीट डाला, वो अगर लोकपाल बिल होता तो केजरीवाल और हमारे दोनों मंत्री भी अन्दर होते और देने वाले को बीस लाख रूपये मिला होता। अगर आज वो बिल पास हुआ होता तो और हमें आज इस बात का अफसोस है। विधान सभा के अन्दर इस ट्वीट पर गरिमा को कैसे ठेस पहुंचायी जा रही है, जिन लोगों ने दो-दो करोड़ रूपया लिया, वो इस विधान सभा में बैठे हैं। जिन लोगों में देने वाले भी बैठे हैं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : चलिए, कन्क्लूडक करिये।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : हम ढाई घंटे से सुन रहे हैं, अध्यक्ष महोदय।

अध्यक्ष महोदय : त्यागी जी प्लीज। चलिए।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : अध्यक्ष महोदय, सुना नहीं जा रहा है। क्योंकि इनको आदत भी नहीं सुनने की।

अध्यक्ष महोदय : बोलिए, बोलिए। मैं समझ गया।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कोई बात नहीं। त्यागी जी प्लीज। अब माननीय सदस्य। भई, त्यागी जी प्लीज। ये उचित नहीं लग रहा है। थोड़ा सा अब शान्ति से बैठिए। चलिए, अब थोड़ा सा शान्त हो जाइए प्लीज। अब कोई भी नहीं बोलेगा।

श्री मनजिंर सिंह सिरसा : बहुत दर्द होता है जब सच्चाई...

....(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : चलिए, अब सिरसा जी थोड़ा सा, मैं आपसे भी प्रार्थना कर रहा हूं थोड़ा सा सब्जेक्ट पर रहिये। हां, सब्जेक्ट में रहिये आप। चलिए, चलिए कन्क्लूड करिये। करिये कन्क्लूड। भई ऋतुराज जी ठीक नहीं है ये तरीका। प्लीज। कन्क्लूड करिये प्लीज।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : जो लोग एक विकल्प की राजनीति की बात करते थे। आज ईवीएम की बात हुई। यह बताना भूल गये कि पंजाब के अंदर, जब आप शोर करने वाले को अपना कन्वीनर बनाओगे तो लोग आपकी जमानत जब्त करायेंगे। जिस भगत सिंह के नाम की पगड़ी बांधकर तो लोग नशे में घिरे रहते हैं, सड़कों के ऊपर, जिन लोगों को नशे के अंदर स्टेजों के ऊपर औरतों के साथ बदतमीजी करते हैं और किस करते हुए मीडिया ने उछाला मीडिया ने बताया किस तरह से इनके चुने हुए नुमाइंदे लोक सभा के अंदर

शराब पीकर जाते हैं। उन लागों को जब आप बनाओगे तो फिर आपकी जमानत भी जब्त कराएंगे।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : सिरसा जी, आप सब्जेक्ट से बाहर जा रहे हैं।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : मैंने किसी का नाम नहीं लिया।

अध्यक्ष महोदय : हम सब्जेक्ट से बाहर जा रहे हैं प्लीज। मेरी प्रार्थना है सब्जेक्ट से बाहर न जायें। सब्जेक्ट पर रहें। पंजाब की चर्चा हम यहां नहीं कर रहे हैं।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : अध्यक्ष जी, मैं ईवीएम पर बात कर रहा हूं, मैं बता रहा हूं कि इनकी जमानत क्यों जब्त हुई।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप ईवीएम की चर्चा पर रहें प्लीज।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : मैं उसी पर आ रहा हूं। मैं यही बता रहा हूं कि इनकी जमानत...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : फिर वो उत्तर देंगे किसी और का तो ठीक नहीं रहेगा। आप कन्क्लूड कीजिए।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : अगर शराब पीकर आयेंगे तो जमानत तो ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप कन्क्लूड कीजिए।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : अध्यक्ष जी, मैं आज आपके माध्यम से मुख्यमंत्री जी को बताना चाहता हूं कि अभी इनके एक एमएलए ने मुझे जानकारी दी कि किस तरह से xxxx[1]

अध्यक्ष महोदय : सिरसा जी, मैं प्रार्थना कर रहा हूं कि अगर आप इन चर्चाओं पर जाओगे तो सुन नहीं पाओगे। प्लीज। इसको आप रोकिये प्लीज। मैं इसको अलाउ नहीं करूंगा। यह डिलिट कर दीजिए।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : xxxx

अध्यक्ष महोदय : ये सारी चीजें डिलिट कर दीजिए। एक सेकंड, आप दो मिनट बैठ जाइये। इसको डिलिट करिये जरा प्लीज। सिरसा जी, एक सेकेंड। प्रसन्ना जी, इसको डिलिट कराइये। सिरसा जी, मेरी बात सुनिये। चर्चा को, जो विषय है, उस तक सीमित रखिये। अच्छे सदस्य की यह मंशा रहती है।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : अध्यक्ष जी, मैं उसी पर हूं। मैं तो बता रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय : फिर उधर से सदस्य बोलेंगे। आप इसको भ्रष्टाचार से जोड़ेंगे, कहीं ओर से जोड़ेंगे तो उधर के सदस्य बोलेंगे। इसको आप कन्क्लूड करिये।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : अध्यक्ष जी, मैं तो यह बता रहा हूं कि...

---

[1] xxx चिह्नित अंश अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार सदन की कार्यवाही से निकाला गया।

...(व्यवधान)

श्री जगदीप सिंह : अध्यक्ष जी, इन्हीं के पार्टी के...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अभी उनकी बारी आने वाली है ना। आप राखी जी को दीजिए। आपको जो कुछ बताना है, आप राखी जी को बताइये ना।

श्री जगदीप सिंह : इन्हीं की पार्टी के सदस्य ने बताया...

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : राखी जी को बताइये ना, उनका समय आने वाला है बोलने का। आप उनको बताइये।

श्री कैलाश गहलौत : अध्यक्ष जी, मुझे एक चीज समझ में नहीं आती। जब हम बोलते हैं तो आप हमें चुप करा देते हैं।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिये। सिरसा जी, आप कन्क्लूड कीजिए। मैं अलाउ नहीं कर रहा हूं। प्लीज कन्क्लूड करिये। त्यागी जी, ऐसे नहीं। आप कन्क्लूड कीजिए प्लीज। फिर माहौल खराब होता है सारे सदन का।

श्री मनजिंदर सिंह सिरसा : ईवीएम पर आपने कहा, जो आपने यहां पर अभी मॉडल दिखाया, हमें खुशी होती, 12 तारीख को इलैक्शन कमीशन ने बुलाया है, जो आईटी एक्सपर्ट बता रहे हैं हमारे मुख्यमंत्री जी को भी और भारद्वाज जी भी, हमें खुशी होगी, कोड तो इनको अब मिल चुके हैं। हमें

बड़ी तसल्ली होगी जब ये कोड लेकर 12 तारीख को इलैक्शन कमीशन के पास जायेंगे।

अध्यक्ष जी, मैं आपको बताना चाहता हूं साढ़े सात लाख ईवीएम एक लोक सभा चुनाव कराती है। अभी मेरे दोस्त द्वारा कहा गया कि मदरबोर्ड बदल दिए जाते हें। साढ़े सात लाख मदबोर्ड बदलने का और ईवीएम में खाली साढ़े सात लाख बूथ हैं। स्टेंडबाइ ईवीएम भी हैं और अगर हम दस परसेंट स्टेंडबाइ ईवीएम लगायें तो लगभग साढ़े आठ लाख ईवीएम बनते हैं। देश के अंदर साढ़े आठ लाख ईवीएम बार्डो को बदलना, सर, 12 तारीख को अगर आप बता सकते हैं, आपने ही कहा, मैंने तो कहा नहीं, उन्होंने कहा कि ईवीएम का मदरबोर्ड बदल दिया जाता है, मैंने तो कहा नहीं। इन्होंने बताया अभी यहां पर और आपने डिस्प्ले में भी दिया। मेरा यह कहना है कि साढ़े सात लाख बूथ हों देश के अंदर, साढ़े आठ से पौने नौ लाख मशीनें लगती हैं, क्या इतने मदरबोर्ड बदलते हुए पूरे देश में इनको कोई देखेगा नहीं, एक। दूसरा, जब आपके पास पासवर्ड थे आपको पासवर्ड भी तीन महीने पहले मिले, अभी आपने कहा कि हमें तीन महीने पहले पता चला। पासवर्ड भी आपके पास हैं, जिताने का फार्मूला भी आपके पास है, ईवीएम मशीन पर वोट डालने का सब का राइट है, जैसे बाकियों का राइट है, वैसे आम आदमी पार्टी का भी राइट है, लेकिन फिर भी आपकी ईवीएम में लोगों की वोट नहीं मिल रही। एक बात अंत में, मैं कहकर, अपनी बात को समाप्त करूंगा। 12 तारीख को इलैक्शन कमीशन ने जो बुलाया हुआ है, हमें बड़ी प्रसन्नता होगी, हम भी इनके साथ जाने के लिए तैयार हैं वो पासवर्ड भी उनके पास है। वो लेकर जायें, वहां उसको दबायें और इसी तरह वोटें निकाल कर बाहर लेकर आयें। हमें इस बात की खुशी होगी।

अंत में मैं, अध्यक्ष महोदय, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, पर मेरी बात को चाहे आपने कटवा दिया, पर मैं यह जरूर चाहूंगा कि हमारे मुख्यमंत्री जी इस पर जरूर चर्चा करें। सात करोड़ रूपया दिया गया, अक्टूबर के महीने में दिया गया और पंजाब इलैक्शन के लिए दिया गया। इस पर जरूर चर्चा करें, क्यूं दिया गया, किसे लिया, इस पर चर्चा होनी चाहिए। बहुत-बहुत धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्री सोमनाथ भारती जी।

श्री सोमनाथ भारती : अध्यक्ष महोदय, आपका बहुत-बहुत धयवाद कि आपने मुझे इस टॉपिक पर बोलने का मौका दिया। अभी सिरसा जी ने बहुत सारे कारण गिनाए कि हम क्यों चुनाव हार गये। लेकिन जिस तरह से सदन के अंदर हम सारे साथियों का खून खौला, यह देखकर कि किस तरह से एक ईवीएम मशीन को टेंपर किया जा सकता है, बड़े नॉर्मल तरीके से। मैं धन्यवाद करता हूं सौरभ भारद्वाज की का, हमारे सम्मानित साथी हैं, बड़े बेहतरीन तरीके से उन्होंने अपनी बात रखी और पूरे देश को समझाया कि किस तरह से ईवीएम के जरिये सबसे बड़ा फ्रॉड हुआ। In my understanding अध्यक्ष महोदय, This is the biggest fraud on democracy, biggest fraud! मुझे लगता है कि इससे बड़ा फ्रॉड हिंदुस्तान के अंदर कभी हुआ ही नहीं और आज शर्म आनी चाहिए। उन सभी लोगों को जिन्होंने ईवीएम के नाम पर हमें गालियां दीं। मैं धन्यवाद करता हूं हमारे मुख्यमंत्री महोदय का कि उन्होंने बड़े पेशंस से और बड़े धैर्य से इस बात को हम सब के सामने कहते रहे, हममें से कुछ साथियों ने विश्वास नहीं किया। लेकिन आज उनकी पेशंस का और उनके धैर्य का जिस तरह से डेमोंस्ट्रेशन आज यहां हुआ, मुझे लगता है कि जो अरविंद

जी का खास एक, वो बड़े जिद्दी हैं, अगर पकड़ लिया तो जब तक वो चीज सिद्ध नहीं हो जाएगी, छोड़ेंगे नहीं। मैं धन्यवाद करता हूं उनका कि उन्होंने अपनी जिद्द कायम रखी और उस कायम जिद्द के कारण आज पूरे देश के साथ-साथ हममें से भी कुछ साथियों को इस बात की पूरी, एक तरह से कह सकते हैं कि विश्वास पैदा हुआ अंदर से कि हां, यह तो सम्भव है, यह तो हो गया, करके दिखाया और कुछ मिनटों में करके दिखाया, अध्यक्ष महोदय। सब ने कहा कि इसमें वाई-फाई नहीं है, ब्लू टूथ नहीं है। अरे भाई, वाईफाई, ब्लू टूथ की तो जरूरत ही नहीं है। एक वोटर जाता है चार डिजिट का कोड है, अपना वोट डाला और कोड दबा दिया और काम खत्म हो गया। अध्यक्ष महोदय, जो कुछ भी आज इस हाउस के अंदर डेमोंस्ट्रेशन हुआ, मुझ लगता है कि आज डेमोक्रेसी के लिए एक बहुत अच्छा दिन है, बात निकल के आई और यह बात निकल कर आती ही आम आदमी पार्टी के द्वारा, यह बात और कोई पार्टी नहीं निकाल सकती थी अध्यक्ष महोदय, यह बहुत बड़ी बात है। आज इस बात के लिए मैं अपने माननीय केजरीवाल साहब को धन्यवाद करता हूं, उन्होंने जिद्द रखी और आम आदमी पार्टी ने सिद्ध करके दिखा दिया पूरे हिंदुस्तान को और पूरे हिन्दुस्तान के वोटरों को कि ईवीएम के नाम पर इतना बड़ा फ्रॉड डेमोक्रेसी में हो रहा है। इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवादद करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, मुझे याद हैं वो मीटिंग, जो माननीय केजरीवाल साहब भी, इस स्टेट का मुख्यमंत्री, इतने अदब के साथ चुनाव आयोग के पास गये। हमारे में से करीब-करीब 20 विधायक गये थे, कहा कि अरे भाई, दो-चार-पांच दिन, एक सप्ताह के लिए तुम पोस्टपोन करके वीवी पैट वाली मशीन ले आओ और हम मान जायेंगे। अरे, अगर वीपी पैट वाली मशीन लगने के बाद हम

हारते हैं तो हमारा इन्ट्रोस्पेक्शन कुछ और होगा लेकिन जब बात यहां यह हो रही है कि ईवीएम मशीन्स को ही हम फ्रॉड कर सकते हैं, फ्रॉड किया जा सकता है, डेमोंस्ट्रेट करके दिखा दिया तो अब तो बात यह है कि जो कि माननीय सुप्रीम कोर्ट ने इस बात को कहा और बड़े अंदाज से कहा। मैं उस पेराग्राफ को अध्यक्ष महोदय, पढ़कर सुनाना चाहता हूं, सदन के पटल पर लाना चाहता हूं। मैं उस पेराग्राफ को अध्यक्ष महोदय, पढ़कर सुनाना चाहता हूं, सदन के पटल पर लाना चाहता हूं। ये एक पैराग्राफ अध्यक्ष महोदय, हमने वहां भी सुनाया था, चुनाव आयोग के सामने सुनाया था और कहा था। सुप्रीम कोर्ट ने कहा, "From the material placed on by both parties, we are satisfied, we are satisfied that the paper trail is an indispensable requirement for free and fair election, wakai indispensable requirement for free and fair election. Further he said that the confidence of the voters can be only achieved with the introduction of the paper trail, EVMs with VVPAT ensure that the accuracy of the voting system with the intent to have fullest tansparency in the system and to restore the confidence of the voters, it is necessary to set up the EVMs with VVPAT system because vote is nothing but an act of expression which has immense importance in the democracy system." इसमें से एक एक शब्द इतना हैविली लोडेड है। अध्यक्ष महोदय, मुझे याद है वो क्षण जब माननीय केजेरीवाल साहब ने कहा कि अरे भई, वीवी पैट लगाकर इस काम को करो जिससे कि हम सभी का कॉन्फिडेन्स तो आए इसके अंदर, नहीं माना। ऐसी क्या मजबूरी थी जबकि कानून कहता है, डीएमसी एक्ट अलाउ करता है कि आप कुछ दिन के लिए म्यूनिसिपेलिटी के सदन का समय बढ़ा सकते हो, ऐसी क्या मजबूरी

थी कि आपको 2006 के पहले की ही मशीन यूज करनी है, ईवीएम जनरेशन थ्री नहीं यूज करना है। ऐस कौन से इंस्ट्रक्शन्स थे, ऐसी कौन सी मजबूरियां थी उसको बताना पड़ेगा, चुनाव आयाग को, अध्यक्ष महोदय। हममें से एक भी साथी ने ये नहीं कहा कि हम ईवीएम जो वीवीपैट वाला मशीन है, उसको अलाउ नहीं करेंगे। हमने कहा, हाथ जोड़कर विनती की कि वीवीपैट वाली मशीन से करा दो जिससे कि जो वोटर वोट डाले, उसको दिखे, हमने झाड़ू को वोट डाला, झाड़ू दिखे, इतना ही चाहिए था। अगर वीवीपैट वाली मशीन से चुनाव होता और अगर हम तब हारते, तब हम कहते कि हमारा कुछ और कारण था लेकिन ये कह रहे हैं नहीं, नहीं तुम्हारा और कारण है, ये समझाने का प्रयास कर हैं कि 15 लाख कैमरे कहां गये। अरे भइया, पहली बार इस देश के सदन में किसी भी सदन के अंदर एक शिक्षामंत्री ने माननीय डिप्टी सीएम साहब ने ये बात अपने फाइनेंस बजट स्पीच में क्या कहा, वो पढ़ें तो सही, उसमें लिखा कि, "For us electroal promises are nothing but contractural obligation." किसकी हिम्मत है कहने की, कौन है देश में कहने वाला ये और हम ये दावे के साथ कहते हैं कि पांच साल अभी हमारे पास तीन साल और हैं, हम पांच साल के लिए आए हैं, हमारा दो ही साल गया है अभी, और मुझे पूरा भरोसा है हमारी सरकार के ऊपर कि एक एक चीज जो हमने कही है, उसको पूरा करके दिखाएंगे, थोड़ा धैर्य रखें। अपनी तो बात कर लो। अरे! अपनी तो बात करो कि 15 लाख रूपये कहां गये! आज पता नहीं कोईसीडेंस से चूंकि जब मैं सुबह पार्क में गया तो किसी ने ये विडियो दिखाया कि भइया, ये ऐसे कोड होता है और ये कोड को दबाने से बात बन जाती है। मुझ भी चूंकि पहले लग रहा था कि भई इंटरनेट नहीं है, उसमें वाईफाई नहीं है, उसमें ब्लू-टूथ नहीं है, उसमें कुछ नहीं है, अब आज जब

दखा मेरी बगल में जब सौरभ करके दिखा रहे थे, मैंने कहा, ''ये तो जो सवेरे वीडियो दिखाया, वो तो यहां हो गया।'' तो परमात्मा ने कुछ इंडीकेशन्स सवेरे भेज दिये कि भई आज तो ये होने वाला है। तो देश के अंदर ये जो इतना बड़ा एक्सपोजर हुआ और चूंकि ये पिछले छः दिनों से मैं ध्यान में था, मैं मेडीटेशन में था, तो वहां भी मुझे बड़े सारे अनुभव हुए।

अध्यक्ष महोदय, एयरपोर्ट पर ही जब मैं यहां दिल्ली से जा रहा था तो एयरपोर्ट पर मुझे एक बड़े कांग्रेस के नेता मिले मैं नहीं लूंगा उन्होंने कहा कि ऐसी...

श्री सौरभ भारद्वाज : कांग्रेस के बड़े कौन बचे हैं अब?

श्री सोमनाथ भारती : एक तो ये बड़े नेता किसी जमाने में रहे होंगे। अध्यक्ष महोदय, कहा कि ऐसी क्या मजबूरी है कि दुनिया के अंदर सब देशों ने टेस्ट करके ट्राई करके जो छोड़ दिया, सिर्फ दो ही कंट्री, अध्यक्ष महोदय, इस वक्त देश में ये चाहती हैं, जो एक साउथ अफ्रीका और हिन्दुस्तान बस तो आपके लिए रोल मॉडल साउथ अफ्रीका रहेगा। आपका रोल मॉडल होना चाहिए अमेरिका, यूके जो डेवलप्ड नेशन्स हैं। आप बार बार उड़ उड़ के जाते हैं वहां पर अमेरिका में, वो अलग बात है कि अमेरिका सीखता हमसे है। छोटे से आधे से राज्य की एक सरकार से अमरिका सीखता है, वो अलग बात है लेकिन अध्यक्ष महोदय, जो कुछ भी ईवीएम के नाम पर चल रहा है, मुझे तो लग रहा था, वो साथी कह रहे थे कि दो करोड़ वाला फलाना ढिमका, मैंने कहा भइया, अभी मुझे बाहर कोई पूछ रहे थे लोग। मैंने कहा कि जिस इंसान ने जो कमिशनर, इन्कम टैक्स जिसने सब कुछ त्याग करके

चूंकि, मैं पर्सनली रहा हूं उनके साथ। जिसने सब कुछ छेड़छाड़ के आज भी जितनी सादगी है, कोई तुलना तो करके दखे ले। वा दो करोड़ वाला फलाने ने दे दिया, ढिमके ने दे दिया। अरे भइया! दो करोड़ एक दिल्ली का मुख्यमंत्री वो अरविंद केजरीवाल, शर्म आनी चाहिए। कहां पर डायवर्ट करना चाहते हैं। मुझे तो लगता है हमारे साथ के साथी कपिल मिश्रा, ठीक ठाक थे। पता नहीं क्या हो गया उनको, किसने नजर लगा दी और अच्छे खासे थे, क्या मत मारी गई! ऐसा इल्जाम जिसपे तो राजनीतिक विरोधी भी विश्वास न कर सकें। मैं अपने साथी को मुबारकबाद देता हूं कि हमारे पास एक...

अध्यक्ष महोदय : सोमनाथ जी, सोमनाथ जी।

श्री सोमनाथ भारती : मुझे दो मिनट और दीजिए।

अध्यक्ष महोदय : नहीं इसको, विषय को वहीं तक रखिये, कन्क्लूड करिये, प्लीज।

श्री सोमनाथ भारती : ऐसे मुख्यमंत्री, मतलब मेरी काफी साथियों से बात हुई, राजनीतिक विरोधी भी इस बात परविश्वास न कर सकें तो मैं चाहता हूं कि आज के बाद भाजपा के साथी इस बात को न उठाएं जो पीछे कहते हैं, वो आग कहें कि केजरीवाल साहब के ऊपर ये इल्जाम तो चिपकता ही नहीं है, चिपकता नहीं है, लाख चिपकाने का प्रयास करें अध्यक्ष महोदय।

अधक्ष महोदय : कन्क्लूड करिये, प्लीज।

श्री सोमनाथ भारती : अध्यक्ष महोदय, ये कह रहे हैं लोकपाल-लोकपाल। अरे भइया! लोकपाल तो हमारे पास है। हमारी आज स्थिति ऐसी है कि हम कानून बनाकर भेजे जा रहे हैं और हमारे हाथ बांध रखे हैं। आपने। कहते

हैं, वो काम नहीं हुआ, वो काम नहीं हुआ तो ये जो ट्रिक अपना रहे हैं भाजपा वाले, जो मोदी जी ट्रिक अपना रहे हैं कि भइया, तो न हम तुम्हारे कानून पास कराएंगे और जहां-जहां मौका मिलेगा, वहां वहां लांछन लगाएंगे। ये कौन सा तरीका है? ये कौन सी राजनीति है? साफ साफ बात, साफ साफ निकलकर आइये, कहिये कि लोकपाल हम पास नहीं करेंगे। अध्यक्ष महोदय, हमारी स्थिति तो ऐसी है। अभी पिछले दिनों मालूम पड़ा कि जी, हमारा जो हेल्थ सेक्रेटरी है, उसके ऊपर तरूण सिंह साहब के ऊपर वो जांच चल रही है, ये चल रहा है, वो चल रहा है, ये कर रहे हैं! आज वो बोल रहे थे कि भई जांच होनी चाहिए। अरे भईया! तेरे पास सीबीआई, इन्कम टैक्स डिपार्टमेंट, हमारा एंटीक्रप्शन ब्रांच जो आपने छीन लिया है, वो भी तेरे पास है, कर लेना जांच, कौन मना करता है हमारे में से? हम तो वो लोग हैं मरते दम तक, इस बात को भाजपा ध्यान से सुन ले। हममें से हरेक ने अपने अपने स्वार्थों को, सहूलियतों को, सब कुछ त्याग करके यहां पर आये हैं, बलिदान होने आए हैं यहां पर, तो भाजपा के साथी समझ लें इस बात को कि ये छोटे मोटे दो करोड़ और ये फलाना ढिमका और अटैक से और सतेंन्द्र जैन ने ये कर लिया, वो कर लिया, हम नहीं डरने वाले, हम तो खुल्लमखुल्ला आगे चलकर आएंगे ये लो, ये लो प्रूफ पकड़ लो आप।

अध्यक्ष महोदय : कन्क्लूड करिये, सोमनाथ जी। बस, अब कन्क्लूड करिये, प्लीज।

श्री सोमनाथ भारती : ईवीएम के ऊपर मैं एक लाइन कहना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय। हमारी स्थिति वैसी है, हम लोग बड़े नये लोग राजनीति में आए। जैसे मिडिल क्लास फैमिली का बच्चा होता है न, बहुत पढ़ता लिखता

है, पढ़ता लिखता है, मेहनत करता है, रात भर लालटेन जला के मेहनत करता है और उसके बाद एग्जाम में लिखकर आता है। इस उद्देश्य से लिखकर आता है कि भई जो मैं लिखकर आऊंगा, उतने नंबर तो मिल ही जाएंगे। अब और क्या करें, उतना ही हमें आता है। उसके बाद वाला जो काम है कि क्वेश्चन पेपर खरीद लो, आंसर सीट किसी और से लिखवा लो, कुछ पैसे किसी को दे आओ तो जब उस एग्जाम का रिजल्ट आता है तो वो सबसे नीचे और जा क्लास का सबसे बेवकूफ बच्चा था, जो सबसे निहायती बदमाश बच्चा था, जो कभी पढ़ा लिखा नहीं, वो नंबर वन पर! तो सवाल तो उठेगा कि भईया! ऐसी कौन सी और चीज करनी थी हमको मेहनत के अलावा, क्षेत्र में हम गये, रात भर काम किया, दिन भर काम किया, खूब जूते घिसे, सारा काम किया। उसके बावजूद अगर रिजल्ट नहीं आयेगा तो हम तो चिंतित होंगे ही। तो ऐसी कुछ तो चीजें थीं जो कि हमारी पहुंच से दूर थीं, वो क्या था? वो पासपोर्ट था, वो चले गये नहीं सुन रहे हैं अभी। वो पासपोर्ट था जो हमारे पास नहीं था वो जो तुम्हारे पास था। एक वोटर गया चुपके से 10 बजे 11 बजे, उसने अपनी वोट डाली और पांच नंबर दबा दिया। काम खत्म। हम भी क्षेत्र में गये थे अध्यक्ष महोदय। चुनाव के तुरंत बाद मैं अरविंद जी के पास आया था। मैंने कहा कि जिस दिन रिजल्ट आया, शाम को एक मीटिंग करी अपने क्षेत्र क अंदर। एक बूथ पर गया, वहां सबको इक्ट्ठा किया। मैंने कहा, ''भैया वोट तुमने किसको डाल दिया?''

अध्यक्ष महोदय : सोमनाथ जी अब कन्क्लूड कीजिए, प्लीज।

सोमनाथ भारती : एक सेकेंड। एफीडेबिट ले लो और एफीडेबिट में कहने को सारे तैयार हैं कि भैया इस बूथ के ऊपर वोट डाली आम आदमी पार्टी

को। अगर यहां तक की बात है तो मुझे लगता है कि आज के डेमोस्ट्रेशन के बाद अध्यक्ष महोदय, यह बहुत जरूरी है कि इस देश के अंदर चर्चा व्यापक तरीक से हो और इलेक्शन कमीशन हो, अभी-अभी जिन साथियों ने कहा कि नहीं, नहीं, भैया वो जो तुमने डेमोस्ट्रेशन दिखाया है न, उसमें वह कोड वाला हिस्सा दिखा नहीं। अरे कुछ तो शर्म कर लो यार! अब यह नहीं दिखा, चुप भी नहीं दिखीं, चुप भी नहीं दिखीं, इसके हाथ छिप गया था। अरे कुछ तो शर्म कर लो अब तो डेमोस्ट्रेशन हो गया। यह डेमोस्ट्रेशन, जहां कहोगे, वहां कराके दिखा देंगे। मैं तो कह रहा हूं कि इलेक्शन कमीशन महोदय, माननीय प्रधानमंत्री महोदय, आपको इस वक्त इस डिमोक्रेसी के बाबा साहब देख रहे होंगे, जिन्होंने संविधान लिखा। आज बाबा साहब शर्मिंदा से फिर रहे होंगे कि एक इस तरह का पार्टी आ गया, इस तरह का एक माहौल पैदा हो गया देश के अंदर कि अब ईवीएम को ट्रेप करके, इसको टेम्पर करके चुनाव जीता जायेगा और कम से कम आज बाबा साहब जहां भी है, वहां हम सब ने आपके आगे एक बात को सिद्ध करके दिखा दिया कि देश की डिमोक्रेसी ईवीएम के जरिये रिस्क पर है। इस डेमोस्ट्रेशन के बाद माननीय सुप्रीम कोर्ट ने मुझे लगता है आज कांग्रीजेंस में और आज के बाद जो कुछ भी चुनाव इस देश के अंदर हो, वो पेपर बैलेट में हो।

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद, धन्यवाद।

सोमनाथ भारती : बेलेट पेपर पर चुनाव नहीं हुआ, जो इतने साथी इस सदन के अंदर बैठे हैं, जो दिन-रात मेहनत करते हें और मैं अपने भाजपा के साथी को बता दूं कि हमारा वर्स्ट से वर्स्ट जो हमारा परफारमेंस रहेगा, वह तुम्हारे बेस्ट परफार्मेंस से भी अच्छा होगा।

अध्यक्ष महोदय : बहुत, बहुत धन्यवाद सोमनाथ भारती जी।

अधयक्ष महोदय : बंदना जी अब नहीं।

श्रीमती बंदना कुमारी : एम मिनट। वार्ड नंबर 61 की 665 वोट, वार्ड नंबर 62 की 6422 वोट, वार्ड नंबर 63 की 6560 वोट, नंबर 64 की 6927 वोट, एक-एक सौ का अंतर! 125, 120, ये अंतर जो अभी डेटा नहीं था मेरे पास, अभी हमने मंगवाया। सर, ये एकुरेट डेटा और हर वार्ड की समीकरण अलग है, लेकिन ये इक्कवल डाटा, सर ये बहुत ही हर लोगों के लिए चिंता का विषय है और प्लीज इसको जरा देखना था।

अध्यक्ष महोदय : ठीक-ठीक।

बंदना कुमारी : थैंक्यू सर।

अध्यक्ष महोदय : राखी बिड़ला जी।

सुश्री राखी बिड़ला : धन्यवाद अध्यक्ष महोदय जी, आज इतने महत्वपूर्ण विषय पर आपने मुझे बोलने का मौका दिया। बोलने से पूर्व, हमारे बीच में एक नये साथी चुनकर आये हैं, सिरसा जी को बहुत-बहुत बधाई कि वो एक नये सदस्य चुनकर आये हम लोगों के बीच में।

अध्यक्ष जी, आज इस सम्मानित सदन के अंदर चर्चा का विषय यह नहीं है कि गत चुनाव जो हुए, कौन सी पार्टी चुनाव हारी, कौन सी पार्टी चुनाव जीती। चर्चा का विषय अध्यक्ष जी आज ये नहीं, चर्चा का विषय आज ये है कि किसी प्रकार से कुछ पॉलिटिकल पार्टी के माध्यम से जो भारत की एक सुंदरता है, भारत का एक जो लोकतंत्र है, उसकी हत्या करने की कोशिश की जा रही है और देश के अंदर तानाशाही रवैया अपनाकर तानाशाही तंत्र को काबिज करने की कोशिश की जा रही है। मुद्दा आज इस बात पर है।

चर्चा इस मुद्दे पर हो रही है। अध्यक्ष जी, ये वोट डालने का अधिकार हम लोगों को किसने दिया, ये वोट डालने की प्रक्रिया कैसे शुरू हुई, यह हम सब को मालूम है कि वर्ष 1949 के अंदर 26 नवंबर डा. भीम राव अम्बेडकर जी ने भारतीय संविधान की रचना करते हुए दश के हर दलित, हर महिला, हर पुरूष, हर जाति-धर्म के लोगों को एक अधिकार था कि हम अपने वोट के अधिकार का प्रयोग करते हुए अपने वोट के अधिकार का प्रयोग करते हुए अपने प्रतिनिधि को चुनकर लेकर आयें। लोकतंत्र में चाहे गरीब हैं, चाहे सवर्ण हैं, चाहे दलित हैं, चाहे अनपढ़ हैं, चाहे पढ़ा-लिखा है, संविधान के मुताबिक जिसकी रचना डा. भीम राव अम्बेडकर ने करी, उसके मुताबिक हर किसी के वोट की कीमत एक समान है और उसके बाद हर पांच वर्ष के बाद देश के इस लोकतंत्र की यह सुंदरता है, भारत की यह सुंदरता है कि जो प्रतिनिधि चुनकर आता है, अगर अच्छा काम करता है तो भी और अगर वह बुरा कार्य करता है, भ्रष्टाचार करता है, गलत अच्छा काम करता है तो भी और अगर वह बुरा कार्य करता है, भ्रष्टाचार करता है, गलत नीतियों को लागू करता है तो जनता अपने प्रतिनिधि को हर पांच वर्ष चुनने के लिए तैयार रहती है। लेकिन आज 68 साल हो गये, इसके बाद लगभग ये देखा जा रहा है। देश में कहीं पर भी चुनाव हो रहा है, कहीं पर चाहे छोटा चुनाव हो रहा है, निकाय चुनाव है या विधान सभा चुनाव है या लोकसभा का उप-चुनाव है। लगभग-लगभग हर चुनाव से एक बात निकलकर आ रही है, जो कि बहुत गंभीर विषय है कि वोट किसी को दिया और जीत कर कोई और आया। ये बहुत गंभीर विषय, मैं बार-बार कह रही हूं कि सदन में आज चर्चा इस बात का विषय नहीं है कि कौन सी पार्टी जीती, कौन सी पार्टी हारी, आज चर्चा का विषय है कि आज देश का लोकतंत्र खतरे में है। आज देश के अंदर कुछ तानाशाही ताकतें लोकतंत्र की हत्या कर कर देश में तानाशाही स्थापित

करने के कगार पर देश को पहुंचा दिया है और लोकतंत्र लगभग लगभग उनके हाथों में आ चुका है, उसकी हत्या आने वाले दिनों में, निर्मम हत्या के रूप में होना निश्चित है बिल्कुल।

अध्यक्ष जी, आपने अभी देखा कि किस प्रकार से माननीय सदस्य सौरभ भारद्वाज ने दिखाया कि किस तरह से ईवीएम को टेंम्पर किया जा सकता है। किस प्रकार से जो एक मतदाता अपनी सरकार का कार्यकाल देखकर, किसी पॉलिटिकल पार्टी का एजेंडा देखकर, किसी और व्यक्ति विशेष को देखकर अपना अगर वोट देना चाहता है, वो वोट अपनी ईमानदारी से देकर आया, लेकिन वोट किसी और को चला गया और जीत कर कोई और आता है। उस मतदाता के आज सवालों का जवाब इस पवित्र स्थान से हम लोग देने की कोशिश कर रहे हैं। जो लगभग हम जनता तक पहुंचा भी पा रहे हैं। लगातार आज सारे चैनल पर डिवेट चल रही है, लगातार जब सौरभ जी अपना उदाहरण पेश कर रहे थे कि किस प्रकार से हैकिंग की जा सकती है, किस प्रकार से ईवीएम को टेम्पर किया जा सकता है। सारे चैनल ने लाईव काटा। अभी कोई बोल रहे हैं कि आप चुनाव इस कारण से हारे, आप चुनाव इस कारण से हारे। सर जी, मैं आपको यह कहती हूं कि मुद्दा आज यह नहीं है कि आम आदमी पार्टी चुनाव हारी। आम आदमी पार्टी तो 2009 में थी भी नहीं, जब आपकी पार्टी ने सवाल उठाया था। आम आदमी पार्टी का तो जन्म भी नहीं हुआ था 2009 में, जब आपने उसके ऊपर आज पूरी स्टडी करके एक किताब लिखी। सवाल आपके मन भी था और सिर्फ आज आम आदमी पार्टी पंजाब चुनाव हारने के बाद, एम. सी. डी. चुनाव हारने के बाद, गुजरात चुनाव हारने के बाद यह मुद्दा नहीं उठा रही है। राज्य सभा के अंदर गुलाम नबी आजाद ने इस सवाल को उठाया, बीएसपी प्रमुख मायावती जी ने इस आवाज को उठाया

और लगभग तमाम पिक्षी पार्टियां देश की इस मुद्दे को लेकर राष्ट्रपति महोदय से मिलने भी गयी कि किस प्रकार से ईवीएम को हैक कर, ईवीएम को टेम्पर कर लोकतंत्र की हत्या की जा रही है। अध्यक्ष जी, लोकतंत्र का महापर्व जिसको बढ़ चढ़ मनाया जाता है। तमाम नागरिक, तमाम् राजनीतिक दल, तमाम नौकरशाही सब लोग उसमें भाग लेते हैं और इस महापर्व को मनाते हुए हर पांच साल के बाद हम अपना प्रतिनिधि चुनकर लाते हैं लेकिन हो क्या रहा है कि पिछले कुछ सालों से, 2015 के बाद अगर हम देखें तो लगातार जिन स्टेट्स के अंदर विधान सभा का चुनाव हुआ या स्टेट्स के अंदर निकाय का चुनाव हुआ या अन्य स्टेट्स के अंदर लोक सभा का उप-चुनाव हुआ लगातार वोटिंग परसेंट के अंदर गिरावट आयी है। यह गिरावट आने का कारण क्या है? गिरावट इसलिए नहीं आ रही है कि लोग वोट देना नहीं चाहते, लोग इसलिए अब वोट नहीं देना चाहते कि वोट हम देने जायेंगे किसी और को और जीत कर कोई और आ जाएगा। लोगों का विश्वास उठ रहा है इस लोकतंत्र के ऊपर से, लोगों का विश्वास उठा रहा है चुनावी प्रक्रिया के ऊपर से, क्या हम इस चीज को मान लें कि या तो डरा धमकाकर आप अपनी सरकार बनायेंगे, लोगों को खरीद कर, विधायकों को तोड़कर आपकी सरकार बनाई जाएगी। अगर नहीं तो हम लोग ईवीएम को हैक करके अपनी सरकार बनायेंगे लेकिन सरकार बनायेंगे जरूर। और यही कारण है कि अभी पिछले दिनों जब जम्मू कश्मीर के अंदर उप-चुनाव हुआ, यहां पर बोल दिया राजौरी गार्डन में कि वोटिंग परसेंटेज कम हुआ, गर्मी थी जी। एमसीडी इलेक्शन के अंदर वोटिंग परसेंटेज कम हुआ। गर्मी थी, लोग घर से बाहर नहीं निकले। लेकिन जम्मू कश्मीर में ऐसी कौन सी गर्मी आ गयी थी कि जो वोटिंग परसेंट सिर्फ और सिर्फ छः या सात प्रतिशत रह गया। मुझे कहते हुए बहुत दुःख भी होता है और कहते हम हुए बहुत पीड़ा भी होती है कि हम लोग जहां गर्व करते कि हम भारतीय लोकतंत्र का हिस्सा

हैं, हम भारतीय लोकतंत्र के एक वो नागरिक हैं, जो हर पांच साल बाद ईमानदारी से अपनी सरकार को चुनते हैं और आज हम देख रहे हैं कि एक अनपढ़ औरत, एक बुजुर्ग, दलित परिवार के लोग, एक किसान, एक विधवा महिला किसी एक विशेष पॉलिटिकल पार्टी का एजेंडा सुनती है, समझती है और उस विश्वास पर उस पॉलिटिकल पार्टी को वोट देकर आती है और जिस दिन रिजल्ट आता है तो अपने माथे पर हाथ रख कर इसलिए रोती है कि जसको वोट देकर आयी थी, उसको तो चुना नहीं गया, वो तो जीता नहीं, लेकिन जिसको वोट नहीं देना था, जिसका पूरा देश विरोध कर रहा था, जिसकी मौजूदा सरकार की वजह से आज सरहदों पर हमारे जवानों की जान जा रही है, जिसकी मौजूदा सरकार की वजह से आज सरहदों पर हमारे जवानों की जान जा रही है, जिसकी मौजूदा सरकार की वजह से आज जो है, देश की बेटियों की ईज्जत तार-तार हो रही है, जिसकी वजह से आज हमारा युवा बेरोजगार हो रहा है, वो लोग हर स्टेट के अंदर प्रचंड बहुमत से अपनी सरकार बनाते हैं तो सर जी, सवाल तो उठेगा।

अध्यक्ष जी, मैं सिर्फ आपके माध्यम से यही कहना चहाती हूं कि अगर कुछ लोगों को ये लगता हो या मीडिया के माधयम से ये बात बाहर पहुंचाने की कोशिश की जा रही हो कि आम आदमी पार्टी अपने चुनाव हारने की पीड़ा को विधानसभा में डिस्कस कर रही है तो वो बहुत बड़ी गफलत में हैं, बहुत बड़ी गलतफहमी में हैं। अगर आज आम आदमी पार्टी की सरकार, अरविंद केजरी वाल की सरकार और ये सदन इस मुद्दे पर यहां चर्चा कर रहा है तो सिर्फ और सिर्फ बाबा भीमराव अंबेडकर के द्वारा जो संविधान का निर्माण हुआ था जिसमें हर दलित, हर मुस्लिम और हिंदू को हर महिला और पुरूष को समान वोट डालने का अधिकार मिला, उस लोकतंत्र को जिंदा बचाये रखने के लिए, उसकी सुरक्षा के लिए, देश की एकता और अखंडता को बनाये रखने के लिए आज इस सदन में हम ये चर्चा कर रहे हैं। इस सदन में ये चर्चा का विषय नहीं है, कत्तई भी कि कौन सी पार्टी जीती, कौन सी पार्टी

हारी। चर्चा का विषय सिर्फ और सिर्फ ये है कि लोकतंत्र को कैसे जिंदा रखा जाये, लोकतंत्र को कैसे स्वस्थ रखा जाये और किस प्रकार से देश के अंदर एक स्वस्थ और एक बिल्कुल फेयर इलैक्शन की प्रक्रिया को कराया जाये।

अध्यक्ष जी, लगातार इस विषय पर मुझसे पूर्व वक्ता बोल चुके हैं कि जो हमें देश ईवीएम मशीन सप्लाई करते हैं, वो खुद बेलेट पेपर से अपने यहां चुनाव कराते हैं। देश में या विश्व में जितने भी विकसित देश हैं, चाहे वो जापान हो, इंग्लैंड हो, फ्रांस हो, चाहे आपका अमेरिका हो, नीदरलैंड हो, तमाम ये देश जो कि टैक्नोलोजी में, आर्थिक स्थिति में, ऐजुकेशन में, महिलाओं का सम्मान करने पर, युवाओं को रोजगार देने में हमसे ज्यादा शक्तिशाली हैं, हम से ज्यादा व्यवस्थित हैं। जब वो लोग बैलेट पेपर का प्रयोग करते हैं तो भारत में ऐसी कौन सी आफत आ गई कि हम लोग ईवीएम का प्रयोग करते हैं? ये बहुत बड़ा सवाल है और ये सवाल इसलिए भी उठता है कि क्योंकि आज बेरोजगारी अपनी चरमसीमा पर है, आज भुखमरी अपनी चरमसीमा पर है, आज शिक्षा की व्यवस्था इतनी गड़बड़ाई है, आज स्वास्थ्य की व्यवस्था इतनी गड़बड़ाई है लेकिन हम अपने आपको टैक्नोलाजी ऐडॉप्ट करन वाले बताते हैं। हम टैक्नोलोजी का बिल्कुल विरोध नहीं कर रहे लेकिन आपको इतनी टैक्नोलोजी ऐडॉप्ट करनी है तो शिक्षा के क्षेत्र में कीजिये। आज आप दिल्ली छोड़ दीजिये, दिल्ली के अलावा देश के किसी भी राज्य में चले जाइये, शिक्षा के नाम पर सिर्फ और सिर्फ गुमराह किया जाता है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी आप दिल्ली छोड़कर देश के किसी भी राज्य में चले जाइये, स्वास्थ्य के नाम पर भी सिर्फ और सिर्फ लोगों को गुमराह किया जाता है और किसी भी मुद्दे पर चर्चा करने के लिए, किसी भी विषय पर काम करने के लिए कि दो साल का दिल्ली की सरकार का कार्यकाल देख लीजिये और बाकी 28-29 राज्यों की सरकारों कार्यकाल देख लीजिये, जवाब मिल जायेगा लेकिन बार बार एक ही बात कहना कि हम लोग, आम आदमी पार्टी के लोग चुनाव हार गये, इसलिए इस पीड़ा के साथ हम यहां आये हैं तो ये आप लोगों की बहुत गलतफहमी

है। हम लोगों ने हमेशा आंदोलन किया है, हम लोगों ने हमेशा इस चीज के खिलाफ आवाज उठाई है जिसकी वजह से इस देश का लोकतंत्र खतरे में पड़ा हो, जिसकी वजह से इस देश की जनता खतरे में पड़ी हो। चाहे वह भ्रष्टाचार का मुद्दा हो, चाहे वो महिलाओं के सम्मान का मुद्दा हो और आज चाहे बेईमानी के साथ इलैक्शन जीतने का मुद्दा हो, हर बार आम आदमी पार्टी के लोगों ने आवाज उठाया है और हमेशा अपनी आवाज को बुलंद करते रहेंगे।

तो अध्यक्ष जी, बस मैं ये कहना चाहती हूं आपके माध्यम से कि जिस प्रकार से दुनिया के अन्य विकसित देशों के अंदर बैलेट पेपर से चुनाव होता है, बड़े-बड़े देशों से हम लोग सीखने की बात करते हैं तो सबसे पहले हम ये सीखें कि निष्पक्षता से चुनाव कैसे संभव कराया जा सकता है।

अध्यक्ष महोदय : कन्क्लूड करिये राखी जी।

सुश्री राखी बिड़ला : सर जी, कन्क्लूड करने वाला विषय नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : नहीं, प्लीज आप कन्क्लूड करिये।

सुश्री राखी बिड़ला : और न ही ये लड़ने वाला विषय है, न ये किसी को नीचा दिखाने वाला विषय है। ये विषय है अपने संविधान को जिंदा रखने के लिए। ये विषय है लोकतंत्र को जिंदा रखने के लिए। ये विषय है, उन चुने हुए प्रतिनिधियों के सम्मान के लिए जो लगातार चुनकर आये दिल्ली की जनता के माध्यम से, देश की जनता के माध्यम से। आज से पहले की चुनावी प्रक्रिया देखिये, आप लोग, कैसे कैसे लोग देश में जीतकर आये। राजेन्द्र प्रसाद जैसे और आज जो है, बड़े-बड़े लोग जीत कर आये लेकिन आज हो क्या रहा है? आज लोग वो जीत कर आ रहे हैं जिनके पास बाहुबल है, पैसा

है। 2015 का मैं जीता लजागता उदाहरण हूं। मैं खुद इस विधानसभा में जीतकर आई लेकिन 2015 के बाद से लगातार ऐसा लग रहा है जैसे कैप्चरिंग हो गई है, ईवीएम के साथ षडयंत्र हो गया है और उस षडयंत्र का सिर्फ और सिर्फ एक लक्ष्य है।

अध्यक्ष महोदय : राखी जी, अब कन्कलूड करिये। प्लीज कन्कलूड करिये।

सुश्री राखी बिड़ला : एक विशेष पॉलिटिकल पार्टी को जो है फायदा पहुंचाये। ये संशय सिर्फ हमारे मन में नहीं था, मैं बताया कि राज्यसभा में कांग्रेस के लोगों ने, बीएसपी के लोगों ने और अन्य दलों के लोगों ने अपनी आवाज बुलंद करी, घेराबंदी करी और सिर्फ इतना ही नहीं, संदेह तो आज राष्ट्रीय इलैक्शन कमीशन के मन में भी उठने लगा है और इसीलिये 12 तारीख को राष्ट्रीय इलैक्शन कमीशन ने सर्वदलीय मीटिंग बुलाई है और जिस तरह से सिरसा साहब आपने कहा कि जैसा आपने यहां करके दिखाया, वहां भी करके दिखाइये, तो हम सच्चाई के लोग हैं, सत्य ही बोलते हैं, चाहे वो ये विधानसभा का पवित्र मंदिर हो या इलैक्शन कमीशन का आफिस, जैसे यहां पर प्रूफ करके दिखाया कि हमने टैम्परिंग को, ऐसे ही वहां पर भी करके दिखायेंगे लेकिन झूठ और तानाशाही बहुत दिन नहीं चलती है और जैसा कि आम आदमी पार्टी अपने आप में एक बहुत बड़ा उदाहरण है कि इस पार्टी पर परमात्मा का आशीर्वाद है। आपने लाख कोशिश कर ली, बीजेपी के लोगों ने अन्य राज्यों में देखो, गोवा में देखो इनका क्या हुआ था? 17 कांग्रेस के आये और 12 इनके आये तोड़ तोड़ के कांग्रेस के लोगों को...

अध्यक्ष महोदय : राखी जी, अब कन्क्लूड करिये। प्लीज कन्क्लूड करिये।

सुश्री राखी बिड़ला : अध्यक्ष महोदय, असम में क्या करा? मणिपुर में क्या करा? लेकिन परमात्मा को पता था कि ये बीजेपी के लोग षड्यंत्र रचेंगे, इसलिये इन्हेंने 2015 में हमें 70 में से 67 सीटें लाकर दीं कि जितने लोगों को खरीद सकते हो, तुम खरीद के दिखाओ लेकिन आम आदमी की पार्टी की सरकार को तुम हिला नहीं सकते। हम लोगों को तुम परेशान कर सकते हो, हम लोगों को काम करने से रोक सकते हो, लेकिन जनता का विश्वास हमारे साथ है, परमात्मा का आशीर्वाद हमारे साथ है और ये जो आप लोगों का ड्रामा था कि ईवीएम हैक नहीं हो सकती, ईवीएम टैम्पर नहीं हो सकती, आज इस पवित्र मंदिर के अंदर, इस पवित्र स्थान के अंदर विधानसभा के चुने हुए सदस्यों के आगे ये भी साबित करके हम...

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद, धन्यवाद।

सुश्री राखी बिड़ला : लोगों ने दिखा दिया कि ईवीएम को हैक किया जा सकता है। इसके लिए रॉकेट साइंस नहीं चाहिये। ईवीएम मशीन भी इंसान ने ही बनाई है और जो चीज इंसान बना सकता है, उसे हैक भी आराम से कर सकता है, उसे टैम्पर भी इजीली कर सकता है। तो ये जो सत्ता का नशा है, जो ये एक क्रिमिनल बैकग्राउंड वाली पार्टी है, जिस तरह से पैसे का नशा है, उस नशे को उतारने के लिए सिर्फ झाड़ू ही काम आता है और ये झाड़ू लगातार चलती रहेगी। हम लोग सरकार बनाने, पद लेने, चुनाव जीतने के लिए नहीं आये थे। हम देश को परिवर्तित करने के लिए, देश की राजनीति को साफ करने के लिए, देश की राजनीति में परिवर्तन करने के लिए आये थे और उस परिवर्तन के लिए हर वक्त, हर जगह तैयार रहेंगे। किसी से डरते नहीं, किसी से बिकते नहीं और न ही किसी से घबराते हैं क्योंकि सच की हमेशा जीत होती है।

अध्यक्ष जी, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद और ये चैलेंज जो है कि 12 मई को इलैक्शन के साथ इसे टैम्पर करके दिखाओ, ये भी साबित करके दिखायेंगे और जनता के सामने इन लोगों का असली चेहरा लेकर आयेंगे। बहुत बहुत धन्यवाद, जयहिंद जयभारत।

अध्यक्ष महोदय : मनीष जी।

श्री सौरभ भारद्वाज : अध्यक्ष महोदय, इससे पहले कि मनीष जी बोलें, मैं सदन के आगे एक प्रस्ताव रखना चाहता हूं, अगर आपकी इजाजत हो तो?

अध्यक्ष महोदय : रखिये, रखिये।

श्री सौरभ भारद्वाज : अध्यक्ष महोदय, क्योंकि काफी इस पर चर्चा हुई और अलग अलग सदस्यों ने इस के बारे में अपनी अपनी राय रखी है, तो एक प्रस्ताव है, रेजल्यूशन है जो मैं इस सदन के आगे रखना चाहता हूं :-

"The Legislative Assembly of NCT of Delhi having its sitting in Delhi on 09 May, 2017

Taking note of the fact that there have been serious allegations of tampering of EVMs in different elections in very recent past,

Expressing serious concern about the way the most important aspect of our democratic process is sought to be serioulsy compromised,

Dismayed with the approach of the Election Commission of India

which even before inviting the views of the stackeholders pronounces the EVMs to be tamper-proof,

Having witnessed the pronounces the EVMs to be tamper-proof,

Having withnessed the live demonstration of hacking of the EVM in this very House a while ago, Calls upon every citizen of our country to come together to pil an end to this EVM fraud which is threatening the very existence of our democracy,

Appeals to Hon'ble President of India and to the Election Commission of India to ensure that every single election from now on is held with VVPAT as directed by Hon'ble Supreme Court of India,

Calls for introduction of a standardized procedure whereby votes polled and counted through EVMs in at least 25% of booths that are randomly picked by way of draw of lots in each of the territiorial constituencies are tallied with the physical count of paper trail recorded through VVPAT and Urges upon the citizens of the country to remain ever vigilant to protect our much cherished democracy painsta ingly established by our founding fathers in most trying circumtance so that we all could breathe free."

अध्यक्ष जी, क्योंकि आज बहुत सारे लोग इसको लाईव स्क्रीनिंग के माध्यम से देख रहे हैं, मैं इसको मोटे तौर पर हिन्दी में बताऊं कि इस हाउस के अन्दर मैंने ये प्रस्ताव रखा है कि आज हमने सदन के अन्दर सबको ये

दिखाया कि किस तरीके से ईवीएम की मशीनों के अन्दर छेड़खानी की जा सकती है, रिगिंग की जा सकती है, टैम्परिंग की जा सकती है और ये सबसे मूल चीज है हमारे डेमोक्रेसी के लिए, हमारे प्रजातंत्र के लिए, इसीलिए ये सदन राष्ट्रपति महोदय को और इलैक्शन कमीशन ऑफ इंडिया को ये अर्ज करता है कि आगे से जो भी चुनाव इस देश के अंदर हो, चाहे वो किसी भी लैवल का चुनाव हो, वो सभी ईवीएम मशीनों से कराया जाए। जब उन सभी मशीनों के अंदर वीवीपैट मशीनें यानी कागज की पर्ची निलने वाली मशीन लगी हो और जब गिनती कराई जाए तो रैन्डम्ली हर कॉन्स्टिट्एन्सी के अंदर कम से कम 25 परसेंट, कम से कम 25 परसेंट बूथस के ऊपर वीवीपैट से निकली हुई पर्चियों की भी गिनती कराई जाए और उस गिनती का मिलान ईवीएम की गिनती से कराया जाए और और ये हर बार रैडम्ली चूज किया जाए ताकि ये भी न कहा जाए कि है पचास साल पहले जाना चाहते हैं, पेपर बैलट बॉक्स पर जाना चाहते हैं और ईवीएम के ऊपर कोई संदेह भी ना हो। तो ये मेरा प्रस्ताव है, जो सदन के आगे है। धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय : श्रीमान मनीष सिसौदिया जी, माननीय उप मुख्यमंत्री।

उप मुख्यमंत्री : अध्यक्ष महोदय, आज जिस महत्वपूर्ण मसले पर लोकतंत्र की, लोकतंत्र के लिए खतरा बने जिस महत्वपूर्ण मसले पर आज यहां सभी साथियों ने बैठकर चर्चा की, इसके पक्ष में भी और विपक्ष में भी, मुझे लगता है इसी लिए दिल्ली विधान सभा बहुत अलग तेवर के लिए जानी जाती है यहां जब चर्चा हो रही थी तो मुझे उत्तर प्रदेश के एक बड़े मशहूर शायर, इमरान गढ़ी का एक शेर, उन्होंने उत्तर प्रदेश चुनाव के बाद कहा था कहीं पर, वो याद आया :

''फरेब करके सियासी जमीन जीती है, लहू में डूबी हुई आस्तीन जीती है,

यही वो हक है जो हम ये चीख-चीख कर बोल रहे हैं, जो हम चीख-चीख कर बोल रहे हैं,

चुनाव तुम नहीं जीते, ये मशीन जीती है।''

ये उन्होंने उस वक्त उत्तर प्रदेश में, उस बम्पर जीत के बाद सो-कॉल्ड बम्पर जीत के बाद शेर कहा था। उस शेर को जब मैं सुन रहा था, उससे पहले भी हम कुछ बात ईवीएम के बारे में करते थे, सुनते थे, कुछ वीडियोज देखते थे। सोमनाथ भारती ने जिक्र किया, डर लगता था वीडियो देखकर यकीन भी करने को मन करता था, ये भी मन करता था कि कुछ कहें इस बारे में, इसके खिलाफ कुछ बोलें, धीरे-धीरे समझ में भी आ रही थी चीजें टैक्नालॉजी की, बदमाशियों की, लेकिन फिर भी लगता था, काश! हम गलत निकलें। I wish I am wrong! हर बार ये लगता था लेकिन आज इस देश के सामने, सौरभ भारद्वाज ने जो प्रूव किया है, मुझे लगता है कि हिन्दुस्तान के पूरे के पूरे लोकतंत्र के लिए ये एक बहुत बड़ी मजबूत ईट, आज का उनका ये योगदान साबित होगा। आने वाली नस्लें इस चीज को याद रखेंगी कि जिस वक्त लोकतंत्र की जड़ों में ईवीएम नाम का मट्ठा डालकर पूरी तरह से बर्बाद करने की साजिश रच ली गई थी, उस वक्त एक टेक्नोलॉजी छोड़कर, टेक्नोलॉजी का कैरियर छोड़कर आए, एम्बैडेड टैक्नालॉजी का कैरियर छोड़कर, उसी का, एम्बैडेड टैक्नालॉजी किसी को पता न हो, समझ में न आती हो, य कोडिंग, कैलकुलेशन की कोडिंग, मशीनों की ये जो कोडिंग है, यही एम्बैडेड टैक्नालॉजी होती है। उसमें नौ साल के अनुभव के बाद विधान सभा में आकर बैठे हुए इस इंजीनियर ने इस सारे के सारे षड्यंत्र का पर्दाफाश कर दिया।

अध्यक्ष महोदय, मुझे कई बार लगता है कि हमारे जितने साथी हैं, सबका

अपना-अपना बैकग्राउन्ड है; संजीव का अपना, मनोज, हम सब जितने साथी हैं, उनका सबका अपना बैकग्राउन्ड हैं और शायद ईश्वर ने इसीलिए अलग-अलग बैकग्राउन्ड के साथ बहुत कम लोग ऐसे हैं, जिन्होंने पांच-साल पॉलिटिक्स में बिताए होंगे, किसी ने इंजीनियरिंग में, किसी न वकालत में, किसी न फाइनेन्स में, किसी ने ईवन अमानत ने सामाजिक जिंदगी में बिताए थे तो अमानत के वोटर कार्ड में, बहुत सारे लोग हैं, अलग-अलग उन्होंने समय बिताया, उसका योगदान मुझे लगता है ये इस कुदरत ने इसीलिए चुनकर भेजा सबको कि सब अपना-अपना बैकग्राउन्ड लेकर यहां विधान सभा में आकर बैठिए। इसकी समय-समय पर जरूरत पड़ने वाली है। तो सबसे पहले तो मैं चाहूगा कि इस अतुलनीय योगदान के लिए जो लोकतंत्र के लिए, आने वाली नस्लों के लिए, हिंदुस्तान के पूरे भविष्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, सौरभ भारद्वाज के लिए हम सब लोग खड़े होकर उनका धन्यवाद करें... कुछ लोग खड़े नहीं हुए, चाहे पक्ष में हैं या विपक्ष में हैं, उनके लिए एक चीज कहना चाहता हूं, ''ठीक है, आज हम सत्ता में बैठे हैं। ठीक है, आप विपक्ष में हैं लेकिन आप एक चीज याद रखिएगा कि :

''लगती है आग तो आते हैं कई घर जद में,

यहां पर सिर्फ हमारा ही मकान थोड़े है।''

आग लगेगी तो ये, यहां इस सदन में आने के लिए चुनाव जीतकर आना पड़ता है और अगर इस चुनाव की धरातल पर भी आग लग गई तो फिर क्या हम और क्या तुम। आज कोड आपके पास था, इन्होंने नई मशीन में नया कोड डालकर दिखा दिया। कल को आपकी जगह कोई और उसमें कोड डालेगा तो न आप बैठोगे, न यहां हम बैठेंगे और यहां कैसे-कैसे लोग बैठेंगे,

आप कल्पना नहीं कर सकते हैं इस चीज की। इसलिए ये जरूरी है। सवाल सिर्फ 'आम आदमी पार्टी' के हारने और जीतने का नहीं है, सवाल लोकतंत्र का है।

अध्यक्ष महोदय, लोकतंत्र को बचाने के लिए बहुत बुनियादी सवाल हमारे साथियों ने आज यहां रखे हैं। सौरभ भारद्वाज ने बहुत सरल, क्योंकि टैक्नोलॉजी को आम आदमी की भाषा में प्रस्तुत करना कोई छोटी चीज नहीं होती है लेकिन सौरभ भारद्वाज ने जिस तरीके से आज टैक्नालॉजी के सबसे बड़ी कोड को इतना डीकोड करके, इतना डिमिस्टफाई करके सबके सामने रखा है, मुझे लगता है अलग-अलग बैकग्राउन्ड के हमारे सारे विधायक साथी इस बात से सहमत हो गए, उनको समझ में आ गई ये चीजें कि खेल क्या है ये!

अध्यक्ष महोदय, मुल मुद्दे पर आने से पहले मैं एक चीज और कहना चाहूंगा। यहां, मुझ नहीं पता कि अभी हमारे सदन में वो तमाम साथी बैठे हैं, कि नहीं बैठे हैं, आज उपराज्यपाल दीर्घा में हमारे कुछ विशिष्ट मेहमान यहां आए हुए हैं, जिन्होंने इस पूरे उपक्रम में बहुत अच्छा योगदान दिया है, उसमें ऐक्टिविस्ट-सोशल ऐक्टिविस्ट-टैक्नोक्रट ऐक्टिविस्ट मैं कहूंगा वी. वी. राव साहब हैं, जिन्होंने 2009 से ही इस मुद्दे को उठाया है और तब से उठाया है, जब एक पार्टी किताबें लिख रही थी, रिसर्च कर रही थी, मुकदमें लड़ रही थी कि ईवीएम में घोटाला है, तब से उठाया है, इन्होंने उस मुद्दे को। वो पार्टी तो सत्ता में बैठ गई जाकर और कहने लगी कि नहीं, ईवीएम में कोई गड़बड़ नहीं है क्योंकि उसके हाथ में कोड आ गया है। आज यहां बैठे हुए वी. वी. राव साहब आर इस बात का लेकर बहुत खुश हैं कि आज पहला मौका है उनके इस आठ साल के संघर्ष में कि कोई सत्ता में, बहुमत

में बैठी हुई पार्टी, इस मुद्दे को उठा रही है। ये बहुत खुश थे उस बात से। उन्होंने इस पूरे, अभी यहां जो आपके सामने डेमोस्ट्रेशन हुआ, इस डेमोस्ट्रेशन को करने में भी काफी अहम भूमिका, उन्होंने करने में काफी हमें मदद की है।

एक तहसीन पूनावाला साहब बैठे हुए हैं यहां पर, आप सब लोग उन्हें जानते हैं। उन्होंने अपने एफिलेशंस के साथ-साथ टैक्नोक्रेट भी हैं और टेक्नोलॉजी को भी समझते हैं। उन्होंने काफी मदद की है इसको डीकोड करने में। मुझे लगता है कि जब हम इस पूरे डेमोस्ट्रेशन की और आज की इस चर्चा की बात करें तो रिकॉर्ड के लिए हम ये जरूर सहेज कर रखें कि इस पूरे डेमोस्ट्रेशन को अमल में लाने में, मूर्त रूप देने में जिन-जिन साथियों ने हमें योगदान दिया, विशिष्ट मेहमान के रूप में मुझे नही पता, अभी शायद बैठे नहीं होंगे यहां, मैं देख नहीं पा रहा हूं, इसको विट्नेस करने के लिए सीपीएम से मैम्बर ऑफ पार्लियामेंट नीलोफर वसु साहब यहां थे, टीएमसी से सुखेन्द्र शेखर साहब यहां पर आए हुए थे और मनोज झा जी, जो आरजेडी से हैं, वो भी यहां पर आए तो वो आज इसको देखकर गए हैं क्योंकि बात इसीलिए मैंने कहा कि ''लगेगी आग तो मकान सबक जद में आते हैं।'' चिंता सबको है इसकी और उनको भी होनी चाहिए जो आज सत्ता में बैठे है। हम तो आज सत्ता में बैठे हैं लेकिन फिर भी इस चीज का लेकर आए हैं क्योंकि बात तीन साल या पांच साल की नहीं है, बात तो लोकतंत्र की है, बात तो डेमोक्रेसी की है।

अध्यक्ष महोदय, काफी चीजें कही गई, मेरे साथियों ने देश-विदेश के बहुत सारे उदाहरण दिए। कुछ मुद्दे जब से डेमोस्ट्रेशन हुआ है, बीच में ब्रेक में, मुझे कुछ लोगों ने बताया कि कुछ So, called owner of this democracy, so called ower. इन सवालों को लेकर कुछ तरह-तरह के शब्द यूज कर रहे

हैं कि ये तो खिलौना ले आए हो। तेरी मशीन वर्सिज मेरी मशीन का इशू हो गया है। तो ये सब पे भी मैं चाहूंगा कि 2-4 मिनट बोलूं, लेकिन उससे पहले एक-दो बुनियादी चीजें हैं जो, क्योंकि आज इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर चर्चा कर रहे हैं मुझे नहीं लगता कि देश की किसी विधान सभा में, सत्ता में बैठे हुए लोग, सत्ता में बैठी हुई पार्टी कभी इतना साहस कर पाएंगे या कर पाए होंगे कि चुने जाने के, सत्ता में रहने के बावजूद इस चुनावी प्रक्रिया पर वो सवाल उठाएं, जिसकी जरूरत है।

अध्यक्ष महोदय, दुनिया के कई देशों में लोकतंत्र हैं। समय-समय पर, हमारे देश में आया वैसे और बहुत सारे देशों में लोकतंत्र आया लेकिन इतिहास गवाह है कि दुनिया के कई देशों में लोकतंत्र अब नाम का रह गया है और क्यों वहां नाम का रह गया है अगर आप देखेंगे तो वहां चुनावी प्रक्रिया महज नाम मात्र की रह गई है। इसलिए लोकतंत्र नाममात्र का रह गया है। कहीं सेना सब कुछ सत्ता संतुलन करती है, चुनाव से कंट्रोल में रहते हैं, कहीं कोई तानाशाह बैठ गया है, वो अपने आपको राष्ट्रपति चुनवा लेता है। एक बार प्रधानमंत्री चुनवा लेता है, फिर से राष्ट्रपति चुनवा लेता है कभी। ये सब चल रहा है लोकतंत्र के नाम पे दुनिया के कई देशों में। भारत एक मात्र ऐसा लोकतंत्र है जो बार-बार इस सवाल का जवाब देता है कि नहीं, लोकतंत्र लोगों से होता है, लोकतंत्र किसी तानाशाह से नहीं होता है। लोकतंत्र किसी आर्मी के जनरल की कमांड पर नहीं चलता, लोकतंत्र किसी राज्य में चुनाव नहीं कराए जाने से, चुनाव टालते जाने से नहीं चलता। कई देशों में चुनाव ही नहीं हुए, लोकतंत्र कह रहे हैं अपने आपको। खत्म हो गया, बहुत कमजोर हो गया उन लोगों का लोकतंत्र। हमारे आसपास में हम देखते हैं दक्षिण एशिया में, साउथ एशिया में, वहां भी लोकतंत्र लगातार कमजोर होता चला जा रहा है

कई देशों में लेकिन भारत में लोकतंत्र टिका हुआ है तो इसलिये क्योंकि यहां के लोकतंत्र का आधार चुनावी प्रक्रिया है ओर ये चुनावी प्रक्रिया बहुत मेहनत से, बाबा साहब अम्बेडकर की टीम ने उस वक्त तैयार करवाई थी। मैं रैफरैंस के लिए सिर्फ कोट करना चाहता हूं कि जब संविधान की तैयारी चल रही थी, संविधान पर बात हो रही थी तो देश के हर जिले से प्रतिनिधि यहां पर आते थे। पूरे देश से संविधान सभा की बैठक में आते थे और अलग-अलग वोटिंग होती थी, संविधान के अलग-अलग अनुछेदों पर, अलग-अलग प्रावधानों पर वोटिंग होती थी। इतिहास गवाह है, संविधान सभा का, संविधान के डिबेटस का, कांस्टिट्यूशन डिबेटस का, कि यूनिवर्सल फ्रेंचाइज यानि की देश के हर नागरिक को वोट देन का अधिकार होगा, देश के हर नागरिक को वोटिंग राइट उपलब्ध होगा, इस बात पर कहीं कोई मतभेद नहीं था। एकमात्र ऐसा प्रावधान है संविधान का, यूनिवर्सल फ्रेंचाइज जिसको सारे सदस्यों ने, सारे प्रतिनिधियों ने जो पूरे देश भर से आते थे, 100 प्रसैंट समर्थन से स्वीकार किया था। किसी और प्रावधान को नहीं किया, सब में डिबेट थे, इफ एंड बट थे एक मात्र ये था। ये इसलिए कि हमारे आत्मा में, चुनाव बसा हुआ है, हमारे लोकतंत्र की आत्मा में साफ सुथरा चुनाव बसा हुआ है। इस संविधान के बाद जब 1952 में पहली बार चुनाव हुआ तो एक बड़ा सवाल उठ रहा था। पूरी दुनिया कोतूहल से देख रही थी कि भारत जैसा विस्तृत देश, भौगोलिक रूप से, जनसंख्या के रूप में बड़ा देश कैसे इतने बड़े लोकतंत्र में चुनाव प्रक्रिया सम्भव हो पाएगी? कैस अरूणाचल, कश्मीर, कन्याकुमारी इन सब में दूरदराज के आदिवासी इलाकों में कैसे चुनाव की प्रक्रिया, जहां-जहां दो-दा वोटर रहते हैं, वहां-वहां कैसे चुनाव होगा! बड़े कौतूहल से देश देख रहा था, लेकिन 1952 से लेकर आज तक इस चुनावी रथ पर सवार होकर देश का लोकतंत्र मजबूत हुआ, आगे बढ़ा। जब-जब गड़बड़ियां हुई, उसको ठीक किया गया।

मैं पत्रकार रहा हूं, मैंने खुद विटनेस किया है कि कैसे बन्दूक की नोक पर रेगिंग होती थी, कैसे बैलेट, बूथ कब्जा के ठप्पे लगवाए जाते थे। सैकड़ों वीडियो यू-ट्यूब पर गूगल पर मिल जाएंगी देखने को। वो लोकतंत्र में डिप आया था। चुनाव आयोग जैसी संस्थाओं ने और देश के बहुत बड़े-बड़े विद्वानों ने आगे बढ़ के, बड़े-बड़े फैसले लिए, पूजा नहीं। उस वक्त बैलेट पेपर चुनाव प्रक्रिया माना जाता था। बहुत सैकड़ों ऐसी चीजें हैं, जिनके बारे में बोलना नहीं चाहिये। लेकिन उस वक्त लोग बोले, लोगों ने उसमें सुधार की मांग की, लोगों ने उसमें कहा, ''ये देखो विडियोज हैं, गन प्वांइट पर लेके बूथ कैपचरिंग होती है।'' उसको माना गया, स्वीकार किया गया। स्वीकार किया गया तो ठीक किया गया। आज ईवीएम जसी मशीन इसलिए आई, ईवीएम जैसी मशीन लेकर आये लोग। तो बड़ा धीरे-धीरे करके इसको मजबूत किया गया है। और आज जहां हम लोग पहुंचे हैं, उसमें टीन एन शेष जैसे मजबूत चुनाव आयुक्त का भी नाम है, यहां लेना चाहिये क्यांकि जहां आज हम खड़े हैं, वो जमीन हमें पकड़नी चाहिए और क्या-क्या करके आये हैं हम यहां। टी एन शेषन जैस चुनाव आयुक्त का भी नाम है जिन्होंने चुनाव को साफ-सुथरा, निष्पक्ष, सक्रिय चुनाव आयोग के रूप में भूमिका निभा के एक इतिहास कायम किया। इतिहास गवाह है, मेरे पास डेटा नहीं है लेकिन पहले चुनाव, दूसरे चुनाव, तीसरे चुनाव में 50-60 परसैंट वोटिंग बीच में बदी फिर नीचे चली गई। आज हम फिर वापस इस स्थिति में बैठें हैं, कि लोकतंत्र में लोग भरोसा करते हैं और लोग 80-70, 85-85 परसैंट यहां कई-कई जगह तो 90-90 परसेंट लोग किसी-किसी इलाके में वोट डालने जाते हैं, लाकतंत्र में अपना भरोसा जाहिर करते हैं। ये उस लोकतंत्र को बचाने के लिए आज की ये डिबेट है, जहां 90 परसैंट लोग, 80 परसैंट लोग, कहीं 50 परसैंट पहले करते थे। तो ये चीजें चल रही हैं। चुनाव आयोग में कई ओर प्रयोग किये, एफिडेविटस और ये कई चीजों की चुनाव आयोग

ने। लेकिन आज उसी प्रक्रिया में जिसको चुनाव आयोग ने रिगिंग के लिए, बूथ कैप्चरिंग के लिए, दूर करने के लिए, उसको बचाने के लिए किया गया। आज सवाल उठ रहे हैं, सवाल उठ रहे हैं तो उनके जवाब मिलना लाजमी हैं। वापस हम उस वहम में ना चल जाएं कि नहीं, नहीं, सब कुछ बहुत ठीक चल रहा है। मैंने इसलिये शुरू में कहा कि जब सवाल उठा और हमारे मन में भी सवाल आया, हम इस देश में अन्ना आंदोलन से लेकर आज तक सवाल उठाने के लिए जाने जाते हैं और सवालों के जवाब देने के लिए जाने जाते हैं। हमने हमेशा सवाल उठाये हैं और सही मुद्दों पर सवाल उठाए हैं और जब सवाल उठाए हैं तो उनमें से सवाल बहुत जल्दी एक्सपोज भी हुए हैं और सही निकल हैं वो सवाल। हमारे सवाल सही निकले हैं। पहली बार ऐसा लगा अध्यक्ष महोदय, कि हम ईवीएम पर सवाल उठा रहे हैं। हम लोकतंत्र की फाउंडेशन पर सवाल कर रहे हैं। जब शुरू में मन में सवाल आया, उस वक्त लगा कि काश! इस बार हमारा सवाल गलत निकल जाए। लेकिन दुर्भाग्य की बात ये है कि हम तो काश! कहते रह गये! वक्त ने धीरे-धीरे, टैक्नोलोजी ने धीरे-धीरे ऐसे सबूत सामने लाके रख दिये कि हम सबको मानना पड़ा कि ये सवाल भी गलत नहीं हैं, ये सवाल भी सही सवाल था। और ये सिर्फ हम ही नहीं उठा रहे 18 दल राष्ट्रपति से मिलने गये। मुझे नहीं पता, टीवी पे आज सारभ भारद्वाज के डेमोंस्ट्रेशन को देखने के बाद कौन सा दल, राजनैतिक लाइन के बीच में खड़ा होके क्या प्रतिक्रिया दे रहा होगा, क्या राजनयिक मजबूरियां रहेंगी किसी की, लेकिन 18 दल अभी हाल में राष्ट्रपति महोदय से जाकर रिक्वैस्ट करके आये हैं कि साहब, ईवीएम में गड़बड़ी का खेल हो रहा है, इसको ठीक करवायें। अभी जिक्र किया राखी ने, मेरे कई साथियों ने, यहां हमारे विपक्ष के दो साथी बैठे हैं। इनकी पार्टी के नेता 2009 से लेकर और

2014 तक पीएचडी, रिसर्च, टैक्नोलॉजी दुनिया भर का पैसा खर्च करके, फाउंडेश बना करके, फाउंडेशन बना-बना के, सुप्रीम कोर्ट में जा-जा के चीख-चीख के कह रहे थे थे कि साहब, ईवीएम गड़बड़ है, ईवीएम गड़बड़ है, किताबें लिखी। जीवी नरसिम्हा राव ने किताब लिखी, उस वक्त देश को पहली बार पता चला, पूरे के पूरे रिसर्च के बाद कि ईवीएम हैक हो सकती है, माननीय अडवाणी जी ने उसकी प्रस्तावना लिखी, सुप्रीम कोर्ट में गये ये लोग सारे मिल के लेकिन हम जानते हैं, ये मुद्दा देश का मुद्दा है। चुनाव जीतने के बाद इस मुद्दे को मार्गदर्शक मंडल में नहीं डाला जा सकता। मुद्दों को मार्गदर्शक मंडल में नहीं डालना चाहिये। आप व्यक्तियों को डालें, मुद्दे देश के हैं। इन मुद्दों को हम मार्गदर्शक मंडल में नहीं डालने देंगे। हम इन मुद्दों को सिर्फ जुमला कह के हवा में नहीं उठाने देंगे। ये देश का मुद्दा है। देश के लोकतंत्र का मुद्दा है। विधान सभा में भी चर्चा होगी। देश की जमीन पर हर जगह चर्चा होगी इसके बाद, अध्यक्ष महोदय।

आज उत्तराखंड के हाई कोर्ट ने इतनी सारी मशीनों को सील करने के आदेश दिये हैं, हवा में तो नहीं दे दिये। हाई कोर्ट ने संज्ञान लिया है और कई हजार मशीनों को सील करने के आदेश दिये हैं। आज मुम्बई हाई कोर्ट ने सील करने के आदेश दिये हैं। ईवन दिल्ली हाई कोर्ट ने सील करने के आदेश दिये है और हाल में हुए चुनाव में जा नगर निगम का चुनाव हुआ है, उसके चुनाव की कई सारे ईवीएम मशीनों को सील करने के आदेश दिये हैं, संज्ञान ले रही है कार्ट। सुप्रीम कोर्ट ने संज्ञा लेकर आदेश दिया वीवी पैट लगाओ। इलैक्शन कमिशन को हमने 11 रिमाइंडर्स भेजे है, इलैक्शन कमिशन को सरकार ने 11 रिमांडरस भेजे हैं लेकिन आज तक कुछ नहीं हुआ। गम्भीर स्थिति बन गई है। क्यों बन गई है? क्योंकि यूपी के जब चुनाव जीत बीजपी ने और पंजाब चुनाव में जानबूझ के कांग्रेस को, सौरभ ने बहुत अच्छा उदाहरण दिया मैच

फिक्सिंग का कि मैच फिक्सिंग हमेशा एक तरफा नहीं होती, क्योंकि मैच का रोमांच भी तो बना कर रखना है। पैसा भी कमाना है मैच फिक्सिंग से लेकिन रोमांच भी बना के रखना है। उसके साथ-साथ उस धंधे को चला के भी तो रखा है। कहीं लोगों का क्रिकेट से ही भरोसा उठ गया, तो लोग स्टेडियम में ही आना बंद कर दंगे, रेडियो कमेंट्री सुननी बंद कर दंग, टीवी देखना बंद कर देंगे और हजारों करोड़ों का जो धंधा चल रहा है, वो बंद हो जाएगा। इसलिए उसके रोमांच को जानबूझ के बनाए रखने के लिए, ये जानबूझ के ऐसी हरकतें की जाती हैं। एक तरफ यूपी, उत्तराखंड जैसे राज्यों में जीत हासिल की गई इवीएम के दम पर ओर दूसरी तरफ पंजाब में आम आदमी पार्टी का हरवाया गया कांग्रेस को जितवाया। ये भी ईवीएम के दम पर किया गया।

अध्यक्ष महोदय, जब हमने ये बोलना शुरू किया तो हमें कहा गया, आज भी कहा कि 67 सीटें आई, तब नहीं बोले थे। बिल्कुल नहीं बोले और डंके की चोट पर कह रहे हैं। नहीं बोले थे, जब 67 सीटें आई। लेकिन याद रखिए, जब हम 67 सीटों पर नहीं बोले थे तो हमनें नहीं कहा था, 67 सीटों पर ईवीएम की गड़बड़ है। हम ने 282 सीटों पर भी नहीं कहा था कि ईवीएम की गड़बड़ है। हमने आपके हरियाणा जीतने पर भी नहीं कहा था कि ईवीएम की गड़बड़ है। हमने आपके महाराष्ट्रा जीतने पर भी नहीं कहा था। हमने झारखंड जीतने पर भी नहीं कहा था। हमने कब कहा कि आप ईवीएम में गड़बड़ करके जीत रहे हो? जब मुम्बई के एक काउंसलर के, एक केडिडेट ने खड़े होकर कहा कि मेरे परिवार के वोट भी चोरी हो गए। मेरे परिवार के 13 लोगों को मुझे वोट देना था या ये सारे के सारे कह रहे हैं कि हमने वोट दिया, अपने कैडिडेट को, अपने परिवार के कैंडिडेट को और उसने अपने

को खुद को वोट दिया और उसके बावजूद उसको जीरो वोट मिला, इसलिए हमने बोलना शुरू किया। हमने बोलना शुरू किया कि कहीं कुछ गड़बड़ है। चंडीगढ़ से कई ऐसे उदाहरण निकल कर आए जहां लागों ने कहा, हमें कैंडिडेट्स ने कहा कि हमें अपने बूथ पर अपना वोट नहीं मिला, कहां गया हमारा वोट? तब लगा कि चोरी की टैक्नोलोजी क्या है? हम टैक्नोक्रट्स जैसे एक्सपर्ट, एक्टिविस्ट से बात कर रहे थे। समझ में नहीं आ रहा था कि हो क्या रहा है, चिंता बढ़ रही थी। उसी समय, कहते हैं ना, जब बेईमानों का पाप का घड़ा भरता है तो छलक-छलक के फूटता है, छलक-छलक के फूटता है। जब कुदरत अपना खेल दिखाती है तो बड़े-बड़े पापी सम्भल नहीं पाते उस खेल में। भिंड में यही हुआ। जब हम सोच रहे थे कि जीरो वोट कैसे आ सकता है, उसी समय भिंड में इनके पाप का घड़ा भर गया और वो छलक के निकल आया। पत्रकारों के सामने हो रहे डेमोंस्ट्रेशन में कोई भी बटन दबाओ, वीवीपेट पर कमल की पर्ची निकल रही थी। कोई भी बटन दबाओ वीवीपेट पर कमल की पर्ची निकल रही थी। पत्रकारों ने पूछा, ''ये कैसे पर्ची निकल रही है? काई भी बटन दबाओ तो चुनाव अधिकारी ये नहीं कह रही है कि मशीन चैक करो, सारा वीडिया, आप सब लोगों ने देखा होगा। वो वीडियो सब ने देखा होगा, आपने भी देखा होगा। उस वीडियो में चुनाव अधिकारी कहती हुई दिख रही है देखो पर्ची में कुछ भी निकलें, कल सुबह अखबारों में नहीं छपना चाहिए। नहीं तो थाने में बैठा दूंगी पूरे दिन। चुनाव अधिकारी जिनकी जिम्मेदारी थी कि चुनाव निष्पक्ष तरीके से हो, एक भी मशीन में गड़बड़ी न हो। अगर मशीन में गड़बड़ी, कोई टैक्निकल स्नैग पाया जा रहा है तो पत्रकारों को धमका रही है एक खबरदार! अगर इसकी रिपोर्टिंग हो गई तो थाने में बैठा दूंगी। ये कैसे निष्पक्ष चुनाव! ये कैसे पवित्र चुनाव! उस दिन से समझ में आ गया कि पाप का घड़ा भर चुका है और वो वीडियो! खुद सलाम

करता हूं साहसी पत्रकारों को। वे डरे नहीं, चुनाव आयोग की उस धमकी से, उस थाने की धमकी से। बाहर आए और उन्होंने खबर भी छापी और उस वीडियो को भी वायरल किया। सलाम करता हूं आज इस सदन में खड़े होकर था इस तरह का। जहां एट रैंडम चीजें निकल कर आने लगी। उसके बाद तो बहुत सारी चीजें आई।

अध्यक्ष महोदय, दिल्ली में जब चुनाव हुए तो हमारे छत्तरपुर से, अभी हैं नहीं विधायक जी, उनके विधान सभा में एक वार्ड पर काउंटिंग में जो वोट पड़ें, जो टिक होती है, इलैक्शन कमिशन ने जो डेटा दिया कि कितने वोट डाले गए, वो संख्या और थी और जब मशीनों में काउंटिंग होकर आई तो संख्या कुछ और थी और जो कंडिडट हारा है, मात्र दो वोट से हारा है। पांच सौ वोट का अंतर है। वोट एक्चुअल जितने डले, चुनाव आयोग के रिकार्ड के हिसाब से और मशीन में जब रिजल्ट डिकलेयर किया, रिजल्ट बटन दबाकर, उसमें पांच सौ वोट का अंतर है। टैक्निकल स्नैग कह कर नहीं टाल सकते, अध्यक्ष महोदय। तो इस लिए दिल्ली में और कई जगह से ये चीजें निकल कर आ रही हैं। कृष्णा नगर से बग्गा जी बैठे हैं। इनकी विधान सभा में एक निर्दलीय पार्षद ने कहा कि साहब, ये गड़बड़ हो गया। मेरे अपने वोट चोरी हो गए। मेरे अपने परिवार के वोट चोरी हो गए। तो अध्यक्ष महोदय, जब ये सारी चीजें आई तो तब तो बोलना भी जरूरी है और कुछ करना भी जरूरी है। सिर्फ बोलने से काम नहीं चलेगा, करना भी जरूर है। आज हम यहां बैठे हैं। इस लिए कि इसे करने की शुरूआत हो सके। कल माननीय मुख्य मंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी ने ट्वीट करके कहा था कि सत्य की जीत के लिए आज का दिन बहुत महत्वपूर्ण है। लोकतंत्र में सत्य की जीत बहुत जरूरी

है और सत्य की जीत के लिए लोकतंत्र का बचे रहना बहुत जरूरी है। लोकतंत्र का आधार चुनाव है, उसको बचे रहना बहुत जरूरी है। तो अध्यक्ष महोदय, मैं, क्योंकि धौलपुर और इन सबका का जिक्र सब साथी कर चुके हैं, मैं दोबारा उन सबको दोहराना नहीं चाहता। लेकिन एक चीज जरूर कहूंगा कि जब जब हमने सवाल उठाया। हमने कई चिट्ठियां लिखी हैं चुनाव आयोग को। हमने दिल्ली चुनाव आयोग को भी लिखा, हमने केंद्रीय चुनाव आयाग को भी लिखा। हमने कहा भिंड में गड़बड़ हुई, उसको देखिए, पजाब में गड़बड़ हुई, उसको देखिए। पिन प्वाइंटिड केस बताकर दिए। हमने कहा, ''साहब कुछ गड़बड़ हो रही है।'' हमेशा चुनाव आयोग की तरफ से और इसके पैरोकारों की तरफ से बयान आ जाता है, ''नहीं-नहीं, ईवीएम में गड़बड़ नहीं हो सकती।'' हमने पूछा, ''भई भिंड में क्या हुआ था, वो तो बता दो? बोले, ''नहीं, ईवीएम में गड़बड़ नहीं हो सकती। हमने पूछा, 'धौलपुर में क्या हुआ था?' बोले, 'नहीं-नहीं, ईवीएम में गड़बड़ नहीं हो सकती।' हमने कहा, 'ये काउंटिंग गलत कैसे आ गई छत्तरपुर में?' नहीं, नहीं, ईवीए में गड़बड़ नहीं हो सकती।' हमने कहा, 'ये दो वोट क्यो रह गए?' नहीं, नहीं ईवीएम में गड़बड़ नहीं हो सकती। किसी आदमी ने खड़े होकर कहा, 'मेरे परिवार के वोट कहां गए? मेरा अपना वोट कहां गया? मैंने तो डाला था खुद को वोट।'' बोले, 'नहीं, नहीं, ईवीएम में गड़बड़ नहीं हो सकती। किसी आदमी ने खड़े होकर कहा, 'मेरे परिवार के वोट कहां गए? मेरा अपना वोट कहां गया? मैंने तो डाला था खुद को वोट।' बोले, 'नहीं, नहीं, ईवीएम में गड़बड़ नहीं हो सकती। लोकतंत्र को मात्र चार शब्द, 'नहीं, नहीं, ईवीएम में गड़बड़ नहीं हो सकती, के मंत्र से नहीं चलाया जा सकता। अगर टैक्निकल स्नैग है तो उसका टैक्निकल भाषा में जवाब देना पड़ेगा। ये स्नैग है क्या आखिरकार! इसको सिर्फ मंत्र पढ़ कर, नहीं, नहीं, ईवीएम में गड़बड़ नहीं हो सकतीं। एक हजार बार इसको पढ़ लो, लोकतंत्र

ठीक हो जाएगा! ऐसे नहीं चलेगा। जवाब देना पड़ेगा टैक्निकल भाषा में और आज सौरभ भारद्वाज ने जवाब दिया है इस चीज का।

अध्यक्ष महोदय, ये बता रहे हैं दिल्ली कैंट में गड़बड़ हुई थी, दोबारा चुनाव कराया गया था। मशीन पकड़ी गई थी। अध्यक्ष महोदय, आज दुनिया टैक्नोलॉजी ब्रेनसेंसिंग की तरफ बढ़ रही है। आज वॉएस टैक्नोलॉजी तो हो गई, डिस्प्ले टैक्नोलॉजी हो गई। आपक मोबाइल में सबके में, कि आप नीचें देखें तो नीचे आ जाता है स्क्रीन, ऊपर देखें तो ऊपर हो जाता है। आपके एक्शन टैक्नोलोजी हो गई आप हवा से बटन से कहीं दबाएं, हो गई। आज ब्रेनसेसिंग की बात हो रही है। आप मोबाइल के सामने सोचें और आपके मोबाइल में वो नम्बर डायल हो जाए, आपको कहने की जरूरत ना पड़े। आज ब्रैनसिंगि की टैक्नोलॉजी इवोल्व कर रही है सारी दुनिया और हम कह रहे हैं कि नही-हीं, 1989 में बनी हुई मशीन में गड़बड़ नहीं हो सकती। इसकी टैम्परिंग नहीं हो सकती। थोड़ा वैज्ञानिक बनिये साहब! वैज्ञानिक युग है ये। थोड़ा प्रैक्टिकल बनिये। प्रैक्टिकल बने रहने का युग है।

अध्यक्ष महोदय, जब-जब हमने कहा कि ईवीएम में गड़बड़ है, तब-तब हमें कहा कि सबूत दो। आज हमने भरी विधानसभा में, और सारे देश के चैनल्स का शुक्रिया अदा करता हूं, उन्होंने लाईव दिखाया है। देश के सामने सबूत दिया है अध्यक्ष महोदय। सौरभ भारद्वाज ने दिया है वो सबूत। इससे बड़ा सबूत ईवीएम टैम्परिंग का, मुझे नहीं लगता कि कोई हो सकता है। आज विधान सभा में जिम्मेदारी के साथ सौरभ भारद्वाज न एक डैमोंस्ट्रेशन दिया है कि ईवीएम टैम्परिंग हो सकती है। ईवीएम टैम्परिंग है। ईवीएम टैम्पर करके उन्होंने दिखा दिया और बड़ी अच्छी चीज इन्होंने बताई कि साहब, इसको करना

बड़ा आसान है। चार साल पहले से इंजीनियरिंग छोड़े हुए एक इंजीनियर ने उसको हैक करके दिखा दिया। तो कोई चीज नहीं है। कुछ सवाल उठे हैं। जनरली उठते रहते हैं और कुछ आज सौरभ के डैमोंस्ट्रेशन के बाद उठे हैं, मैं उनका जवाब देना चाहता हूं। कहते हैं, 'साहब, टैम्परिंग तो चलो हो गई।' मान लो मदर बोर्ड बदल दो। अभी उन्होंने दिये हैं, मैं उन पर आऊंगा अभी कई सवालों पर। मदर बोर्ड बदल दो। पर इतने बड़े स्केल पर कैसे हो सकता है! बहुत बड़ा स्केल है। इतने बड़े स्केल पर मदर बोर्ड कैसे बदले जा सकते हैं! किसी ने कहा, 'खिलौना है! इनकी मशीन हैक हो सकती है, हमारी मशीन हैक नहीं हो सकती।' अरे! अभी मैं आपको चुनौती देता हूं, 'एक बार सौरभ ने मदर बोर्ड बदल दिया, उस मशीन को पैक कर दिया, अब कोई सौरभ की मशीन को भी हैक नहीं कर सकता।' आज चुनाव आयोग सौरभ की मशीन को हैक करके दिखा दे, मैं दावा कर रहा हूं कि नहीं कर सकता। आज जो सौरभ मशीन लेकर आएं हैं, इसको भी हैक नहीं किया जा सकता, इन टर्म्स पर, जिन पर चुनाव आयोग हैक करने की बात कर रहा है। जिस मंत्र पर चुनाव आयोग हैक करने की बात कर रहा है। मैं कह रहा हूं इस मशीन को जहां पर लेकर खड़े कर लो और कोई हैक करके दिखा दे इसको। नहीं हो सकती हैक। ऐसे ही वो मशीन, ये तेरी मशीन, ये मेरी मशीन लोकतंत्र को खतरा है। चुनाव आयाग की मशीन बनाम सौरभ मशीन मत खेलिए। ये लोकतंत्र को खतरा है, इसको समझिए। इसके डेंजर को समझिए। अगर खतरा है, घर में घुस आया है तो जबरदस्ती मंत्र मत पढ़िए। समझिए इस टैक्नोलोजी को। ये मशीन हैक हो सकती है। मशीन हैक हुई है। मदर बोर्ड चेंज करते ही हैक हो जाती है और मदर बोर्ड चेंज करने में सौरभ ने बताया मात्र 90 सैकेंड लगते हैं, 80 सैकेंड लगते हैं। मात्र 80 सैकेंड में एक मशीन हैक हो सकती

है। मात्र 80 सैकेंड में! ईवीएम स्टोर में रखी जाती हैं। कहते हैं, 'इतने बड़े स्केल पर कैसे हो सकती है? दस हजार मशीनें, ग्यारह हजार मशीनें, ईवीएम तो सरकारी स्टोर में रखी जाती है। वहां ताला आपका, उसके चौकीदार, अफसर आपका उस पर पहरेदार पुलिस वाला आपका। दो घंटे के लिए उस स्टोर को हमें दे दीजिए आप। चार भी नहीं, तीन घंटे के लिए। तीन घंटे के लिए उस स्टोर को हमें दे दीजिए। हम ईवीएम बदल कर दिखा देंगे। हम ईवीएम को बदल के दिखा देंगे। अब कैसे होता है, मैं वो उसी पे आ रहा हूं। हैक करने के लिए, ईवीएम को हैक करने के लिए मदरबोर्ड चैंज करने के लिए चाहिए था? एक मशीन पे 80 सैकेंड, 90 सैकेंड का समय आपके स्टोर में हजारों मशीनें रखी हुई हैं, अफसर आपका, जो आईएएस अफसर, डीएम, जिसके भी कब्जे में होती हैं वो, वो आपका, पुलिस वहां चार सिपाही खड़े होते होंगे, वो भी आपका। अब उस मशीन को सर्विसिंग करने के लिए इंजीनियरिंग आते हैं, तीन। वो इंजीनियर कौन होते हैं? वो इंजीनियर भी सरकारी कम्पनी के होते हैं और वो सरकारी कम्पनी आपकी। सरकारी कम्पनी आपकी, पहरेदार आपका, चौकीदार आपका, आप जो मर्जी बदल लो, उसमें क्या है? और फिर सामने ला के मशीन रख दो, नहीं बदली जा सकती। हम भी कह रहे हैं, 'ये भी नहीं बदली जा सकती। ये भी हैक नहीं हो सकती। आप भी कह रहे हो, 'हैक नहीं हो सकती।' हमने हैक करके दिखा दी और आप हमें दे दो अपनी मशीन। हम उसको भी हक करके दिखा देंगे। लेकिन मशीन दो। आरती मत उतारो उसकी, आरती उतारने से हैक नहीं होगी, हैकर का काम नहीं समझ में आएगा। टेक्नोलॉजी से हैक करने का काम समझ में आएगा। आप दीजिए मशीन मदरबोर्ड, 80 सेकेंड में मदरबोर्ड चैंज कर देंगे। आप बताइए, कौन सा

मदरबोर्ड लगा हुआ है, एक बार खोल के देखने दीजिए मशीन को। उस मशीन को खोल के, उसमें मदरबोर्ड चैंज करके हैक कर देंगे और उसके बाद हम भी दावा करेंगे चुनाव आयोग के बार में कि चुनाव आयोग की मशीन अब हैक नहीं हो सकती। क्योंकि कोड हमारे पास होगा उसका। तो आपने जैसा सौरभ ने कहा 2009 से ले के 2014 तक किताबें लिखी, पीएचडी करी, उसके बाद हैक करना शुरू किया। हमने आपको देख के खुद तीन महीने में हैक करना सीख लिया। अब हम भी हैक कर सकते हैं और मैं कह रहा हूं फिर से सौरभ की चुनौती को दोहरा रहा हूं कि मात्र जैसे दिल्ली में 70 विधान सभाएं हैं 70 विधान सभाओं में करीब 12 हजार, 13 हजार बूथ हैं। 20-10 इंजीनियर तीन इंजीनियर भेजती है न कम्पनी? मैं कहता हूं कुल मिलाके 10 इंजीनियर 30 घंटे के अंदर अंदर दिल्ली की सारी मशीनों को हैक कर दंगे, सारी मशीनें। आप बस एक्सेस दे दीजिए और किस के ऊपर जो पहरेदार है, चौकीदार बैठा है, उसको इतना बता दीजिए, इंजीनियर आए हैं। उसको हटाने की जरूरत नहीं है। उसका इस क्राइम में शामिल करने की भी जरूरत नहीं है। सारे आईएएस बैठके साच रहे होंगे, सारे आईपीएस बैठके सोच रहे होंगे, सारे पुलिस वाले बैठके सोच रहे होंगे, सारे पुलिस वाले बैठके सोच रहे होंगे कि हमारी पहरेदारी पर शक मत करिए। हम आपकी पहरेदारी पर शक नहीं कर रहे, हम उन तीन इंजीनियर जो आपसे चाबी ले के ताला खोलते हैं और आपको कहते हैं हम सर्विसिंग के लिए आए हैं और फिर चैंज करके चले जाते हैं। आपको तो लगता है सर्विसिंग हो गई मशीन आपकी, सर्विसिंग पार्टी की हो गई। अच्छी सर्विसिंग डेमोक्रेसी की हो गई अच्छी! उतनी देर में। 80 सेकेंड लगते हैं इस डेमोक्रेसी की सर्विसिंग को। इस मशीन के जरिए पूरा का पूरा डेमोक्रेसी का भट्टा बिठ जाता है।

तो अध्यक्ष महोदय, मैं एक ओर चीज कहूंगा, जैसा फिर कह रहे हैं क्योंकि सौरभ ने बात रखी, मैं नोट कर रहा था उस वक्त की अभी दिल्ली छोड़िए, गुजरात के सरकारी स्टोर, स्टोर्स में आपके कब्जे में जो मशीनें रखी हैं, उनको तीन-चार घंटे के लिए हमें दे दीजिए। हम इंजीनियर लगा के हैक कर देंगे और उसके बाद हम चुनाव जीत के दिखाएंगे आपको, दावा करते हैं कि चुनाव हार नहीं सकते। उसके बाद वहां पे आप ही की मशीन होगी। मशीन भी ये सौरभ वाली ही होगी बस चार घंटे के लिए अपना स्टोर, सरकारी स्टोर जिसमें आप मशीनें रखते हैं। उसका ताला हमको दे दीजिए। तीन इंजीनियर जैसा आप भेजते हो सर्विसिंग के लिए, हम भेजेंगे तीन इंजीनियर। आप मत भेजना उसमें, हम हैक करके दिखाते हैं आपकी मशीनें, क्योंकि हमने करके दिखाई है।

अध्यक्ष महोदय, एक अभी एक डमोंस्ट्रेशन को लेके सवाल उठा कि साहब सौरभ ने जब दिखाया तो कोड कैसे डला, वो समझ में नहीं आया। साहब, कोड तो बनाया जाता है। सौरभ ने जब मशीन बनाई, सौरभ के सामने जो मशीन है, इसमें एक कोड है, बटन नम्बर वन के लिए, एक कोड, टू के लिए एक, हर बटन के लिए एक कोड है। अलग अलग विधान सभाओं में जिस कैंडिडेट को जिताना है, उस कैंडिडेट का कोई कोड होगा, उसका बटन नम्बर आप देख लीजिए। उस बटन का कोड उसमें एक्टिवेट कर दीजिए। अब सैकेंड लगता है। एक आदमी अपना वोट डालने गया। उसने अपना वोट जिस पार्टी को डालना था, डाला और इतनी देर में बीप की आवाज आती है, 5-7 सेकेंड की आवाज होती है, 6 सेकेंड, की, 6 सेकेंड के अंदर अंदर... वो और 2 सेकेंड भी खड़ा रह सकता है, 6-8-10 सेकेंड, इतनी देर तो खड़ा ही रहता है वहां घेरे में। उतनी देर में उसको चार बटन दबाने हैं बस और उनकी कोई आवाज भी नहीं होती। हमने देखा है ये, इस वीडियो में देखा

कि उन बटनों को दबाने की कोई आवाज भी नहीं होती। हमने देखा है ये, इस वीडिया में देखा कि उन बटनों को दबाने की कोई आवाज भी नहीं है। बस, अपना वोट डाला बीप की आवाज आ रही है जब तक ये कन्फर्म हो रहा है कि बीप आई कि, नहीं आई, हो गया, हो गया, हो गया। तब तक उस आदमी ने खट-खट-खट उस पर्टिकुलर बटन का जिस कैंडिउेट को जिताना है, उसका कोड दबा दिया और बाहर आ गया बस। तो कुल मिला के तीन इंजीनियर को पता है और पूरे के पूरे बूथ पे एक आदमी को पता है अब एक विधान सभा में अगर दो सौ बूथ हैं, तो दो सौ बूथ पे हैक करने की जरूरत थोड़ी है। 50 बूथ पे, 50 लोग अपने निकाल लो कोई कमेटिड हैं, उनको कह दो यार! ये भगवान जी का मंत्र है अगर मशीन दबाने के बाद दो तीन बटन ये वाले दबा दोगे तो तुम जीत जाओगे, टोटका है, वे भी करा आया जा सके। मैं इसलिए कह रहा हूं कि ये संभव है। हां, ये तो गणेश जी को दूध पिला देते हैं। बोले, ईवीएम हैक नहीं हो सकती!

तो अध्यक्ष महोदय, चूंकि ये सवाल बार बार उठाया जा रहा है कि कोड का एन्टर कैसे हुआ, वीडियो जारी कर दें। मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि इसका वीडियो भी आप जल्दी से यू ट्यूब वगैरह, इन्टरनेट पर उपलब्ध करवा दीजिए। सौरभ ने बहुत, बहुत शानदार तरीके से डेमोंस्ट्रेशन किया है, फिर भी किसी को नहीं समझ में आ रहा हो, तो मैं बता देता हूं कि सिर्फ अपना वोट डालते ही, चार बटन का एक और कोड डालना है मशीन में, हैक हो गई और उस मशीन में जो भी वोट डालोगे, उस वोट पे, वो वोट अपने आप ट्रासफर होता चला जाएगा जिस बटन को आप जिताना चाहते हो, उस बटन के हिस्से में। किसी ने कहा, ''खिलौना लेके आए हैं।'' ये मैंने पहले भी कहा कि ये कोई भी मेरी मशीन और तेरी मशीन की बात थोड़ी है। ये कोई टीवी स्टूडियो में हुआ डेमोंस्ट्रेशन नहीं है।

अध्यक्ष महोदय : मनीष जी एक सेकेंड। मेरी सदन से प्रार्थना है कि सदन का समय आधा घंटे के लिए बढ़ा दिया जाए। मंत्री जी।

उप-मुख्यमंत्री : अध्यक्ष महोदय, ये कोई टीवी स्टूडियो में होने वाला डेमोंस्ट्रेशन थोड़ी है, विधान सभा में लोकतांत्रिक तरीके से चुनी गई विधान सभा में हुआ डेमोंस्ट्रेशन है। बहुत जिम्मेदारी के साथ यहां पे किया गया डेमोंस्ट्रेशन है, पूरे चैलेंज करके दिया गया, बहुत रिसर्च करके दिया गया। इसीलिए मैंने उनका नाम भी लिया और बड़ी टेक्नोलॉजी टीम है जिनका नाम हो सकता है, वो लोग अपना न बताना चाहें यहां। ये इस पूरे मिशन में शामिल होने के लिए, कई और इंजीनियर्स लगे हुए हैं इसमें। तो यह बहुत जिम्मेदारी के साथ एक माननीय विधायक द्वारा बहुत जिम्मेदारी के साथ किया गया। डेमोंस्ट्रेशन है ये और इस पे चैलेंज लेके हम कह रहे हैं कि आप जो मशीन लाके देना है, दीजिए। आप अपनी मशीन लेके आ जाइए। उसको भी हैक करके दिखा देंगे। बस शर्त ये है कि उसको दे दीजिए एक बार, दूर से मत दिखाइये कि वो मशीन देखिए, उसको हैक करके दिखाओ, ऐसे नहीं होगा। आपको मशीन देनी पड़ेगी, मशीन खोलनी पड़ेगी सामने, मशीन का मदरबोर्ड, उस मदरबोर्ड को दिखाना पड़ेगा। ये कौन सा मदरबोर्ड है, उस मदरबोर्ड को हम बदल देंगे। मशीन हैक हो जाएगी। उसके बाद आप भी नहीं हैक कर पाओगे उसको। हमारा दावा है कि फिर चुनाव आयोग अपनी मशीन हैक नहीं करवाएगा। फिर बीजेपी वाले भी अपना कोड, आप हैक नहीं कर पाएंगे। फिर तो हम ही हैक करेंगे उस मशीन को।

अध्यक्ष महोदय, वो कहा पासवर्ड, अभी इन्होंने कहा। अब तो आपको भी

पासवर्ड पता चल गया। पासवर्ड को लेके कन्फ्यूजन न पैदा करें। वो प्रोग्रामिंग आपकी मशीनों में जो है, उसका पासवर्ड पता करना है। ये तो सौरभ की मशीन का पासवर्ड था, जो पता चला है। उस मशीन का पासवर्ड पता करना है और उस मशीन का मदरबोर्ड बदल के देंगे तो पासवर्ड हम बनाएंगे इसका। एक ओर चीज किसी ने बोली, हां, अभी सिरसा साहब चले गए, बीजेपी के साथी, उन्होंने बोला कि अब 12 तारीख को प्रूव कर देना। उन्होंने कहा 12 तारीख को मीटिंग बुलाई है। पहले तो मैं कही दूं कि चुनाव आयोग की तरफ से मुझे नहीं पता कि चुनाव आयोग कभी कहता है कि नहीं कहता, पर कई लोग अफवाह उड़ाने में बड़े माहिर हैं। मैंने तीन-चार बार सुन ली कि चुनाव आयोग हैक बन्द करवा रहा है... चुनाव आयोग ने चुनौती दी... चुनाव आयोग ने केजरीवाल को चुनौती दी... आज तक तो चुनाव आयोग से एक भी अधिकाधिक बयान नहीं आया कि जहां उन्होंने कहा हो कि हमारी मशीनों को हैक करके दिखाओ, आज तक कोई बयान नहीं आया। 12 तारीख की भी मीटिंग बुलाई है, मीटिंग का डाक्यूमेंट पहले ही पत्रकारों को जारी कर दिया कि देखा ईवीएम कितनी महान होती है पर फिर भी मुझे लगता है, हम तो जाएंगे, पर सिरसा साहब ने जो बात कही, मैं उसको थोडा सा अंडर लाइन करना चाहता हूं। उन्होंने बड़े कांफिडेंस के साथ कहा कि हम आपको 12 तारीख को मशीन दिलवा देंगे, आप प्रूव कर देना। ऑन रिकॉर्ड है। ये लाइन सुन के मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ अध्यक्ष महोदय कि भारतीय जनता पार्टी के, दिल्ली विधान सभा में बैठे हुए सदस्य, हाल में चुन के आये सदस्य, बड़े कान्फिडेन्स के साथ कह रहे हैं कि हम आपको मशीन दिलवा देंगे। उसको कुछ कर देना। उसमें प्रूव कर देना। उमसें ये वाला पासवर्ड डाल देना। कान्फिडेन्स पर सवाल है। ये जो कान्फिडेन्स है, यही तो चुनौती हो रही है लोकतंत्र के लिए। क्योंकि आप बड़े कान्फिडेन्स के साथ विधान सभा के पटल पर कह

रह हैं कि सौरभ जी, हम आपको मशीन दिलवा देंगे। अरे! चुनाव आयोग से तो हम भी इतनी चिट्ठी लिख के कह चुके हैं। आप मशीनों का एक्ससेस दे दो। आज तक तो दिया नहीं उन्होंने। आपके कहने पर दे देते हैं। चलो, आप ही दिलवा दो। आपको कान्फिडेंस है। आपको पता है कि हमारी तो केन्द्र में सरकार है। दिलवा ही दोगे, दिलवा दो। हम कह रहे हैं कि हम हैक करके दिखा देंगे। तो मुझे उम्मीद है कि ये दिलवायेंगे।

अन्त में, अध्यक्ष महोदय, मैं ये कहना चाहता हूं कि ये जो सौरभ जी ने रेजल्यूशन आखिर में पेश किया, उसको ये सदन पास करे और इस विधान सभा की ओर से इलेक्शन कमीशन को, माननीय राष्ट्रपति को और मैं तो चाहूंगा कि माननीय सुप्रीम कोर्ट को भी ये रेजल्यूशन दें। रेजल्यूशन को इस सदन के निवेदन के रूप में भेजा जाये क्योंकि डेमोक्रेसी को बहुत बड़ा खतरा आ गया है और मैं एक चीज और कह दूं जो सौरभ जी ने बात कहीं है, अण्डरलाईन उसको कर दूं। सिर्फ वीवीपैट लगाना समाधान नहीं है। अभी जो बात कही जा रही है कि वीवीपैट लगा देंगे तो समाधान हो जायेगा। खाली वीवीपैट लगाना समाधान नहीं है। इनटैंट हमें बता चुका है कि आप वोट कहीं भी डाली पर्ची बीजेपी की निकलेगी। आदमी जब अपना वोट डालके आये, वोट डाले और मान लीजिए उसने झाड़ू पर बटन दबाया तो उसकी नजर पर्ची पर जायेगी। किसकी पर्ची निकल रही है। झाड़ू की पर्ची नहीं निकलेगी तो वो बतायेगा कि देखो गड़बड़ है। पहला कदम, वहीं पकड़े जाने की सम्भावना है लेकिन दूसरा कदम ये कि स्फि अब वोट गिर गयी। अब जिसने झाड़ू का बटन दबाया होगा, उसको लगा होगा। हो सकता होगा। हो सकता है मैं ही डाल के आया हूं। बाकी ने न डाला हो क्योंकि वोट की गिनती तो होती नहीं। पर्ची की गिनती तो होती नहीं। तो कानूनन इसको मैनडेटरी बनाया जाये। इलेक्शन

कमीशन इसको अनिवार्य करे कि सभी वोटिंग बूथ जिनपे वोटिंग हुई, उनके कम से कम 25 परसेंट बूथ को मैनडेटरी हो कि वोटिंग मशीन से काउन्टिंग के बाद कम से कम 25 परसेंट बूथ की काउन्टिंग वीवीपैट से की जाये। उसके बाद ही फाईनल रिजल्ट डिक्लेयर किया जाये। ये इस रिजल्यूशन का इम्पार्टेंट हिस्सा है और साथ मैं निवेदन करूंगा कि इसको भी रखा जाये। अगर साथ-साथ समय-समय पर मशीनों को उपलब्ध कराया जाये। देश में बहुत बड़े-बड़े देशभक्त टेक्नोक्रेट हैं, वो चाहते हैं कि अगर मशीनों में कुछ गड़बड़ है, वो किसी पार्टी, पक्ष सबसे ऊपर उठके टेस्ट करके देश को बताएंगे। ये हैकाथन, हैकाथन जो बार-बार शब्द आ रहा है न, आप दीजिए अपनी ईवीएम। खोलिए न, अपने ही लड़के हैं। अपन ही देश के बच्चे हैं। आप दीजिए इनको। ये आपको बताएंगे कि आप तो ऑब्सलीट हो गये। जब आप आयुक्त बने, जब आपने पढ़ाई की, आब्सलीट हो गयी वो सारी पढ़ाई। नया, एक हमारे डीटीयू में पढ़ने वाला लड़का ट्रिपल आईटी। डीटीयू में पढ़ने वाला लड़का आपको आके बतायेगा कि नई टेक्नोलॉजी क्या है। आप इस अहंकार में मत रहिये कि पांच साल पहले, बीस साल पहले, पच्चीस साल पहले हमने इंजीनियरिंग कर ली थी तो हमसे ज्यादा अनुभवी कौन है! हमसे ज्यादा समझदार कौन है! आप का सबसे समझदार आज सेकेंड या थर्ड ईयर और फोर्थ ईयर में पढ़ने वाला लड़का या लड़की है, डीटीयू में या ट्रिपल आईटी में या आईआईटी में। आप दीजिए उन बच्चों को चैलेंज कि बेटा, हमने ये मशीन बनायी है। हमारे हिसाब से फूल प्रूफ है लेकिन प्लीज ट्राई करो, दुनिया की जितनी वर्ड प्रेक्टिसेज चल रही हैं, इस पर अप्लाई करो। कहीं हमारे लोकतंत्र को दीमक तो नहीं लग गया है। तो हैकाथन जैसी चीजें आयोजित करवाई जायें। इसलिए ये जरूरी है।

तो मैं, ताकि ये बात हो सके कि ईवीएम को समय-समय पर चेक करके, उसको हम तोल सकें।

तो अध्यक्ष महोदय, अंत में, मैं यहीं कहूंगा कि देखिए बात लोकतंत्र की पवित्रता की है। पवित्र लोकतंत्र है, मशीन नहीं है। पवित्र जनता का वोट है, मशीन नहीं है। हम जनता के वोट की चिन्ता नहीं कर रहे हैं। हम लोकतंत्र की चिन्ता नहीं कर रहे हैं। हम मशीन को पवित्र बताके उसकी आरती उतारना चाहते हैं। ये एटीट्यूड ठीक नहीं है। ये एप्रोच ठीक नहीं है। इस एप्रोच में बुनियादी प्रॉब्लम है और अगर हमने ये ठीक नहीं किया अध्यक्ष महोदय, तो ये ईवीएम की टैक्नोलॉजी सिर्फ यहां बैठे हुए लोगों और वोट डालने वाले के साथ विश्वासघात नहीं होगी, भगत सिंह के सपनों के साथ विश्वासघात होगी। चन्द्रशेखर आजाद के सपनों के साथ विश्वासघात होगी। इसलिए जानें दी थी उन लोगों ने कि आजाद होने के बाद कुछ लोग ईवीएम को इजाद कर देंगे और उसको रिग- कर करके, रिग कर-करके चुनाव जीतते रहेंगे और अंग्रेजों से बुरी स्थिति में पहुंचा देंगे देश को। इसलिए जानन हीं दी थी। बाबा साहब ने संविधान में इतनी मेहनत इसलिए नहीं की थी कि इस संविधान में जो यूनिवर्सल फ्रेंचाइजी, वोट डालने का अधिकार है, मैं देश के हर आदमी को दे रहा हूं, इसको ईवीएम के माध्यम से वोटर्स से छीन के कुछ हैकर्स को दे दिया जायेगा खाली! बाबा साहब के साथ अगर हमको न्याय करना है तो इस ईवीएम की टेक्नोलॉजी को ठीक करना पड़ेगा। अगर हमें गांधी जी और नेहरू जी के सपनों के साथ, सिर्फ मूर्तियां लगाने से काम नहीं चलेगा, अगर हमको उनके सपनों के साथ न्याय करना है तो ये जरूरी है कि हम इस ईवीएम की टेक्नोलोजी को क्वेश्चन करें। माननीय लोकनायक जय प्रकाश नारायण ने जिस लोकतंत्र को बचाने की लड़ाई लड़ी थी, उसके लिए ये जरूरी है

कि हम इस ईवीएम पर सवाल उठायें। सवाल आम आदमी पार्टी के लिए नहीं है। सवाल यहां बैठे सत्ता पक्ष के, विपक्ष के लोगों के लिए नहीं है। सवाल ये नहीं है कि हम बाहर टीवी पर जाके क्या बाइट दे देंगे, पक्ष में या विपक्ष में। सवाल ये है कि चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, गांधी, नेहरू, जे.पी. इन तमाम लोगों ने जो लइड़ाइयां लड़ी थीं, क्या हम सिर्फ इसलिए क्योंकि हमको समझ में आ रहा है लेकिन बोलेंगे नहीं क्योंकि हम सत्ता में बैठ गये हैं। हम हत्या कर देंगे इन लोगों की, इनके सपनों की। तो मैं पूरे सदन से निवेदन करता हूं कि इस प्रस्ताव को बहुमत से पास करें। पूर्ण, एकदम सेन्स ऑफ दि हाउस के रूप में पूरी तरह से पास करके इसको भेजें और इसको वहां, जहां ये जाने के लिए बात कहीं गयी है, वहां पर भिजवाया जाये।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपका बहुत-बहुत आभारी हूं इस चर्चा को आयोजित करने के लिए। इसको इतने ध्यान से करवाने के लिए धन्यवाद, अध्यक्ष महोदय।

अध्यक्ष महोदय : अब श्री सौरभ भारद्वाज जी माननीय सदस्य द्वारा प्रस्तुत संकल्प और उसमें जो कुछ माननीय उपमुख्यमंत्री जी ने उसमें जोड़ा है, सदन के सामने है–

जो इसके पक्ष में है व हां कहें;

जो इसके विरोध में हैं वे ना कहें;

(सदस्यों के हां कहने पर)

हां पक्ष जीता, हां पक्ष जीता;

संकल्प पारित हुआ।

इससे पहले कि मैं सदन को अनिश्चित काल के लिए स्थगित करूं, स्वस्थ संसदीय परम्पराओं का निर्वाह करते हुए सदन के नेता और माननीय मुख्यमंत्री श्री अरविन्द केजरीवाल जी, माननीय उप मुख्यमंत्री श्री मनीष सिसौदिया जी, माननीय सभी मंत्रीगण, नेता विपक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता जी तथा सदन के सभी माननीय सदस्यों का हार्दिक आभार प्रकट करता हूं।

इसके अलावा विधान सभा सचिव तथा सचिवालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ-साथ दिल्ली सरकार के मुख्य सचिव एवं उनके समस्त अधिकारियों, दिल्ली पुलिस, खुफिया एजेंसियों, सीआरपीएफ बटालियन-55 तथा लोक निर्माण विभाग के सिविल, इलेक्ट्रिकल व हॉर्टिकल्चर डिवीजन, अग्निशमन विभाग आदि द्वारा किये गये सराहनीय कार्य के लिए भी उनका धन्यवाद करता हूं।

विधान सभा की कार्यवाही को मीडिया के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाने वाले सभी पत्रकार साथियों का मैं हार्दिक धन्यवाद करता हूं। अब मैं माननीय सदस्यों से अनुरोध करूंगा कि वे राष्ट्रगान के लिए अपने स्थान पर खड़े हों।

(राष्ट्रगान)

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद सभी का। अब सदन की कार्यवाही अनिश्चितकाल तक के लिए स्थगित की जाती है।

(सदन की कार्यवाही अनिश्चितकाल तक के लिए स्थगित की गयी।)